شری رشید مسعود -

ڈپٹی اسپیکر صاحب بھارت سرکار نے اتر پردیش سرکار اور ہریانہ سرکار سے مل کر ایک پل جمنا ندی پر لکھوتی کے پاس جمنا نگر اور کیرانہ کے بیچ میں بنانا منظور کیا ہے، جس کی مانگ ہم نے ہاؤس میں کئی بار کی تھی۔ اس کا اعلان باقاعدہ کر دیا گیا تھا۔ مگر افسوس کی بات یہ ہے کہ اب یہ پل ضلع سہارنپور کے بجائے مظفر نگر ضلع میں کیرانہ کے موجودہ پل سے صرف دس بارہ کلومیٹر دور بنایا جا رہا ہے، جس کی وجہ سے ضلع سہارنپور کے لوگوں کو مستقل پریشانی بنی رہے گی، ڈیفینس کے نقطہ نظر سے بھی جمنا پر لکھوتی کے سامنے پل بنانا ضروری ہے تاکہ رڑکی جو ملٹری کی چھاؤنی ہے، سے سرحدوں پر فوجوں کے جانے میں پریشانی ۔ اس لئے میری سرکار سے درخواست ہے کہ جمنا پر جو پل کیرانہ اور جمنا نگر کے بیچ بن منظور ہوا ہے اس کو لکھوتی کے سامنے تنگل گھاٹ یا کنڈا گھاٹ پر بنایا جائے۔

12.32 hrs.

MOTION OF THANKS ON PRESIDENT'S ADDRESS CONTD

MR. DEPUTY SPEAKER : The House now will take up further discussion on the Motion of Thanks on the President's Address. Three hours' time is left. So, we will continue with the discussion till 4 o'clock and 4 p.m. the Prime Minister would reply. Now, Mr. Kabuli. You have already taken eight minutes. Please conclude in another one or two minutes.

श्री अब्दुल रशीद काबुली (श्रीनगर) : डिप्टी स्पीकर साहब, अव्वल तो मैं यह कहना चाहता हूं कि म्हात्रे का जो कत्ल 5 फरवरी को लंदन में बरमिंघम के मुकाम पर हुआ उसके फौरन बाद 11 तारीख को मौहम्मद मकबूल वट्ट नाम के सख्स, जो लिबरेशन फ्रंट से ताल्लुक रखता था फांसी दे दी गई। मैं यह कहना चाहता हूं कि इस मामले के दो पहलू हैं। चूंकि इसका रियासत जम्मू-कश्मीर से ताल्लुक है और चूंकि यह शख्स रियासत जम्मू-कश्मीर का वाशन्दा रहा है, वहां से उसने कई बार आपरेट किया और फिर बाहर जाकर पाकिस्तान से भी उसने आपरेट किया है। मैं यह बताना चाहता हूं कि अव्वल तो इस मामले के दो पहलू हैं, दो आस्पेक्ट हैं, लीगल आस्पेक्ट और पोलिटिकल आस्पेक्टस। जहां तक लीगल आस्पेक्ट्स का ताल्लुक है, मैं इस बावकार एवान से पूछना चाहूंगा कि यह कैसे हुआ कि जिसके बारे में उसके वकला ने शिकायत की है, जो उसके एटार्नीज थे उन्होंने यह शिकायत की है सुप्रीम कोर्ट में कि जहां तक जम्मू-कश्मीर हाई कोर्ट का ताल्लुक है, उसने कोई कन्फर्मेशन नहीं दिया था और मरकजी हुकूमत ने सर्टिफिकेट सुप्रीम कोर्ट के सामने पेश नहीं किया।

दूसरी बात यह है कि इस शख्स ने सात साल तक मर्सी पेटीशन का इन्तजार किया और उसके बाद अचानक म्हात्रे के कत्ल के फौरन बाद उसको फांसी पर लटकाया गया। तीसरी बात यह है कि जो एक और कत्ल का केस है, जिसको लिंगेट कत्ल केस कहा जाता है, जिस केस से वह कनेक्टेड था सन् 1978 से उसका मुकदमा श्रीनगर में चल रहा था। यह लीगल आस्पेक्ट हैं। हमारी दुनिया की सबसे बड़ी जमहूरियत है और हमें इसमें कुछ प्रिसीडेन्ट्स कायम करने हैं सारी दुनिया को हमें यह बताना है कि कहीं इस मामले में इन्तकामगीरी तो नहीं हुई है, कहीं इस मामले में जबर्दस्ती तो नहीं हुई है कि हमने एक शख्स को गैर मुतवक्के तौर पर... (व्यवधान)

श्री हरीश रावत : आप क्या समझते हैं इन्तकाम लिया गया है ? आप अपनी राय दीजिए। **(व्यवधान)**

श्री अब्दुल रशीद काबुली : मैं यह बताना चाहता हूं कि कुछ ऐसा इम्प्रेशन पैदा हुआ है कि कहीं हमने म्हात्रे के कत्ल के जवाब में कोई जल्दबाजी तो नहीं की। मैं यह कह देना चाहता हूं कि जहां तक मकबूल बट्ट की करतूतों का ताल्लुक है, हमने उसको कन्डेम किया है और हम कभी भी नहीं चाहेंगे कि कोई ऐसा आदमी जो सेशेशनिस्ट है, जो जम्मू-कश्मीर की हिन्दुस्तान के बाहर निकालने की कोशिश करे उसको सजा न मिले। जो कुछ भी उसने किया है उसकी हमने मजम्मत की है। लेकिन जहां तक लीगल आस्पेक्ट्स का सवाल है, आपको इस एवान में बताना पड़ेगा कि हमने कोई नाइन्साफी तो नहीं की। दूसरी बात यह है कि कांग्रेस पार्टी की तरफ से जम्मू-कश्मीर में डा० फारूक अब्दुल्ला पर इल्जाम लगाया जाता है।

आपकी तरफ से यह कहा जा रहा है कि डा० फारूख अब्दुल्ला आजाद काश्मीर गया था। जहां पर उसकी तस्वीरें लिब्रेशन फ्रन्ट वालों के साथ छपी हैं। मैं आपको बताना चाहता हूं कि हमने एक चैपटर को खत्म कर दिया है। 1975 में हिन्दुस्तान की महान लीडर, मोहतरिम श्रीमती इंदिरा गांधी और शेरे-ए-काश्मीर, शेख अब्दुल्ला के दर्मियान एक समझौता हुआ और बहुत सारी बातें दोनों तरफ से हुई हैं। जम्मू-कश्मीर के लोगों के साथ 9 अगस्त, 1953 को जोर-जबरदस्ती हुई है। 1953 में शेख मौहम्मद अदुल्ला साहब वहां के वजिर-आजम थे। जिसने हिन्दुस्तान के साथ कश्मीर को मिलाया था। उसमें गिरफ्तारियों हुई और नाइंसाफियां हुईं। 9 अगस्त 1975 के दौर में जो नाइंसाफियां हुई हैं उसको जम्मू काश्मीर के लोगों ने पसन्द नहीं किया है। जो भी सरकार वहां पर बनी है, उसमें वहां के लोगों ने पार्टिसिपेशन नहीं लिया है। डैमोक्रेसी के प्रोसेस में। इस बिना पर मैं कहना चाहता हूं कि 1976 में शेख साहब इकतदार में आ गए। अलफतह नाम के व्यक्ति को माफ कर दिया, जैसे गुलाम मौहम्मद सादिक साहब ने नरमी की पॉलिसी अख्तियार की है। उसको हमने एप्रिशिएट किया है। उस जमाने में जो मुल्क के साथ खिलाफ काम कर रहे थे, उनके लिए सादिक साहब ने कहा कि ताकत और जोर से नहीं मौहब्बत से अपनायेगे। इसका नतीजा यह निकला कि 1964 में शेख साहब से खिलाफ केसेज को वापिस लिया गया और जेलों से पोलिटिकल वर्कस को निकाला गया। सादिक साहब जो कांग्रेस के बड़े नेता थे उन्होंने यह काम अंजाम दिया। यह प्रोसैस जारी रहा। मैं मुबारकबाद देता हूं श्रीमती इंदिरा गांधी को उन्होंने इसकी हौंसला अफजाई की। सादिक साहब की वफाअत के बाद दूसरे कांग्रेस के नेता वहां आए, श्री सैयद मीर कासिम। उन्होंने इस सिलसिले को आगे जारी रखा। सादिक साहब के वक्त में शेश साहब और मरकज के दर्मियान एक समझौता हुआ, जो शेश साहब की फतह थी और इंदिरा जी की फतह थी और पूरे हिन्दुस्तान की फतह थी। आपस की जो दुरियां थीं, वह खत्म हो गई। एक दूसरे के साथ जो गिले-शिकवे थे, वे खत्म हो गए। काश्मीर एक बहुत ही सैंसिटिव स्टेट है और इसके इर्दगिर्द पाकिस्तान का बार्डर मिलता है। इस बिना पर शेख साहब ने 1976 में अलफतह नाम की एक जमात को माफ किया और जेल से

निकाला। जिसमें फजलेहक कुरेशी और दर्जनों ऐसे लोग हैं। उस जमाने में बन्दूक उठाकर हिन्दुस्तान की सलतनत को चेलेंज करते थे। जिस दिन वे निकाले गए, उसी दिन केसेज वापिस लिए गए। बाद में उन्होंने अपना कारोबार शुरू किया। यह बहुत बड़ी फतह है, मौहब्बत और प्यार से लोगों के दिल जीते जा सकते हैं। मुझे एवान को यह बताते हुए बहुत दुःख हो रहा है कि मकबूल नाम का शख्स जिसको फांसी दी गई, उसको कोई नहीं जानता था। पूरे काश्मीर में कभी उसके लिए मुजाहिरा नहीं हुआ, उसके लिए कभी आंसू नहीं बहाए गए। सात बरस तक उसको तिहाड़ जेल में रखा। जहां पर उसको फांसी देकर हीरो बनाया गया। मैं समझता हूं कि यह बहुत महान देश है, बहुत बड़ा देश है। हमने सारी दुनिया की खाया खड़ी की है। यहां पर मिलिटरी रिजीम नहीं है। सात बरस तक एक आदमी ने सजा भुगती और उसको तिहाड़ जेल में रखा। उसमें प्रेजीडेंट के सामने मर्सी पैटीशन रखी, जिसको रद्द कर दिया गया। इस बिना पर मैं कहना चाहता हूं कि कांग्रेस को हिन्दुस्तान जितना प्यारा है, आपोजीशन उससे कम पीछे नहीं हैं। नैशनल कान्फ्रेंस की इस मुल्क के लिए बहुत सैक्रिफाइसेस हैं। 1953 से पहले 1947 में जब हिन्दुस्तान की फौजें वहां पर नहीं थी, तो कश्मीर के मुसलमानों ने पाकिस्तान का मुकाबला किया और जानें कुर्बान कर दीं। बहुत सारे नौजवान कत्ल हो गए, लेकिन हिन्दुस्तान की आन पर आंच नहीं आने दी। मैं आपसे इस बारे मे जवाब चाहता हूं कि कहीं आपको इस जल्दबाजी के नतीजे में मौहम्मद मकबूल को ही ना हीरो बनाकर, अहमियत दिलाकर कोई गलत काम तो नहीं किया।

दूसरी बात, मैं जानना चाहता हूं—क्या गवर्नमेन्ट आफ इण्डिया और पाकिस्तान सरकार के दरमियान कोई कारस्पौंडेंस हुई थी, उसमें हमारी गवर्नमेन्ट यह चाहती थी कि मकबूल भट्ट को रिहा कर दिया जायगा, अगर उसके बदल में पांच आदमी रिप्रेट्रिएट किये जायं ? मैं जानना चाहूंगा—क्या पाकिस्तान सरकार ने उस आफर को रिजेक्ट कर दिया था ?

हमारी फारन-पालिसी एक बहुत कामयाब पालिसी है जो हिन्दुस्तान के लोगों के जजबात की अलम्बरदार है। इस पालिसी के तेहत दुनिया में जो मर्तबा हमें मिला है, मैं उसकी तारीफ करता हूं। दुनिया में सनअती लिहाज से जो बड़ी ताकतें हैं उनमें हमारी छठी जगह है और आइन्दा भी इस लिहाज से हमारी ताकत में ज्यादा इजाफा होगा। लेकिन जो हमारे आसपास के मुल्क हैं, उनके साथ हमारा कोई मुकाबला नहीं है। पाकिस्तान कई बार शकिस्त खा चुका है, बंगला देश उसके हाथ से निकल चुका है। लेकिन उस बिना पर जंग को फिजा या माहौल पैदा करने की जरूरत नहीं है। अगर वह मुल्क खुद हम से टकराने की कोशिश करेगा तो पाश-पाश हो जायगा। यही हालत बंगला देश की है। इसलिये मेरी गुजारिश है—कांग्रेस के जरिये आज जो पाकिस्तान के साथ जंग की बात की जा रही है,, इलैक्शन इन्टरेस्ट में तो वह ठीक हो सकती है, लेकिन मुल्क के मुफाज के लिए वह ठीक नहीं है, इस तरह की बातों से कोई फायदा नहीं होगा।

मैंने जो चन्द सवाल इस ऐवान में रखे हैं, मुझे उम्मीद है—वजीरेआजम साहबा अपने जवाब में उन सवालों का जवाब देंगी।

شری عبدالرشید کابلی (سری نگر)

ڈپٹی اسپیکر صاحب - اول تو میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ مہاترے کا جو قتل ۵ فروری کو لندن میں برمنگھم کے مقام پر ہوا اس کے فوراً بعد ۱۱ فروری کو مقبول بٹ نام کے شخص کو جو لبریشن فرنٹ سے تعلق رکھتا تھا پھانسی دیدی گئی، میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ اس معاملے کے دو پہلو ہیں، چوں کہ اس کا ریاست جموں کشمیر سے تعلق ہے اور چونکہ یہ شخص ریاست جموں کشمیر کا باشندہ رہا ہے وہاں سے اس نے کئی بار آپریٹ کیا - اور پھر باہر جا کر پاکستان سے بھی اس نے آپریٹ کیا ہے، میں یہ بتانا چاہتا ہوں کہ اول تو اس معاملے کے دو پہلو ہیں وہ آسپیکٹس ہیں لیگل آسپیکٹ اور پالٹیکل آسپیکٹ، جہاں تک لیگل آسپیکٹ کا تعلق ہے، میں اس باوقار ایوان سے پوچھنا چاہتا ہوں گا کہ یہ کیسے ہوا کہ جس کے بارے میں اس کے وکلاء نے شکایت کی ہے جو اس کے اٹارنیز تھے انھوں نے یہ شکایت کی ہے سپریم کورٹ میں کہ جہاں تک جموں کشمیر ہائی کورٹ کا تعلق ہے اس نے کوئی کنفرمیشن نہیں دیا تھا اور مرکزی حکومت نے سرٹیفکیٹ سپریم کورٹ کے سامنے پیش نہیں کیا - دوسری بات یہ ہے کہ اس شخص نے سات سال تک اس پیٹیشن کا انتظار کیا اور اس کے بعد اچانک مہاترے کے قتل کے فوراً بعد اس کو پھانسی پر لٹکایا گیا - تیسری بات یہ ہے کہ جو ایک اور قتل کا کیس ہے جس کو لنگیٹ قتل کیس کہا جاتا ہے جس کیس سے وہ بنڈ تھا - سن ۱۹۷۸ سے اس کا مقدمہ سری نگر میں چل رہا تھا - یہ لیگل آسپیکٹ ہیں -

ہماری دنیا کی سب سے بڑی جمہوریت ہے اور ہمیں اس میں کچھ پرسیڈنٹ قائم کرنے ہیں، ساری دنیا کے سامنے اور ہمیں بتانا ہے کہ کہیں اس معاملے میں انتقام گیری تو نہیں ہوئی ہے، کہیں اس معاملے میں زبردستی تو نہیں ہوئی ہے کہ ہم نے ایک شخص کو غیر متوقع طور پر . . . . .

(انٹرویشن)

श्री हरीश रावत : आप क्या समझते हैं इन्तकाम लिया गया है। आप अपनी राय दीजिये। (**व्यवधान**)

شری عبدالرشید کابلی

میں یہ بتانا چاہتا ہوں کہ کچھ ایسا امپریشن پیدا ہو گیا ہے کہ کہیں ہم نے ماترے کے اس قتل کے جواب میں کوئی جلد بازی تو نہیں ہوئی. میں یہ کہہ دینا چاہتا ہوں کہ جہاں تک مقبول بٹ کی کرتوتوں کا تعلق ہے. ہم نے اس کو کنڈیم کیا ہے اور ہم کبھی بھی نہیں چاہیں گے کہ کوئی ایسا آدمی جو سیشنسٹ ہے جو جموں کشمیر کو ہندوستان کے باہر نکالنے کی کوشش کرے اس کو سزا نہ ملے، جو بھی کام

اس نے کیا ہے اس کی ہم نے مذمت کی ہے - لیکن جہاں تک لیگل اسپیکٹس کا سوال ہے - آپ کو اس ایوان میں بتانا پڑے گا کہ ہم نے کوئی ناانصافی تو نہیں کی - دوسری بات یہ کہ کانگرس پارٹی کی طرف سے جموں کشمیر میں ڈاکٹر فاروق عبداللہ پر الزام لگایا جاتا ہے، آپ کی طرف سے یہ کہا جا رہا ہے کہ ڈاکٹر فاروق عبداللہ آزاد کشمیر گیا تھا - جہاں پر اس کی تصویریں لبریشن فرنٹ والوں کے ساتھ چھپی ہیں، میں آپ کو بتانا چاہتا ہوں کہ ہم نے ایک چیپٹر کو ختم کر دیا ہے ۱۹۷۵ء میں ہندوستان کی مہان لیڈر شریمتی اندرا گاندھی اور شیر کشمیر شیخ عبداللہ کے درمیان ایک سمجھوتہ ہوا اور بہت ساری باتیں دونوں طرف سے ہوئی ہیں - جموں کشمیر کے لوگوں کے ساتھ ۹ اگست ۱۹۵۳ء کو زور زبردستی ہوئی ہے ۱۹۵۳ میں شیخ عبداللہ صاحب وہاں کے وزیر اعظم تھے، جس نے ہندوستان کے ساتھ کشمیر کو ملایا تھا - اس میں گرفتاریاں ہوئیں اور ناانصافیاں ہوئیں ۹ اگست ۱۹۷۵ء کے دوران جو ناانصافیاں ہوئیں اس کو جموں کشمیر کے لوگوں نے پسند نہیں کیا ہے - جو بھی سرکار وہاں بنتی ہیں اس میں وہاں کے لوگوں نے پارٹیسپیشن نہیں لیا ہے. ڈیموکریسی کے

پروسیس میں۔ اس بنا پر میں کہنا چاہتا ہوں کہ ۱۹۷۶ء میں شیخ صاحب اقتدار میں آ گئے الفتح نام کے ویکٹی کو معاف کر دیا۔ جیسے غلام محمد صادق صاحب نے نرمی لانے کی پالیسی اختیار کی ہے، اس کو ہم نے ایپریشیئٹ کیا ہے، اس زمانے میں جو ملک کے خلاف کام کر رہے تھے ان کے لئے صادق صاحب نے کہا کہ طاقت اور زور سے نہیں محبت سے بنائے جائیں گے۔ اس کا نتیجہ یہ نکلا کہ ۱۹۶۴ء میں شیخ صاحب کے کیسز کو واپس لے لیا گیا۔ جموں سے پالیٹیکل ورکرس کو نکالا گیا۔ صادق صاحب جو کانگریس کے بڑے نیتا تھے انھوں نے یہ کام انجام دیا۔ یہ پروسیس جاری رہا، میں مبارک باد دیتا ہوں شریمتی اندرا گاندھی کو انھوں نے اس کی حوصلہ افزائی کی، صادق صاحب کی وفات کے بعد میں دوسرے کانگریس کے نیتا وہاں آئے، شری سید میر قاسم۔ انھوں نے اس سلسلے کو آگے جاری رکھا۔ صادق صاحب کے وقت میں شیخ صاحب اور مرکز کے درمیان ایک سمجھوتہ ہوا جو شیخ صاحب کی فتح تھی اور اندرا جی کی فتح تھی اور پورے ہندوستان کی فتح تھی۔ آپس کی جو دوریاں تھیں وہ ختم ہو گئیں، ایک دوسرے کے ساتھ جو گلے شکوے تھے وہ ختم ہو گئے۔ کشمیر ایک بہت ہی سینسی ٹیو سٹیٹ ہے اور اس کے ارد گرد پاکستان کا بارڈر ملتا ہے اس بنا پر شیخ صاحب نے ۱۹۷۶ء میں الفتح نام کی ایک جماعت کو معاف کیا اور جیل سے نکالا جس میں فضل حق قریسی اور درجنوں ایسے لوگ ہیں، اس زمانے میں بندوق اٹھا کر ہندوستان کو چیلنج کرتے تھے، جس دن وہ نکالے گئے اس دن کیسز واپس لئے گئے۔ بعد میں انھوں نے اپنا کاروبار شروع کیا۔ یہ بہت بڑی فتح ہے، محبت اور پیار سے لوگوں کے دل جیتے جا سکتے ہیں، مجھے ایوان کو یہ بتاتے ہوئے بہت دکھ ہو رہا ہے کہ مقبول نام کا شخص جس کو پھانسی دی گئی اس کو کوئی نہیں جانتا تھا۔ پورے کشمیر میں کبھی اس کے لئے مظاہرہ نہیں ہوا۔ اس کے لئے کبھی آنسو نہیں بہائے گئے۔ سات برس تک اس کو تہاڑ جیل میں رکھا گیا جہاں پر اس کو پھانسی دے کر ہیرو بنایا گیا، میں سمجھتا ہوں کہ یہ بہت مہان دیش ہے، بہت بڑا دیش ہے، ہم نے ساری دنیا کی کھاٹ کھڑی کی ہے، یہاں پر ملٹری رجیم نہیں ہے، سات برس تک، ایک آدمی نے سزا بھگتی اور اس کو تہاڑ جیل میں رکھا۔ اس نے پریذیڈنٹ کے سامنے مرسی پٹیشن رکھی جس کو رد کر دیا گیا۔ اس بنا پر میں کہنا چاہتا ہوں کہ کانگریس کو ہندوستان جتنا پیارا ہے اپوزیشن اس سے کم پیچھے نہیں ہے، نیشنل کانفرنس کی اس ملک کے لئے بہت سیکری فائز ہیں، ۱۹۵۳ء سے پہلے ۱۹۴۷ء میں جب ہندوستان کی فوجیں

وہاں پر نہیں تھیں تو کشمیر کے مسلمانوں نے پاکستان کا مقابلہ کیا اور جانیں قربان کر دیں، بہت سارے نوجوان قتل کر دیئے گئے لیکن ہندوستان کی آن پر آنچ نہیں آنے دی، میں آپ سے اس بارے میں جواب چاہتا ہوں کہ کہیں آپ کی اس جلد بازی کے نتیجے میں محمد مقبول کو ہیرو بنا کر اہمیت دلا کر کوئی غلط کام تو نہیں کیا۔

دوسری بات میں جاننا چاہتا ہوں کیا گورنمنٹ آف انڈیا اور پاکستان سرکار کے درمیان کوئی کورس پونڈنٹس ہوئی تھیں اس میں ہماری گورنمنٹ یہ چاہتی تھی کہ مقبول بٹ کو رہا کر دیا جائے گا۔ اگر اس کے بدلے میں پانچ آدمی ری پیٹریٹ کئے جائیں۔ میں جاننا چاہوں گا کیا پاکستان سرکار نے اس آفر ری جیکٹ کر دیا تھا۔

ہماری فارن پالیسی ایک بہت کامیاب پالیسی ہے جو ہندوستان کے لوگوں کے جذبات کی علمبردار ہے۔ اس پالیسی کے تحت دنیا میں جو رتبہ ملا ہے میں اس کی تعریف کرتا ہوں، دنیا میں صنعتی لحاظ سے جو بڑی طاقتیں ہیں ان میں ہماری چھٹی جگہ ہے اور آئندہ بھی اس لحاظ سے ہماری طاقت میں زیادہ اضافہ ہوگا۔ لیکن جو ہمارے آس پاس کے ملک ہیں اُن کے ساتھ ہمارا کوئی مقابلہ نہیں ہے۔ پاکستان کی

بار شکست کھا چکا ہے۔ بنگلہ دیش اس کے ہاتھ سے نکل چکا ہے۔ لیکن اس بنا پر جنگ کی فضا یا ماحول پیدا کرنے کی ضرورت نہیں ہے۔ اگر وہ ملک خود ہم ٹکرانے کی کوشش کرے گا تو پاش پاش ہو جائے گا۔ یہی حالت بنگلہ دیش کی ہے۔ اس لئے میری گذارش ہے کانگریس کے ذریعہ جو پاکستان کے ساتھ جنگ کی بات کی جارہی ہے، الیکشن انٹرسٹ میں تو وہ ٹھیک ہو سکتی ہے لیکن ملک کے مفاد کے لئے وہ ٹھیک نہیں ہے۔ اس طرح کی باتوں سے کوئی فائدہ نہیں ہوگا۔

میں نے جو چند سوال اس ایوان میں رکھے ہیں مجھے امید ہے وزیر اعظم صاحبہ اپنے جواب میں ان سوالوں کا جواب دیں گی۔

ऊर्जा मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री आरिफ मोहम्मद खां) : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने महामहिम राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर बोलने का जो अवसर मुझे दिया है, उसके लिये मैं आपका बहुत आभारी हूं।

महामहिम राष्ट्रपति जी ने अपने अभिभाषण में कहा है—हमारा गणराज्य तनाव के दौर से गुजर रहा है। महत्वपूर्ण राष्ट्रीय कामों के लिये देश के लोक-सेवकों और जनता के नुमाइन्दों की दृढ़-निष्ठा की जरूरत है। जितना हम राष्ट्र से लेते हैं उससे ज्यादा हमें उसे देना चाहिये। आज हमारे लिये राष्ट्रीय आदर्शों के प्रति पुनः समर्पण की भावना की जरूरत है।

इन शब्दों को प्रकट कर के, मैं समझता हूं, महामहिम राष्ट्रपति जी ने इस सदन के सम्मानित सदस्यों के लिए एक दिशा निर्धारित की है और कहा है कि जनप्रतिनिधियों को किस प्रकार काम करना चाहिये। एक तरफ राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में देश के सामने उत्पन्न कठिनाइयों और खतरे की बात कही गई है, हमें आज जिन चुनौतियों का सामना करना है उनका उल्लेख किया है और दूसरी तरफ हम इस सदन में विपक्ष के कई माननीय सदस्यों से यह बात सुन चुके हैं कि सरकार की तरफ से, कांग्रेस की तरफ से, माननीया प्रधानमंत्री जी की तरफ से जंग का हौव्वा खड़ा किया जा रहा है। रशीद मसूद साहब भी कह रहे हैं कि यह सही है, मैंने उनकी तकरीर को सुना नहीं था, लेकिन अभी काबुली साहब ने भी यही कहा है, जार्ज साहब भी इस बारे में अपनी गर्दन हिला रहे हैं, मुझे मालूम है आप भी यही कहेंगे...

श्री जार्ज फर्नान्डीज (मुजफ्फरपुर) : एक लाख जवान सदर्न कमाण्ड और वेस्टर्न कमाण्ड के बाड़मेर में बाड़मेर-आपरेशन चला रहे हैं, यह किसलिये चल रहा है ?

श्री आरिफ मोहम्मद खां : जहां तक हिन्दुस्तान का ताल्लुक है—अहिंसा को हमने केवल सिद्धान्त रूप में ही स्वीकार नहीं किया है बल्कि उस पर अमल भी किया है। जहां कहीं हमें मजबूर किया गया, जहां हम पर हमला किया गया, जहां हमारी एकता और अखण्डता के लिये खतरा पैदा किया गया, तब आगे बढ़ कर हमारी फौर्सेज ने देश की रक्षा जरूर की है, देश की एकता और अखण्डता को जरूर बचाया है। और अगर आज राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस प्रकार के कुप्रयास किये जा रहे हों, जहां एक बार फिर हमारी एकता और अखण्डता को खतरा पैदा हो जाए, तो उसके लिए तैयार तो रहना ही पड़ेगा और तैयारी केवल अपनी फार्सेज की ही नहीं करनी पड़ेगी बल्कि राष्ट्र को भी

[श्री आरिफ मोहम्मद खां]

उसके लिए तैयार करना पड़ेगा और उन खतरों के बारे में बताना पड़ेगा।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मेरा यह मानना है कि चाहे कुछ साल पहले असम में चलाया गया आन्दोलन हो, चाहे पंजाब का आन्दोलन हो या जम्मू व कश्मीर में जो स्थिति पैदा हुई है वह हो, मेरा यह निश्चित मत है कि यह न तो स्थानीय आन्दोलन है और न वहां की जनता की धार्मिक, आर्थिक या सामाजिक समस्याओं का समाधान ढूंढने के लिए ये आन्दोलन चलाए गए बल्कि इन का उद्देश्य सिर्फ देश को कमजोर करना है और इनका उद्देश्य हम ने जो रास्ता प्रगति और विकास का अपनाया है, उसको अवरुद्ध करने का है। हमारी जो कल्पना है कि हमारी स्वतन्त्रता और विकास दोनों ही एक सिक्के के दो पहलू हैं और हमारी स्वतन्त्रता पूरी नहीं होती जब तक कि हम आर्थिक विकास और प्रगति के मार्ग पर तेजी से आगे नहीं बढ़ते, मैं ऐसा मानता हूं कि आज दुनिया में बहुत सी ऐसी ताकतें हैं, जिन्हें यह अच्छा नहीं लगता कि हिन्दुस्तान प्रगति करे। कल जब हमारे बुजुर्ग स्वतन्त्रता संग्राम का आन्दोलन चला रहे थे, तो हमारे लिए यह कहा जाता था कि ये काले रंग के लोग, इनमें इतनी क्षमता नहीं है कि अगर इनको आजादी दे दी जाए, तो ये अपना शासन चला पाएंगे और इतने बड़े देश के टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे। आज उसी तरीके के लोग, मैं उन्हीं को नहीं कहता जो उस वक्त विरोध करते थे बल्कि उसी प्रकार के विचार रखने वाले लोगों को यह अच्छा नहीं लगता कि ये लोग जो गोरी चमड़ी वालों के गुलाम थे, ये शासन इतना अच्छा चलाएं। जो भारत सन् 1950 में 32 मिलियन टन अनाज पैदा करता था, वही आज 142 मिलियन टन अनाज पैदा करे, औद्योगिक क्षेत्र में हम नये कीर्तिमान स्थापित करें और विज्ञान के क्षेत्र में हम इतना प्रगति करें और विकास के नये-नये कार्यक्रम करें, यह उन्हें अच्छा नहीं लगता है और इसलिए फिर से साजिश शुरू हो गई है हमको कमजोर करने की। साजिश शुरू होती है हमको हमारे मार्ग से विचलित करने की, साजिश शुरू होती है हमको हमारे रास्ते से हटाने की और ये जितनी घटनाएं हुई हैं मेरा निश्चित मत है कि इनके पीछे निश्चित रूप से उन ताकतों का हाथ है, जिन्हें हमारी तरक्की अच्छी नहीं लगती है। श्रीमन्, आप उस मानसिकता पर गौर कीजिए। जब स्वयं हमारे देश के अन्दर ऐसे हिस्से बने हुए थे जहां पर लिखा हुआ था—

"Indians and dogs are not allowed."

जहां हमें जानवरों के बराबर दर्जा दिया जाता था और आज जब संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत की प्रधान मंत्री जाती हैं केवल अपने देश का प्रतिनिधित्व करने के लिए ही नहीं बल्कि दुनिया को दूसरे 103 देशों का प्रतिनिधित्व करने के लिए और उन देशों का जिनके अधिकारों का हमारी ही तरह हनन किया गया था, जिनका हमारी ही तरह शोषण किया गया था, जिन्हें हमारी ही तरह कमजोर बनाया गया था, तो आज दुनिया की उन बड़ी शक्तियों को यह बात अच्छी नहीं लगती है। वे नहीं चाहती कि हमारी प्रधान मंत्री इस तरह से प्रतिनिधित्व करने आए, वह भारत जो कल तक गुलाम था, उसकी प्रधान मंत्री आज दो-तिहाई से ज्यादा दुनिया के मुल्कों का

[श्री आरिफ मोहम्मद खां]

प्रतिनिधित्व संयुक्त राष्ट्र संघ में करें और इसलिए यह साजिश शुरू होती है।

मुझसे पहले अभी काबुली साहब बोल रहे थे, और कश्मीर के मामले पर कल जब सोज साहब बोल रहे थे, तो मेरी तबियत बहुत खुश हुई थी। मैंने उन्हें बोलते हुए सुना था, उन्होंने संविधान को हाथ में लेकर कहा था कि इस संविधान को, इस आईन को हम सलाम करते हैं और हमने अपने यहां पर जो इलेक्शन कराए, वे इस संविधान के अन्तर्गत कराए लेकिन इस के बावजूद भी हमारी वफादारी पर शुबाह किया जाता है। हम शुबाह नहीं करते उनकी वफादारी पर। हमने किसी वक्त भी आप पर ऐसा आरोप नहीं लगाया है हमारा आरोप इससे बिल्कुल भिन्न है। कभी हम ने काश्मीर के मुख्य मंत्री या काश्मीर से चुने जाने वाले सांसद यो विधायक पर आरोप नहीं लगाया कि वे कोई राष्ट्र विरोधी कार्य कर रहे हैं। हमने किसी भी समय यह आरोप नहीं लगाया। हमारा आरोप यह है कि जम्मू व काश्मीर राज्य में, जहां पर राष्ट्र विरोधी तत्व शुरू से ही सक्रिय रहे हैं, आज जो शासन काश्मीर के अन्दर है, वह शासन उन तत्वों को संरक्षण दे रहा है। हमारा आरोप यह है कि वे तत्व जो राष्ट्र विरोधी तत्व हैं और जो खुलेआम 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' के नारे लगाते हैं, वे काश्मीर में सक्रिय हैं। मरहूम शेख अब्दुल्ला ने उनको नियंत्रण में रखा था। जिनको शेख अब्दुल्ला ने कमजोर करके रखा था, जिनको शेख अब्दुल्ला ने काबू में करके रखा था, आज उनको कश्मीर सरकार ने खुली छूट दे दी है। यह हमारा आरोप है।

श्रीमन्, मैं इसके ज्यादा विस्तार में नहीं जाना चाहता, यह कहना चाहता हूं कि जब पाकिस्तान ने 1965 में हम पर हमला किया था और पाकिस्तानी सेनाएं बटटामालू तक पहुंच गई थी तो उस हमले के बारे में एक पाकिस्तानी जनरल ने अपनी एक किताब में लिखा है कि 1965 में हमने जो हमला किया था, जिसे जिब्राल्टर आप्रेशन का नाम दिया, वह हमारा आप्रेशन इसलिए असफल हो गया कि श्रीनगर में, कश्मीर की वादी में, स्थानीय तौर पर हम समर्थन नहीं जुटा सके। वे इसलिए समर्थन नहीं जुटा सके थे क्योंकि तत्कालीन सरकार ने राष्ट्र विरोधी तत्वों को कमजोर करके रखा था, उनको नियंत्रण में रखा था। इसलिए पाकिस्तानी सेना बटटामालू तक पहुंचने के बावजूद उस हमले में कामयाब नहीं हो सकी। इसके लिए कश्मीर के लोगों की जितनी तारीफ की जाए वह कम है क्योंकि उन्होंने हमारी सेनाएं वहां तक पहुँचने तक विदेशी सेनाओं का मुकाबला किया, विदेशी सेनाओं को खदेड़ कर भगाया, सारी कुर्बानी की।

आज संकट यह है कि जो आदमी आज ही नहीं, शुरू से पाकिस्तान समर्थक माना जाता है, जो आदमी कश्मीर के भारत का अंग होने के बारे में बारबार सवाल पैदा करता है, जो आदमी प्रेस वालों के पूछने पर कि आपकी राष्ट्रीयता क्या है, जवाब देने से इंकार कर देता है और कभी यह नहीं कहता कि मैं भारतीय नागरिक हूं, उस आदमी को आज कश्मीर के मुख्य मंत्री ने आदर और सम्मान का स्थान दे दिया, उसको आज रेस्पेकटेब्लिटी दे दी है।

श्रीमन् माननीय मुख्य मंत्री, कश्मीर और उनके साथी और समर्थक उनके बचाव में आज जो चाहे कह सकते हैं लेकिन श्रीनगर की जामा मस्जिद में कश्मीर के माननीय मुख्यमंत्री ने, मीर-वाईज मौलवी फारुख की मौजूदगी में यह कहा कि मुझे तो बहुत-सी समस्याओं और कठिनाइयों की वजह से श्रीनगर से ज्यादातर बाहर रहना पड़ता है, इसलिए जिस समय मैं श्रीनगर में नहीं रहूं उस समय आप जन समस्याओं के निराकरण के लिए मौलवी फारूख के पास आ सकते हैं। मैं मौलवी फारूख का नाम इसलिए ले रहा हूं कि कश्मीर भारत का अंग है और इस बारे में बार-बार अगर कोई सवाल उठाता है तो वह है मौलवी फारूख।

श्री अब्दुल रशीद काबुली : डिप्टी स्पीकर साहब जिस मीटिंग का आप जिक्र कर रहे हैं, मैं उसमें था। चीफ मिनिस्टर ने उसमें यह कहा था कि मेरी गैर-हाजिरी में सोशो-इकोनोमिक प्राब्लम् को रिमूव करने के सिलसिले में आप मौलवी साहब के पास आ सकते हैं। पोलिटिकल प्राब्लम के बारे में नहीं कहा था।

شری عبدالرشید کابلی

ڈپٹی اسپیکر صاحب آپ جس میٹنگ کا ذکر کر رہے ہیں میں اس میں تھا۔ چیف منسٹر نے اس میں کہا تھا کہ میری غیر حاضری میں سوشو اکانومک پرابلم کو رمو کرنے کے سلسلے میں آپ مولوی صاحب کے پاس آسکتے ہیں۔ پالیٹیکل پرابلم کے بارے میں نہیں کہا تھا۔

श्री आरिफ मोहम्मद खां : मैं काबुली साहब का बहुत आभारी हूं कि आपने मेरा काम बहुत हल्का कर दिया। मैं इनका आभारी इसलिए भी हूं कि मैंने जब यह आरोप लगाया था और एक पत्रिका के नुमाइन्दे ने जब कश्मीर के माननीय मुख्य मंत्री से यह पूछा था कि यह आरोप सही है तो वे मुकर गये थे और कहा था कि मैंने यह कभी नहीं कहा था। हो सकता है कि माननीय काबुली साहब से लौटने पर जवाब-तलब किया जाए। यह चीज रिकार्ड पर रहनी चाहिए।

श्री अब्दुल रशीद काबुली : आप मौलवी फारूख के बारे में कह रहे हैं। उनका पासपोर्ट इंडियन गवर्नमेंट ने बनाया था। वह इंडियन पासपोर्ट है।

شری عبدالرشید کابلی

آپ مولوی فاروق کے بارے میں کہہ رہے ہیں، اُن کا پاسپورٹ انڈین گورنمنٹ نے بنایا تھا۔ وہ انڈین پاسپورٹ ہے۔

श्री आरिफ मोहम्मद खां : उनका पासपोर्ट ही भारतीय नहीं है, वे जो खाना खाते हैं, वह भी भारतीय है, जो सामान और सुविधाएं हासिल करते हैं, वे भी सब भारतीय रुपये से हासिल करते हैं। जिस धरती पर वे रहते हैं वह भी भारतीय है। लेकिन सारी परेशानी यह है कि यह सब होने के बावजूद जब उनसे यह सवाल किया जाता है कि आप इस देश के नागरिक हैं तो वह अपनी राष्ट्रीयता बताने से इंकार कर देते हैं।

SHRI ABDUL RASHID KABULI : This is not/confirmed news.

श्री आरिफ मौहम्मद खां : खबरें तो अखवारी ही होंगी। अगर काबुली साहब दूसरा स्रोत जानते हैं तो वह बता दें। **(व्यवधान)**

MR. DEPUTY-SPEAKER : What is this Mr. Kabuli ? Why can you not hear him ? You can reply to him. But this kind of interruption is not good.

श्री आरिफ मोहम्मद खां : श्रीमन् अखवार वालों में मैं यह मानता हूं कि इतनी निष्पक्षता है कि अगर उन्होंने एक वक्तव्य छापा है कि मोलवी फारूख अपनी नागरिकता बताने से इन्कार करते हैं, अगर इस सिलसिले में कोई क्लेरिफिकेशन देंगे, कोई स्पष्टीकरण देंगे तो निश्चित ही अखबार वाले उस स्पष्टीकरण को भी छापेंगे। वह स्पष्टीकरण बदकिस्मती से मुख्यमंत्री की तरफ से आता है, काबुली साहब की तरफ से आता है, मौलवी फारूख साहब की तरफ से आज तक कोई स्पष्टीकरण नहीं आया। स्पष्टीकरण क्या आया। कश्मीर के मुख्यमंत्री ऐलान कर रहे थे कि हम मौलवी फारूख को राष्ट्र की धारा में लेकर आए हैं और दूसरी तरफ मकबूल भट्ट को जो राष्ट्र के खिलाफ साजिशों में शामिल रहा, जिसने कत्ल किए, जब उसको फांसी दी गई और सरहद के उस पार से, दूसरे देश के राष्ट्रपति से उसको शहीद कहा और वहां पर हड़ताल करने के लिए अपील की तो मौलवी फारूख ने अपने राजनीतिक साथियों के साथ कश्मीर वैली में बन्द का आह्वान किया।

श्री अब्दुल रशीद काबुली : यह बिल्कुल गलत है। या वे स्तीफा दे दें, या मैं स्तीफा दे दूंगा। इस बात की जांच करा ली जाए।

مشری عبدالرشید کابلی

یہ بالکل غلط ہے۔ یا وہ استعفیٰ دیں یا میں استعفیٰ دے دوں گا۔ اس بات کی جانچ کرا لیجئے۔

MR. DEPUTY-SPEAKER : What is this ? On every point you are opposing. Everybody has the freedom of speech.

(Interruptions)

SHRI CHINTAMANI PANIGRAHI (Bhubaneswar : This should be examined whether there is any electric connection there.

PROF. MADHU DANDAVATE (Rajapur) : That current has reached there also.

श्री आरिफ मोहम्मद खां : माननीय उपाध्यक्ष जी, अभी 14 जनवरी को कांग्रेस (आई) के द्वारा आयोजित रैलियों पर जम्मू-कश्मीर की पुलिस ने बिना किसी कारण के लाठी चार्ज किया, गोली चलाई, जुल्म किया, 6 आदमी वहां पर जान से मारे गए, उसके लिए अपनी तरफ से, अपनी पार्टी की तरफ से अपनी नेता की तरफ से संवेदना व्यक्त करने के लिए मुझे भी वहां जाने का मौका मिला और श्रीमन् मैं यहां से यह सोच कर गया था कि राजनीतिक पार्टी के द्वारा आयोजित रैलियों को शायद वहां की सरकार ने पसंद नहीं किया और उन्होंने संयम से काम नहीं लिया, मर्यादा के अंदर नहीं रहे और ज्यादती कर दी। हमें हमदर्दी थी उनके परिवारों के साथ जिनकी जानें गई थीं, जिन पर जुल्म किया गया था, जिन्होंने संपत्ति खोई थी। मैं इस संबंध

में इसलिए कह रहा हूं क्योंकि मेरे इल्जाम को काबुली साहब गलत बता रहे हैं मकबूल भट्ट के सिलसिले में। उसी के संबंध में मैं कह रहा हूं कि जब वहां जाकर देखा तो पता लगा कि कांग्रेस आई के कार्यकर्ता को इसलिए नहीं मारा गया कि वह कांग्रेस आई का कार्यकर्ता था बल्कि उनमें से हरएक मरने वाले व्यक्ति, चोट खाने वाले व्यक्ति, जिनके घर जलाए गए, जिनको आर्थिक नुक्सान पहुंचाया गया, उसको पूछ-पूछ कर कहा गया कि फिर कहो हिन्दुस्तान जिन्दाबाद। और वह हिन्दुस्तान जिन्दाबाद कहता रहा और पिटता रहा। सोनावर के पास शोगांव में खिजर मोहम्मद मामूली आदमी नहीं था। 15 लाख रुपए साल की आमदनी उसे सेब के बागों से होती है। किस तरीके से उसकी जान गई। वह ऐसा आदमी था जिसे ज्यादा लोग जानते पहचानते थे। ऐसे आदमी को सजा दो जिसका असर दूसरों पर पड़ेगा। उसकी मौत गोली से नहीं हुई। तहसील के बाहर खड़ा करके खिजर मोहम्मद से हर डंडे पर कहा गया कि फिर कहो हिन्दुस्तान जिन्दाबाद। और खिजर मोहम्मद हिन्दुस्तान जिन्दाबाद कहता रहा।

MR. DEPUTY-SPEAKER : Why are you talking Mr. Kabuli ? Are you against 'Hindustan 'Zindabad' ? No, no. Do not get excited. Please sit down.

श्री आरिफ मोहम्मद खां : हर डंडे की चोट पर हिन्दुस्तान जिन्दाबाद कहते-कहते उसने अपनी जान दे दी। वहां पहुंच कर, उन परिवारों की विपदाओं को सुन-कर पहली बार यह समझ में आया कि काश्मीर में लड़ाई राजनीतिक दलों के बीच में नहीं है। काश्मीर में इस वक्त लड़ाई है वहां की सरकार और उन राष्ट्र विरोधी तत्वों की जिनको कि वहां की सरकार संरक्षण दे रही है और उन लोगों के बीच में जो राष्ट्रीय हैं और काश्मीर को हिन्दुस्तान का अंग मानते हैं। वे यह मानते हैं कि काश्मीर और हिन्दुस्तान का मुस्तकबिल भविष्य एक है। सन् 1965 का जिबराल्टर ऑपरेशन नाकाम हुआ था क्योंकि उस वक्त काश्मीर में पाक समर्थकों की तादाद कम थी। वे कमजोर थे, उनको प्रभावहीन बनाकर रखा गया था। आज उनका इतना प्रभाव है कि मकबूल बट्ट को फांसी दिए जाने के बाद मौलवी फारूक और उनके सहयोगियों के आह्वान पर पूरी वैली न सिर्फ बन्द रही बल्कि अखबारी रिपोर्टों के मुताबिक 12 आदमी घायल हुए।... **(व्यवधान)** मैं वह अखबार अभी दिखा देता हूं जिसने हमारे ज्ञापन देने पर राष्ट्रपति जी और प्रधान मन्त्री जी से मांग की थी कि इन दोनों जूनियर मिनिस्टरों को अपनी कैबीनेट से बाहर निकाल दीजिए। क्योंकि, इन्होंने काश्मीर के खिलाफ ज्ञापन दिया है। उस अखबार की कटिंग मेरे पास है। मैं एक बात और बताना चाहता हूं। काश्मीर के माननीय मुख्य मंत्री जी एक होटल का उद्घाटन करते हैं और केन्द्रीय सरकार से मांग करते हैं कि अगर काश्मीर का विकास होना है तो केन्द्रीय सरकार को ज्यादा आर्थिक सहायता काश्मीर को देनी पड़ेगी। आगे कहते है, मरकजी वजीरे खजाना ने इस सिलसिले में माली इमदाद देने और दुश्वारियों को दूर करने का यकीन दिलाया है। अगर इस सिलसिले में मरकज की तरफ से किसी किस्म की

[श्री आरिफ मोहम्मद खां]

रुकावट पैदा की गई तो मैं अरब मुमालिक से बिला वास्ता सरमाया हासिल करूंगा। यह अखबार दिल्ली से छपने वाला कोई अखबार नहीं है बल्कि इनकी पार्टी का आफिशियल आरगन "नवाए-सुबहो" है जिसने यह रिपोर्टिंग की है। आप यह न समझिए कि इन सुर्खियों को देखकर कोई घबराहट है। लेकिन इसके पीछे जो मानसिकता काम कर रही है, उसकी तरफ आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं। मुझे मालूम है अखबार वालों से बात करते वक्त माननीय मुख्य मंत्री जी पर्यटन को विकास देने की बात कर रहे थे और यह कह रहे थे कि काश्मीर को पर्यटन में अन्तर्राष्ट्रीय नक्शे पर आना चाहिए। आपके अखबार ने हैडिंग क्या लगाई "मैं काश्मीर को बैनुल अक्वामी नक्शे पर लाकर ही दम लूंगा"। मेरा आरोप भी यही है कि काश्मीर के गांव में पहुंचकर एक बात करते हैं और श्रीनगर पहुँचकर दूसरी बात करते हैं। श्री नगर में आप कहेंगे कि दिल्ली की कांग्रेस सरकार जम्मू-काश्मीर के मुस्लिम करेक्टर को बदलना चाहती है, इसलिए मुसलमानों को एक हो जाना चाहिए। मौलवी फारूक के साथ हाथ मिलायेंगे और श्री नगर पहुँचकर आप थोड़े से सेक्युलर हो जाएंगे। दिल्ली पहुँचकर आप विरोधी हो जायेंगे। वहां पर पता चलेगा कि पूरे राष्ट्र का बीड़ा आपने इस वक्त उठाया हुआ है। मैं माननीय मुख्य मंत्री जी को छोड़ देता हूं। मैं आपके अखवार पर आरोप लगा रहा हूं कि आप इस किस्म की प्रोवोकेटिव हैंड-लाइन्स लगा रहे हैं— "मैं काश्मीर को बैनुल अक्वामी नक्शे पर लाकर ही दम लूंगा।" मैं अखबार पर लारोप लगाता हूं आप पर नहीं। आपने क्या किया? आपने अखबार को ठीक करने के लिए क्या किया? यहीं नहीं वह रुके। दूसरा अखबार निकलता है आइना। उस में मुख्य मंत्री ने जो कहा वह भी छपा है। उन्होंने कहा कि अगर हिन्दू फिरका परस्तों ने अपना रवैया नहीं बदला तो हम घर बदलेंगे। फारूख अबदुल्ला यूनिवर्सिटी केम्पस में अल्लामा इकबाल से मुताल्लिक सैमिनार में बोल रहे थे जब उन्होंने यह कहा। हिन्दू फिरकापरस्तों ने अपना रवैया नहीं बदला तो हम अपना घर (मुल्क) बदलेंगे। भारत के संविधान को वह सलाम करते हैं, हम आपको सलाम करते हैं। लेकिन भारत के संविधान को सलाम करने का क्या यही तरीका हैं कि रोज धमकिया दें, रोज इस तरह की बातें कहें। मैं मानता हूं कि फारूख अब्दुल्ला पढ़े लिखे आदमी हैं। वह खुद नहीं जानते होंगे तो भी निश्चित रूप से उनकी सरकार के अधिकारी उन्हें बताने के लिए जरूर मौजूद होंगे कि भारत का कोई भी राज्य किसी भी विदेशी मुल्क से सीधे आर्थिक सहायता नहीं मांग सकता है। लेकिन उन्होंने तो खास तौर पर अरबों की बात कह डाली। अरबों से हमारे ताल्लुकात खराब नहीं हैं। दुनिया में अगर किसी मुल्क को वे अपना हमदर्द समझते हैं, किसी मुल्क के ऊपर विश्वास करते हैं, किसी मुल्क के ऊपर यकीन करते हैं तो हिन्दुस्तान के ऊपर ही करते हैं। पैलेस्टाइन लिब्रेशन आर्गेनाइजेशन के चीफ यासर अराफत जब सुप्रीम कोर्ट में पहुंचते हैं दिल्ली में तो कहते हैं कि हिन्दुस्तान में मेरी एक बहन भी रहती है लेकिन शिष्टाचार के नाते प्रोटोकोल के नाते मुझे उसे हर एक्सालेंसी मैडम प्राइम मिनिस्टर कहना पड़ता है। श्रीमती इन्दरा गांधी मेरी

बड़ी बहन है। यह अरबों की भारत के बारे में राय है। उसके बावजूद जब ऐसे विवादास्पद मामलों में अरबों का नाम लिया जाए तो मुझे लगता है कि कहीं न कहीं कुछ बात जरूर है। मुझे कोई अधिकार नहीं है कि किसी की नीयत के बारे में कुछ कहूं, उस पर शुब्हा करूं। लेकिन मुझे अपनी राय बनाने का जरूर अधिकार है, जरूर यह सोचूं कि ये प्रयास किस दिशा में किए जा रहे हैं।

मौलवी फारूख ने आह्वान किया —मैं नहीं कहता, सारे अखबार इसके गवाह हैं और हर कोई जानता है—ठीक उसी समय जिस समय और जिस दिन पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने आह्वान किया था, काश्मीर में भी बन्द का आह्वान किया। खुद अभी माननीय काबुली साहब ने कुछ प्रश्न उठाए हैं। कितने गम्भीर प्रश्न हैं इसको आप देखें। उन्होंने अपील की, भारत को महान देश कहा और कहा और कि सात सालतक जो आदमी जेल में पड़ा हुआ था उस मकबूल भट्ट को फांसी पर चढ़ा दिया गया। अब हमें दुनिया को बतलाना पड़ेगा कि क्या हमने ऐसा करके सही काम किया। ये आपके खुद के उठाए हुए प्रश्न हैं। इन प्रश्नों से आपकी मानसिकता का पता चलता है। इतना ही नहीं। उस के भी आगे बढ़ कर आपने कहा कि मकबूल भट्ट मामूली आदमी था। यकीनन मामूली आदमी रहा होगा तभी तो 1974 में डा. फारूख अब्दुल्ला ने उनको ओथ दिलाई, हलफ दिलाया। वह कह रहे थे कि कई साल उनको जेल में रखकर आपने उनको एक बड़ा आदमी, हीरो बना दिया है। गोया आपका कहना यह है कि फांसी की बात तो बहुत आगे की बात है उसे अगर बड़ा आदमी बनने से रोकना था तो उसको जेल में भी नहीं रखना चाहिये था और उसको इजाजत होनी चाहिये थी कि वह वैली में चाहे जिस बैंक पर डाका डाले, चाहे किसी अधिकारी को गोली मार दे, चाहे देश की सुरक्षा के लिए खतरे पैदा कर दे जासूसी के काम करके और हिन्दुस्तान के खिलाफ काम करे। गोया हमें उसको जेल में भी बन्द नहीं करना चाहिये था। मैं इस पर कोई टिप्पणी करना नहीं चाहता। जो लोग सुनेंगे, जो इन तकरीरों को पढ़ेंगे वे अपनी राय खुद ही बना लेंगे।

मैं पहली वाली बात की तरफ लौट कर फिर आना चाहता हूं। यह अखबार है। इसका नाम है कायद। यह अखबार जम्मू काश्मीर लिब्रेशन फ्रंट का आफिशल आरगन तो नहीं है लेकिन मेरे खयाल से विदेश राज्य मंत्री बैठे हुए हैं वे शायद इसका समर्थन कर दें कि राजनयिक हलकों में इस अखबार को उनका आफिशल आरगन माना जाता है, उस संस्था का जो संस्था काश्मीर को उनके वकील आजाद कराना चाहती है, जो काश्मीर को हिन्दुस्तान से अलग कराना चाहती है। मरहूम शेख अब्दुल्ला साहब के इन्तकाल के वक्त इसके एडीटर श्रीनगर आए। और लौट कर जाकर जो उन्होंने आर्टिकल लिखा है जो इसमें छपा है वह पढ़ने से ताल्लुक रखता है, और जो मश्विरे दिये हैं अपने आर्टिकल में जरा देखिये जम्मू-कश्मीर सरकार ने कितनी आज्ञाकारी भावना से उस पर अमल किया है।

यह "कायद" अखबार लिखता है :

"अब अगर मीर वायज मोहम्मद फारूक और डा० फारूक अब्दुल्ला आपस

[श्री आरिफ मुहम्मद खां]

में सियासी समझौता करने में कामयाब हो जाते हैं और उसी तरह सूबाए जम्मू में किसी मोअस्सर जमात का ताव्वून हासिल किया जा सकता है तो किसी हद तक कश्मीर के सियासी इक्तसादी हालात पर काबू पाया जा सकता है।"

यह मश्विरा वकील काबुली साहब और इनकी पार्टी के डा० फारूक अब्दुल्ला कहते हैं, उन्होंने अपने इंटरव्यू में भी कहा है कि मैंने इसलिये मौलवी फारूक के साथ समझौता किया ताकि कश्मीर के मुसलमानों का जो झगड़ा पिछले 53 साल से चला आ रहा है उसको खत्म किया जा सके। जरा गौर कीजिए कितनी खतरनाक थ्योरी है। इसका मतलब हुआ वैली के अन्दर रहने वाले बहुसंख्यक इस आधार पर कि 53 साल से झगड़ा चला आ रहा है उस आधार पर उन लोगों को भी अपने साथ ले लें जिनके साथ हमारा सिद्धान्त, आदर्श मेल नहीं खाते, जिनके साथ हमारी नीतियां मेल नहीं खातीं। जरा उसी थ्योरी को आगे बढ़ाइये। अगर आज हिन्दुस्तान में सेक्यूलरिज्म की बात करने वाले, हिन्दुस्तान में फिरकापरस्तों से लड़ाई लड़ने वाले आज अगर खड़े हो कर कह दें कि हिन्दुस्तान में यहां का बहुसंख्यक वर्ग एक जमाने से बिखरा हुआ है इसलिये हम आर०एस०एस० से समझौता कर रहे हैं, तब तो फिर नीति, सिद्धान्त और आदर्श कुछ बचेगा नहीं। समझौता तो सिद्धान्तों के आधार पर होता है, समझौता किसी दूसरे आधार पर नहीं हो सकता, आखिर शेख साहब मरहूम, यह कहा जाता है कि हजारों साल कश्मीर में ऐसी शख्सियत पैदा हुई, अगर कश्मीर के मुसलमानों को जरूरत होती तो उस जरूरत को शेख अब्दुल्ला भी महसूस कर सकते थे। लेकिन शेख साहब ने उस जरूरत को महसूस करने की बात नहीं की। दिल्ली से उनकी नाराजगी हो सकती है, लेकिन उन्होंने राष्ट्र विरोधी और पाकिस्तानी समर्थक जो तत्व कश्मीर में थे उनके साथ उन्होंने समझौता नहीं किया। शेख साहब को इस बात के लिये पूरा श्रेय देना पड़ेगा और हमें अपनी श्रद्धान्जलि उनके प्रति अर्पित करनी चाहिये, कि शेख अब्दुल्ला ने उनके साथ कभी समझौता नहीं किया। उन्हें कमजोर करके रखा, शेख साहब ने उन्हें ताकत ही नहीं मिलने दी। आज उन्हीं को वहां सम्मान है।

एक और बात है, कश्मीर क्रिकेट मैच का मामला। उस पर मैं विस्तार में नहीं जाना चाहता, हर आदमी जानता है किस तरह वहां पाकिस्तानी झंडे लहराये गये, राष्ट्र विरोधी नारे लगाये गये, मुख्य मंत्री की मौजूदगी में यह सब हुआ, लेकिन कितने अफसोस की बात है कि कश्मीर सरकार की तरफ से निन्दा का, आलोचना का एक शब्द भी उस समय तक नहीं आया जब तक केन्द्र सरकार ने कश्मीर सरकार को इस बारे में लिखकर उनसे यह नहीं कहा कि इस पर आप कार्यवाही कीजिए। उसके बाद उनको खयाल आया। तब कार्यवाही की उन्होंने।

उसी संदर्भ में जब यह गिरफ्तारियां होनी शुरू हुई उसके बाद कश्मीर जमाते इस्लामी के चीफ ने श्रीनगर में एक जनसभा को संबोधित किया और वहां यह कहा कि क्रिकेट मैच में जो कुछ भी हुआ यह केवल प्रतिविम्ब है कश्मीरियों की उस भावना का जो हिन्दुस्तान के प्रति है क्योंकि कश्मीरी कश्मीर को भारत का

भाग नहीं मानते, इसलिऐ उस भावना का यह प्रतिबिम्ब था। मैंने वहां जाने के बाद, बात करने के बाद, पता लगने के बाद अखबार से बात हुई, इस बात को कहा और अपने ज्ञापन में भी कहा हमने यह आरोप लगाया कि कश्मीर जमाते इस्लामी के चीफ कश्मीर के मुख्य मंत्री से मिले, सेक्रेटेरियट में उनके दफ्तर में मिले और उसके बाद अगले दिन उन्होंने जन सभा की जहां पर उन्होंने इस घटना को कश्मीरियों की उस भावना का प्रतिबिम्ब बताया जहां वह कश्मीर को भारत का अंग नहीं मानते हैं। माननीय मुख्य मंत्री जी से जब यह प्रश्न किया गया तो उन्होंने कहा कि—This too, our meeting referred to, is totally incorrect. And Arif Mohammad Khan should know that Gilani comes from Sopur, which is the fruit centre of Jammu and Kashmir. He had come to see me in regard to the fruit merchants, who were suffering for want of more transport for carrying from their fruit their areas to other parts of India.

आज पहली बार यह बात पता चली कि काश्मीर जमायते इस्लामी के चीफ को फलों की खरीदो-फरोख्त में भी दिलचस्पी है और उन्होंने माननीय मुख्यमंत्री जी से मिलने का ही काम नहीं किया बल्कि यह कहा कि वह फलों की खरीदो-फरोख्त करने के बारे में बातचीत करने के लिए आये थे। मालूम होता है कि वह किसी जमायते इस्लामी के चीफ न हों बल्कि किसी फल की मंडी के अध्यक्ष हों। वह वहां दो घंटे रहे।

माननीय मुख्यमंत्री से फलों की खरीदो-फरोख्त की बातचीत करने के बाद अगले दिन वह काश्मीर की खरीदा-फरोख्त करने लगे और अपनी एक जन-सभा में उन्होंने काश्मीर के भारत के अंग होने पर ही प्रश्न उठा दिया।

मेरा सवाल वह नहीं है, मान लिया कि वह आपसे फलों की खरीदो-फरोख्त की बातचीत करने के लिये आये। मेरा प्रश्न यह है कि वह आदमी जो आपसे एक दिन पहले आपके दफ्तर में मिला था, अगले दिन काश्मीर की राजधानी श्रीनगर में जन-सभा करता है और काश्मीर के भारत का अंग होने पर प्रश्न उठाता है, आज तक उसके खिलाफ क्या कार्यवाही की गई? उसके खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं हुई है। ऐसा एक मामला नहीं है।

SHRI ABDUL RASHID KABULI : He is in jail.

श्री आरिफ मौहम्मद खां : यह बता रहे हैं कि वह जेल में है, यह मुझे भी मालूम है।

(*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER : He is not yielding please.

(*Interruptions*)**

MR. DEPUTY-SPEAKER : What is this ? Please don't record whatever he says. He does not do it with my permission. What is this ? Everything you are opposing. There is no toleration.

(*Interruptions*)**

श्री आरिफ मौहम्मद खां : मैं ईल्ड नहीं कर रहा हूं। बिल्कुल सही आप कह रहे हैं, वह जेल में होंगे। आप कहते हैं तो मैं मान लेता हूं।

MR. DEPUTY-SPEAKER : Why should you oppose everything. His

**Not recorded

[श्री आरिफ मुहम्मद खां]

speech will come. And if anybody contradicts, let them contradict.

(*Interruptions*)**

MR. DEPUTY-SPEAKER : Please don't do it. After all what you spoke is also on Presidential Address.

(*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER : Please don't become emotional. On every point of view everybody can express his views. This Parliament will allow unless it is unparliamentary.

श्री आरिफ मौहम्मद खां : उनकी तरफ से वकालत करने की जिम्मेदारी आजकल काबुली साहब और उनके मुख्य-मंत्री ने ली हुई है ।

श्री आरिफ मौहम्मद खां : श्रीमन, काबुली साहब इस बात का श्रेय ले रहे हैं कि जम्मू-काश्मीर असेम्बली में आपने उनका कोई सदस्य पहुंचने नहीं दिया । मेरे ख्याल से आपने उन्हें समझा दिया कि अब उनकी जरूरत नहीं है, उस काम को आप अच्छी तरह से कर लेंगे । वह अब अपनी जरूरत नहीं समझते, उस काम को आप सदन के अन्दर बेहतर तरीके से कर रहे हैं ।

MR. DEPUTY-SPEAKER : Mr. Khan don't mention his name. Very often he gets up.

श्री आरिफ मौहम्मद खां : सदन के बाहर क्या हाल है ? सदन के बाहर यह हाल है कि फरवरी के महीने में, पहले हफ्ते में सौपुर और बारामूला में पोस्टर छपकर आते हैं, जिसमें वैली में रहने वाले अल्पसंख्यकों को कहा जाता है कि 15 दिन के अन्दर वादी छोड़ दीजिये, अगर वादी नहीं छोड़ी तो फिर मौत का सामना कीजिये ।

यह कहां कहा जाता है ? उसी कालेज में कहा जाता है जिस कालेज में पिछली 14 अगस्त को पाकिस्तान का स्वतंत्रता दिवस मनाया गया, जहां पर पाकिस्तान का झंडा लहराया गया । यह कब किया गया ? जैसा मैंने अर्ज किया कि समझौता यह है कि हम असेम्बली में देखेंगे, तुम असेम्बली के बाहर देखो । मैं किसी खास व्यक्ति पर आरोप नहीं लगा रहा हूं, लेकिन अगर आप पूरी बात पर नजर डालें तो कार्यवाही तभी हुई जब प्राइम मिनिस्टर asked the Governor, and the CM to curb secessionst activities in Jammu and Kashmir, कार्यवाही तब हुई जब सेठी वान्टस स्टर्न ऐक्सन इन काश्मीर । आपने उस वक्त तक कोई कार्यवाही नहीं की । आप तो कार्यवाही करने के बाद भी आज भी यहां आकर यह कह रहे हैं कि हमने मकबूल बट्ट को सात साल जेल में रख कर बड़ा आदमी बना दिया और हमने फांसी से लगाया, यह शायद हमारी महानता के सिद्धांत से मेल नहीं खाता है ।

यह सब देखकर मुझे बड़ा ताज्जुब होता है, बाजे वक्त बड़ा रहम आता है इन बेचारे विपक्षी दलों पर । काश्मीर असेम्बली और जम्मू-काश्मीर राज्य की हालत यह है कि वहां की जनता ने जनता पार्टी, भारतीय जनता पार्टी लोकदल या और किसी भी पार्टी को इस लायक भी नहीं समझा कि इनके एक सदस्य को काश्मीर असेम्बली के अन्दर सदस्य बनाकर भेज देती । इन्हें यह नहीं मालूम है कि वहां पर किस किस्म की गतिविधियां जारी हैं । इन्हें यह नहीं मालूम है कि राष्ट्र विरोधी तत्वों को किस तरह वहां संरक्षण दिया जा

**Not recorded

रहा है। इन्हें यह नहीं मालूम है कि वहां क्या क्या कुकर्म हो रहे हैं। दिल्ली, कलकत्ता, हैदराबाद या बम्बई में बैठकर रोजाना फतवे जारी कर देते हैं। किसी दिन वहां जाकर नहीं देखा उनकी मुसीबत को जिनको रोजना धमकियां दी जाती हैं कि हिन्दुस्तान जिन्दाबाद कहोगे तो तुम्हारे घरों को आग लगा देंगे, हिन्दुस्तान जिन्दाबाद कहोगे तो तुम्हारी इज्जत लूट ली जायेगी। किसी ने वहां जाकर इस बात को नहीं देखा। यहां बैठकर फतवे दे देते हैं। माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने कह दिया कि अगर कांग्रेस (आई) ने अपना हिंसक आन्दोलन बन्द नहीं किया तो हम कांग्रेस शासित राज्यों में आन्दोलन चलाएंगे। माननीय जनता पार्टी के अध्यक्ष ने भी इसी प्रकार का वक्तव्य दिया सबने मिलकर ऐसी बात कही। लेकिन किसी ने मौके पर जाकर इन्क्वायरी नहीं की। मुझे देखकर बड़ा ताज्जुब हुआ, लेकिन इधर पिछले पन्द्रह, बीस दिन या एक महीने की घटनाओं के बाद खैरियत है कि उन्होंने शायद कुछ स्थिति को समझने की कोशिश की और अब उस प्रकार का वक्तव्य सामने से नहीं गुजर रहा है। लेकिन यहां सदन के अन्दर मैंने यह देखा कि कई दफा ऐसी बात कहते वक्त उस तरफ से आरोप यह लगता है कि जैसे हमारी दिलचस्पी सिर्फ इस बात में है कि वहां की सरकार को हम खत्म करें। हमारी दिलचस्पी इस बात में नहीं है। अगर इस बात में दिलचस्पी होती तो काश्मीर के अन्दर कांग्रेस का शासन था, श्रीमती इंदिरा गांधी ने 1975 में यह फैसला न किया होता कि सारे सदस्य कांग्रेस के सदन के अन्दर थे, लेकिन सरकार नेशनल कान्फरेंस के हवाले न की होती। हमें चिन्ता सरकार की नहीं है, हमें चिन्ता इस बात की है कि वहां पर राष्ट्र विरोधी कार्य हो रहे हैं, हमें चिन्ता इस बात की है कि वह लोग जो काश्मीर को भारत का अंग नहीं मानते वह ताकत पा रहे हैं। हमें चिन्ता इस बात की है कि अगर कल कोई अन्तर्राष्ट्रीय साजिस होती है, हम उन हमलों के जिनके हम पहले शिकार होते रहे हैं, अगर ऐसे किसी हमले के शिकार होते हैं तो आज उन लोगों को जिनके पास पहले कोई ताकत नहीं थी श्रीनगर में, उनके पास आज ताकत भी आ रही है और आज शायद वहां की सरकार भी इस लायक नहीं रह जायेगी —अभी कह रहे थे कि काबुली साहब कि शेख साहब ने अल फतेह को माफ कर दिया। माफ करना बहुत अच्छी पालिसी है, कोई बुराई नहीं है। हम तो गांधी जी के सिद्धांत को मानने वाले हैं। माफ करने के सिद्धांत का हम विरोध नहीं करते। लेकिन माफ करने का मतलब यह नहीं होता है कि जिन लोगों ने राष्ट्र-विरोधी कार्य किए हैं, जो ऐंटी नेशनल लोगों की लिस्टें हैं उनमें आग लगा दीजिए और कोई रेकार्ड ही नहीं रह जाय ताकि कल को अगर कोई संकट का सामना हो और कल अगर जरूरत पड़े देखने की कि उसको अन्दर से कोई मदद तो नहीं कर रहा है तो आज यह हालत है काश्मीर शासन की कि उसके पास ऐसे किसी आदमी का कोई नाम नहीं है। उन्हें न सिर्फ माफ किया है बल्कि उनकी लिस्टों में भी आग लगा दी है जिनका पूरा चरित्र भारत-विरोधी रहा है, राष्ट्र-विरोधी रहा है। यही बात नहीं है। इससे आगे बढ़कर बात है। आप जरूर माफ कीजिए अल फतेह के आदमियों को जिसने चार

[श्री आरिफ मुहम्मद खां]

कत्ल किए हों, उनको जरूर माफ कीजिए, मुझे कोई एतराज नहीं है। लेकिन चार कत्ल करने वाले को पुलिस में इंसपेक्टर भर्ती मत कीजिए इसलिए कि जब आप उसको पुलिस में इंसपेक्टर भर्ती करते हैं और सोनावारी में जब उसकी पोस्टिंग करेंगे तो वह मौहम्मद यूसुफ के घर को आग लगाएगा, उसकी सम्पत्ति को आग लगाएगा, उसकी बेटी की इज्जत लूटने को कोशिश करेगा और यह कहेगा कि यह मैं इसलिए कर रहा हूं क्योंकि तेरे बाप ने हिन्दुस्तान जिन्दाबाद का नारा लगाया है। आप जरूर माफ कीजिए लेकिन इस तरह माफ मत कीजिऐ...

संसदीय कार्य, खेल तथा निर्माण और आवास मंत्री (श्री बूटा सिंह) : माफ भी किया और साफ भी कर दिया।

श्री आरिफ मौहम्मद खां : अकेले माफ नहीं किया, उसकी सारी लिस्टों को गायब कर दिया।

मैं आपके माध्यम से विरोध पक्ष के सम्मानित सदस्यों से कहूंगा कि जरा जानकारी तो करायें क्या इस वक्त जम्मू-कश्मीर राज्य में कोई भी ऐसा कलक्टर है जो अखिल भारतीय सेवाओं से गया हो ? एक नायब तहसीलदार की लेबिल पर जिनकी भर्ती हुई थी उनको एक साथ चार-चार प्रमोशन देकर सारे जिलों में जिला मजिस्ट्रेट बना दिया गया।

श्री छांगुर राम (लालगंज) : इससे पहले आपने इन बातों को नहीं सोचा कि कोई आई० ए० एस० अधिकारी गया या नहीं ? जब तक कि आपके और उनके सम्बन्ध अच्छे थे तब तक आपने नहीं सोचा।

डा० राजेन्द्र कुमारी वाजपेयी (सीतापुर) : पहले यह नहीं होता था, अब होने लगा है।

श्री अब्दुल रशीद काबुली : आप जम्मू-कश्मीर में एक डेलिगेशन भेजवा दीजिए. ताकि पूरे देश और दुनिया को जानकारी हो सके वाकयात क्या हैं। (**व्यवधान**)

شری عبدالرشید کابلی

آپ جموں کشمیر میں ایک ڈیلی گیشن بھجوا دیجئے۔ تاکہ پورے دیش اور دنیا کو جانکاری ہو سکے کہ واقعات کیا ہیں۔ (انٹرپشنز)

श्री आरिफ मौहम्मद खां : अगर माननीय सदस्य ने गौर से सुना होता तो मैंने कोई आरोप नहीं लगाया है। मैंने आपके माध्यम से विरोध पक्ष के माननीय नेताओं से अनुरोध किया है कि कृपया जांच करा ली जाए, हम आपको ही जांच मान लेंगे, आया कश्मीर के किसी भी जिले में कोई जिला अधिकारी आई० ए० एस० आफिसर है क्या ? कोई भी नहीं है। (**व्यवधान**) इस वक्त की स्थिति यह है कि कश्मीर में पुलिस और प्रशासन में वही, जिनकी बात काबुली साहब ने की है, माफ किए हुए लोग हैं, वही जिनकी लिस्टों को जला दिया गया है। उनको कहीं पुलिस में किसी स्तर पर भर्ती देकर प्रशासन में किसी स्तर पर भर्ती देकर इतना शानदार काम कर दिया है उन्होंने कि एक साल में चार-चार प्रमोशन दे दिए जाते हैं। एक आदमी आज से दस साल पहले जो इंस्पेक्टर रहा होगा वह

अब डी०आई०जी० और शायद एडीशनल आइ०जी० बन गया है। मेरे ख्याल से और भी स्तरों पर आप यही बात देख सकते हैं कि डायरेक्टली रेक्रूटेड आई०ए०एस० और आई०पी०एस० अधिकारी फील्ड में कितने हैं, प्रशासन में कितने हैं और सचिवालय में कितने बैठे हैं ? आप इसकी जांच करा लें। आखिर, इसके पीछे क्या मकसद है ? क्या वह अधिकारी जो अखिल भारतीय परीक्षायें पास करके आए हैं और जिन्होंने देश के दूसरे हिस्सों में शानदार काम किए हैं, कश्मीर में पहुँच कर इस लायक नहीं रह गए कि उनको जिला अधिकारी बनाया जाए या जिले में पुलिस को चार्ज सौंपा जाए ? अगर कश्मीर में जायेंगे तो वे सचिवालय में बैठेंगे—इसके पीछे मकसद क्या है ? मेरा तो निश्चित मत है बल्कि निश्चित जानकारी है कि तमाम उन लोगों को, जिनको माफ कर देने की बात माननीय सदस्य ने कही है, भर्ती कर लिया गया है और जिम्मेदार ओहदों पर उनको बिठा दिया गया है। माफ कीजिए, खुदा न खास्ता कल कोई ऐसी स्थिति आ जाती है, कोई विदेशी आक्रमण हो जाता है हालांकि हमारे रशीद मसूद साहब और जार्ज फर्नांडीज जी कहते हैं कि हम ऐसा वातावरण बना रहे हैं लेकिन इतिहास बताता है कि हमारे पड़ोसी देश को मिलने वाली छोटी-मोटी बन्दूक की नली हमारे अलावा किसी और की तरफ कभी नहीं उठी है जबकि आज तो उन्हें जो भी आधुनिक हथियार दुनिया में हो सकते हैं दिए जा रहे हैं। बाजे वक्त बड़ा अचम्भा होता है कि कैसी परिस्थितियां हैं। आज खान अब्दुल गफ्फार खां पर पाकिस्तान में हुए अत्याचार के विरुद्ध अगर श्रीमती इन्दिरा गांधी थोड़ा सा एतराज करें या अपनी भावनाओं को बतायें तो एतराज कहां से आता है ? एतराज आता है कि पाकिस्तान में चल रहे आन्दोलन के प्रति समर्थन देकर श्रीमती गांधी ने अच्छा काम नहीं किया है, यह पाकिस्तान के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप है—यह कहते हैं अटल बिहारी वाजपेयी जी और चौधरी चरण सिंह जी। बाजे वक्त हम समझने में नाकाम हैं। कल तक आप बात करते थे अखण्ड भारत की। अखण्ड भारत का मतलब क्या था ? उसका मतलब था 1947 में हुए विभाजन को हम स्वीकार नहीं करते। मैं समझता हूं आपके अखण्ड भारत का यही मतलब था। और आज आपके दिल में इतना प्यार समाया है कि आज अगर खान अब्दुल गफ्फार खां, जो हमारे भी स्वतन्त्रता संग्राम के अग्रणी रहे हैं, उनके ऊपर किए गए अत्याचार के खिलाफ आपत्ति की जाती है कि उस पर भी आपको एतराज है, उसको आप पाकिस्तान के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप बता रहे हैं।

PROF. MADHU DANDAVATE (Rajapur) : Let there be no misunderstanding that as far as Khan Adul Gaffar Khan is concerned, whenever there was attack on his liberty, we in the Opposition have always got up in the House and insisted that the House express sympathy for Khan Abdul Gaffar Khan. I am on record every time.

MR. DEPUTY SPEAKER : He is only saying what Pakistan was saying.

THE PRIME MINISTER (SHRIMATI INDIRA GANDHI) : Certain people in the Opposition have said this and this has been printed in newspapers also. Nobody has contradicted the news.

श्री आरिफ मौहम्मद खां : मेरा कहना यह है कि यह सारी घटनायें ऐसी हैं और मेरा निश्चित मत है कि हम असाधारण परिस्थितियों से गुजर रहे हैं। हमारे सामने बाहरी खतरे भी हैं और अन्दर से भी ऐसी परिस्थितियां पैदा की जा रही हैं, जिससे हमारा आर्थिक बिकास प्रभावित हो जाए। हम इस लायक न रहें कि हम जो आज अन्तरराष्ट्रीय मामलों में नेतृत्व की भूमिका निभा रहे हैं, उस भूमिका को न निभा सकें। अखण्ड भारत की बात करने वाले उनको संरक्षण दे रहे हैं, जो देश को खंडित करना चाहते हैं। समाजवाद की बात करने वाले उनको शक्ति दे रहे हैं, जो साम्राज्यवाद के पिट्ठू हैं। आज की परिस्थितियां निश्चित ही हमारे लिए असाधारण परिस्थितयां हैं। इन परिस्थितियों में मेरी निश्चित मान्यता है कि यह सरकार की जिम्मेदारी है देश की एकता और अखंडता को बचाकर रखना। अगर देश की एकता और अखंडता प्रभावित होती है तो सब कुछ प्रभावित हो जाएगा। हमारी स्वतन्त्रता प्रभावित हो जाएगी। जैसा मैंने शुरू में कहा। हमारी स्वतन्त्रता सार्थक तब है, जब हम अपने देश के गरीब और पिछड़े हुए लोगों के लिए, जिन्होंने हजारों सालों से खुशहाली नहीं देखी है, उनको खुशहाल करें। महात्मा गांधी के शब्दों में अन्तिम व्यक्ति के जीवन स्तर में सुधार न ला सकें, तब तक हमारी स्वतन्त्रता सार्थक नहीं है। अपनी उस स्वतन्त्रता को सार्थक बनाने के लिए हमें अपनी विकास और प्रगति की गति को तेज करना होगा। उसको तेज करने के लिए, उसको सुनिश्चित करने के लिए इस प्रकार के खतरों को, चाहे वे बाहर से हों या अन्दर से उनको तेजी के साथ दबाना होगा, इसलिए कि हमें देश की एकता और अखंडता को बचाकर रखना है और उसकी जिम्मेदारी हमारी है, इस सरकार की है और हमारे देश की प्रधान मंत्री, श्रीमती इंदिरा गांधी की है।

अन्त में, मैं अपने शहर कानपुर, जहां कि मैं प्रतिनिधित्व करता हूं, के एक स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी और कवि श्री देवी प्रसाद राही के शब्द आपके माध्यम से माननीय प्रधान मंत्री जी को समर्पित करना चाहता हूं :

आंख दिखाए रह-रह जुगनू,
गलियारे में पांव पसारे,
उस पर अफवाहों के झोंके,
पुरवा-पछुआ दोनों मारे,
है कोई पूछे जो इनसे
कितना अहम और खोदेंगे,
अमृत पाने के लालच में,
कितना जहर और बोयेंगे ?
माली जरा कड़ाई रखना,
मौसम लगता है आवारा
मेरे देश जागते रहना
अलख जगाता है बंजारा।

MR. DEPUTY SPEAKER : Shri Banarsi Das.

SHRI RATANSINH RAJDA : One minute, Sir.

MR. DEPUTY SPEAKER : Is your name "Banarsi Das" ?

I have called Shri Banarsi Das.

SHRI RATANSINH RAJDA (Bombay South) : Mr. Kabuli has made an offer that let there be a parliamentary delegation. Let the Government accept it.

MR. DEPUTY SPEAKER : It is for him. Shri Banarsi Das.

SHRI ABDUL RASHID KABULI: I should be allowed time...

MR. DEPUTY SPEAKER : I am not going to permit you.

I have already called Shri Banarsi Das.

श्री बनारसी दास (बुलन्दशहर) : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज इस सदन में बोलने के लिए यह मेरा पहला अवसर है, यदि किसी को मेरी वाणी उनके कानों को अप्रिय लगे, तो मैं क्षमा चाहता हूं, क्योंकि यह आपके द्वारा लगाई गई इमरजेंसी की यह देन है कि मेरा गला खराब हो गया है।

श्रीमन्, मेरे पूर्व वक्ता श्री आरिफ साहब ने भाषण को काश्मीर तक सीमित कर दिया। काश्मीर हमारे देश का एक बड़ा महत्वपूर्ण अंग है। काश्मीर की समस्या को सुलझाने के लिए बड़ी दूरदर्शिता, विवेक, सहानुभूति और सहिष्णुता की आवश्यकता है। हमारे महान नेता स्व० पंडित जवाहरलाल नेहरु ने उसी दूरदर्शिता के साथ काश्मीर को एक स्पेशल स्टेट्स दिया और हमारी प्रधान मंत्री, श्रीमती इंदिरा गांधी ने उसी भावना को सामने रखकर के शेख अब्दुल्ला को एक मर्तबा फिर से शासन की जिम्मेदारी दी थी।

प्रधानमंत्री (श्रीमती इन्दिरा गांधी) : पंडित जी ने नहीं दिया था।

श्री बनारसी दास : आपने दिया था।

श्रीमती इन्दिरा गांधी : पंडित जी के वक्त में तो इन्हीं कारणों की वजह से वे गिरफ्तार किये गये थे।

श्री बनारसी दास : लेकिन आपने फिर उसमें सुधार किया।

श्रीमन्, आप जानते हैं—स्थान बदलने से भाषा बदल जाती है, ये वही फारूख अब्दुल्ला थे, जिनको श्रीमती इन्दिरा गांधी की सौजन्यता और सहयोग से शेख अब्दुल्ला का उत्तराधिकारी बनाया गया, दिल्ली में मैट्रोपोलिटन कान्सिल और नगर-महापालिका के चुनाव के वक्त यही डाक्टर फारूख अब्दुल्ला कांग्रेस (आई) के एक खास स्पोक्समैन थे, तब वह देशभक्त थे, लेकिन अब जब वहां की जनता ने अपना मेन्डेट दिया तो इतना सब्र नहीं हुआ कि कम से कम एक साल तक या दो साल तक उनको काम करने का अवसर दिया जाता। उपाध्यक्ष महोदय, कश्मीर के मसले पर आवश्यकता है कि एक व्हाइट-पेपर पेश किया जाय, यह मसला ऐसा नहीं है जिसको एक पार्टी का मसला बनाया जाय क्योंकि हमारे कांस्टीट्यूशन में उस प्रदेश के लिये एक स्पेशल प्रोवीजन है। वहां की जनता का जिस तरह का कम्पोजीशन है उसको देखते हुए उनकी भावनाओं को भी साथ रखना पड़ेगा। इसमें आवश्यकता है—एक नेशनल कन्सेन्सस की। अब मैं इस प्रश्न पर इस माननीय सदन का ज्यादा समय नहीं लूंगा।

महामहिम राष्ट्रपति जी का अभिभाषण महज एक कैटेलोग है—पिछले साल की उपलब्धियों का। उसमें बड़ा श्रेय लिया गया है कि 142 टन खाद्यान्न की उत्पत्ति हुई है.....

श्री कृष्ण प्रकाश तिवारी (इलाहाबाद) : 142 मिलियन टन।

श्री बनारसी दास : आप ने ठीक समझा है—मेरा मतलब है—142 मिलियन टन। यह ठीक है कि देश में इतना अनाज पैदा हुआ, लेकिन उसकी कीमत किसान को क्या चुकानी पड़ी ? उसके खून, उसकी मज्जा, उसकी हड्डियों पर देश की इकानमी को खड़ा करने का प्रयास किया जा रहा है। उसकी क्रय-शक्ति को आधा कर दिया गया है। चार साल पहले जब गेहूं का दाम 105 रुपये क्विंटल था, उस वक्त किसान को सीमेन्ट 19 रुपये क्विंटल मिल रहा था, वह उस मूल्य में पांच क्विंटल सीमेंन्ट खरीद सकता था, लेकिन आज क्या स्थिति है—151 रुपये का भाव देकर भी किसान केवल 2 क्विंटल खरीद सकता है। उसकी क्रय-शक्ति 5 बोरी सीमेन्ट से घटकर 2 बोरी रह गई है। आज से चार साल पहले लोहे का भाव, जिसकी किसान को जरूरत पड़ती है, 2 हजार रुपये टन था, उस वक्त दो क्विंटल गेहूं बेचकर किसान 1 क्विंटल लोहा खरीद सकता था लेकिन आज लोहे का भाव-साढ़े पांच हजार रुपये टन है, अब एक क्विंटल लोहा खरीदने के लिये उसको 4 क्विंटल गेहूं बेचना पड़ेगा। आज ट्रैक्टर का दाम 1 लाख रुपया हो गया है, वह फ्यूअल जो किसान इस्तेमाल करता है, मेरा तात्पर्य डीजल-आयल से है—उस वक्त उसका भाव 1 रुपये 15 पैसे था, लेकिन आज 3 रुपये 15 पैसे हो गया है।

फूड कारपोरेशन ने किसानों से 151 रुपये में गेहूं खरीदा, लेकिन वही कारपोरेशन हिन्दुस्तान के मिलर्स को 219 रुपये में दे रही है। क्या इससे बड़ा कोई प्राफिटीयरिंग हो सकता है ? फिर भी उस कारपोरेशन को घाटा है। हमारा व्यापारी जो गेहूं खरीदता है उसमें फिर भी दो परसेन्ट की वृद्धि होती है, लेकिन यहां पर डेप्रीसिएशन होता है। आज इस देश के अन्दर आधी से ज्यादा जनसंख्या गरीबी की रेखा के नीचे रहती है। किसान की क्रय शक्ति को घटाने का एक परिणाम यह हुआ है कि आज देश में पैराडाक्स पैदा हो गया है। एक तरफ़ इन्फलेशन है और दूसरी तरफ रिसेशन है। आज किसान की क्रय-शक्ति बिल्कुल खत्म हो गई है। यदि किसान की क्रय-शक्ति उसी अनुपात में होती जिस अनुपात में या जिस मात्रा में चीजों के दाम बढ़े हैं तो आज यह स्थिति पैदा न होती। यह इन्फलेशन सरकार की नीतियों का परिणाम है। जितनी भी आवश्यकता की चीजें हैं—सबके दाम बढ़े हैं, सीमेन्ट के दाम बढ़ गये, कोयले के दाम बढ़ गये और कपड़े के दाम भी बढ़े हैं। एक तरफ़ टैक्सटाइल मिलें सिक होती जा रही हैं और सरकार उनको लेती चली जाती है और उन टैक्स-टाइल मिलों के अधिग्रहण के बाद उनके मालिकों की तन्दरुस्ती में कोई अन्तर नहीं आया है, उनके रहन-सहन में कोई अन्तर नहीं आया है।

आज क्या हो रहा है। आज जितने भी पब्लिक सेक्टर के कारखाने हैं, उनमें स्टील सबसे बड़ा है और उसमें एक करोड़ रुपये रोजाना का घाटा हो रहा है। इस तरह से क्या हिन्दुस्तान की एकोनामी को रिहैबीलिटेट किया जा सकता है। आवश्यकता थोड़ा-बहुत टिंकरिंग की नहीं है बल्कि बुनियादी परिवर्तन लाने की आज जरूरत है। पिछले चार साल में सरकार कर्मचारियों को 14 इस्टालमेंट डियरनैस एलाऊंस के दिए हैं और चार के करीब अभी देने हैं। इस तरह से दो हजार करोड़ रुपए इसमें चले

गये। इसके अलावा आप यह देखें कि करन्ट इयर में लगभग 2 हजार करोड़ रुपये का घाटा है और मौजूदा जो वजट है, उसमें भी करीब पौने दो करोड़ रुपये का घाटा है। जब ऐसी स्थिति है, तो किस तरीके से आप इन्फ्लेशन को दूर करेंगे।

आज गरीबी की रेखा से नीचे 35 करोड़ आदमी रहते हैं। उनकी क्रय शक्ति उनके हाथ के अन्दर आय किस तरीके से देंगे। हिन्दुस्तान की राजधानी दिल्ली में आप देखें कि गगनचुम्बी अट्टालिकाएं हैं और उनके आसपास ही झुग्गी झोपड़ियां हैं, जहां पर गन्दगी है, जहां पर बीमारी है। क्या इस से गांधी जी का जो सपना था वह पूरा हुआ है और उन गरीबों के आंसू पुछे हैं। क्या राजधानी को ऐसा नहीं बनाया जा सकता है कि यहां पर झुग्गी-झोंपड़ी न हों। यहां पर बड़े-बड़े लोग, शासनाध्यक्ष एक-एक एकड़ जमीन में बने हुए मकानों में रहते हैं।...(**व्यवधान**) आज इस दिल्ली के अन्दर एक-एक एकड़ सार्वजनिक जमीन पर कुछ इलाइट और सम्मानित लोग रहते हैं। श्रीमन्, 1957 में जब मैं ए० आई० सी० सी० का सदस्य था, तो उस वक्त मैंने एक प्रस्ताव रखा था कि छोटे मकानों में मिनिसटर्स को रहना चाहिए। मेरा प्रस्ताव केवल 8 बोटों से गिरा था और दूसरी तरफ दिल्ली में यह हालत है।

एक माननीय सदस्य : आप कभी छोटे मकान में रहे हैं।

श्री बनारसी दास : मैं आज भी किराए के मकान में रहता हूं। मैं अर्ज कर रहा था कि इन्फ्लेशन को कैसे दूर किया जाए। सबसे पहले हमारा ध्यान उन लोगों की तरफ जाना चाहिए, जो पावर्टी की लाइन से नीचे रहते हैं। आज 37 साल हो गए हैं और उनकी हालत क्या है। मै जानता हूं कि रोग एक दिन में नहीं बन सकता। पं० नेहरू ने तीन पंचवर्षीय योजनाओं के द्वारा हमारी एकोनामी को कए टेक-आफ स्टेज पर ला खड़ा किया था और उसके बाद आशा की जाती थी कि चौथी, पांचवी और छठी पंचवर्षीय योजना में तेजी के साथ प्रगति होगी। इधर हम देखते हैं कि इन्फ्लेशन 10-12 पर सेन्ट है और वह तो प्रकृति ने साथ दे दिया जिसकी वजह से शकल कुछ सुन्दर सी लगती है। अगर प्रकृति साथ न देती, तो यह शकल सामने नहीं आ सकती थी। आज आवश्यकता इस बात की है कि जो अनआर्गेनाइज्ड हैं, जिन के पास साधन नहीं हैं, उनकी ओर अधिक ध्यान दिया जाए। आज विषमता बढ़ती ही चली जाती है। महात्मा गांधी ने कहा था कि मेरी कल्पना का भारत वह होगा, जिसमें एक नाई, एक वकील और एडमिनिस्ट्रेटर के श्रम का एक ही मूल्य होगा, उस दिशा में हमने प्रगति की है या पीछे की तरफ चले जा रहे हैं। क्या हम इसके बारे में साहस के साथ कह सकते हैं। रूस में ब्रजनेव की डेथ हुई और आन्द्रोपोव की डेथ हुई, तो एक दिन की छुट्टी नहीं हुई लेकिन इस गरीब मुल्क के अन्दर इस पार्लियामेंट का लाखों रुपया छुट्टी के अन्दर खराब हो जाता है।

दुनिया में कोई ऐसा मुल्क नहीं जहां ऐसा हो। अंग्रेजों ने इस देश में एक प्रिविलेज्ड क्लास पैदा की। वह क्लास सरकारी एम्पलाईज की है जो कि एक साल में पांच महीने काम करते हैं। इसलिए इस देश परिस्थितियों को देखते हुए अगर छुट्टियों को सीमित कर दिया जाए तो गवर्नमेंट आफ इंडिया और स्टेट्स का 30 परसेंट खर्चा कम किया जा सकता है। हमारी पहली प्रायो-

[श्री बनारसी दास]

रिटीज वेरोजगार लोगों को काम देने की है, जो लोग गरीबी की रेखा से नीचे रहते हैं उनको उठाने की है।

श्रीमन्, किसी भी सरकार का सबसे पहला काम सुरक्षा प्रदान करना होता है। आज सुरक्षा की स्थिति क्या है? हिन्दुस्तान की राजधानी में चांदनी-चौक के अन्दर जौहरी लुट सकते हैं। पालम का हवाई अड्डा जहां कि प्रधान मंत्री विदेशी डिगनीटरीज का स्वागत करने के लिए जाती हैं, सुरक्षित नहीं है। यहां पर मिसिज खिलानी का कत्ल किया जा सकता है। यहां पर एक साल के अन्दर सौ वेंक्स लुट सकते हैं। क्या इस देश के अन्दर कोई शासन है? क्या उसने सुरक्षा के लिए कोई कदम उठाया है? मेरे मित्र आरिफ जहां से आते हैं, वे जानते कि बुलन्दशहर, शिकन्दराबाद और अनूपशहर जो कि कलेक्टर क हेडक्वार्टर्स हैं, मैं तीन-तीन घंटे तक डकैती हो सकती है। इससे सुरक्षा की कैसे व्यवस्था हो सकती है। अगर यह परिस्थिति रही तो रूल आफ जंगल होगा।

महात्मा गांधी ने 12 मार्च को दांडी मार्च किया था तो उन्होंने लार्ड इर्विन को एक पत्र लिखा था—

Arms Act should be Oepealed.

हर आदमी को हथियार रखने का अवसर दिया जाए। आज पिस्तौल और बन्दूक के लाइसेंस हासिल करने की भी डकैतों को जरूरत नहीं है। आज जम्मू और कश्मीर से बहुत सी बन्दूकों की नालियां तैयार हो रही हैं। डकैतों को वे मिल सकती हैं। लेकिन जो शांतिप्रिय नागरिक हैं उनको हथियार नहीं मिल सकते। आज आजाद भारत के अन्दर ऐसा लगता है कि लाइसेंस रूलिंग पार्टी की गिफ्ट है, एम० पीज० का कोटा बन गया है, एम० एल० एज० का कोटा बन गया है। एक बन्दूक का लाएसेंस हासिल करने के लिए एक नागरिक का कम से कम पांच हजार रुपया खर्च होता है। महात्मा गांधी ने यह मांग की थी कि जब आप निहत्थे आदमियों को सुरक्षा प्रदान नहीं कर सकते तो उन्हें अराजक तत्वों के सुपुर्द क्यों करना चाहते हो। आज आवश्यकता इस बात की है कि आर्म्स एक्ट को रिपील करना चाहिए। मैं समझता हूं कि इसके लिए सदन के सभी भागों की यह मांग होगी ताकि प्रत्येक नागरिक अपने साथ में हथियार ले जा सके।

श्रीमन् आज इकोनोमी को व्राईटन करने की बड़ी आवश्यकता है। किस तरह से लोगों को ज्यादा और बड़ी मात्रा में काम मिले, इसकी बड़ी आवश्यकता है। मैं अर्ज कर रहा था कि जब सरकार सिक मिल्स को लेती है तो उनके मालिकों के पास मजदूरों का इतना पैसा जमा हो जाता है कि वे आराम से अपनी जिन्दगी बिता सकते हैं। इस दिल्ली के अन्दर फाईव स्टार होटल तो बढ़ते चले जाते हैं जहां पर एक एक आदमी दो-दो हजार रुपया खर्च करता है। इंडस्ट्रियलिस्ट्स के बड़े-बड़े गेस्ट हाउसिज हैं जहां पर वे नोमिनल पे करते हैं।

श्रीमन्, इन्फलेशन का मुख्य कारण क्या है? रा मेटीरियल खरीदने के अन्दर, चाहे सरकारी इन्वेन्टरी हो या प्राइवेट इन्वेटरी हो, कम से कम 25 परसेंट किक वेक होता है। इसी तरह से फिनिश्ड गुड्स में 25 परसेंट किक वेक होता है। डी० आई० सी० कितने दिन सरकार के इंतजाम में है। लेकिन उनकोकुछ लोगों को राजनीतिक ईनाम देने के लिएचरागाह बना दिया गया है। उनमें एल० एम० पी० प्रोग्राम बना दिया गया है कि "लूटो मेरे भाई"। आज इकोनोमी को गियर अप करने की आवश्यकता है। मैं चाहता हूं कि इसके लिए एक हाई पावर्ड कमेटी बनाई

जाए। सिक मिल्स के मालिक हैं उनकी जांच की जाए। उनकी जो चैन आफ फेक्ट्रीज है। पचासों ऐसी फैक्ट्रियां हैं जिनका खून चूसने के बाद उस बच्चे को सरकार के सुपुर्द कर दिया गया है। नेशनल टेक्सटाइल कारपोरेशन और स्टेट टेक्सटाइल कारपोरेशन, ये सब मिलकर उसको ठीक नहीं कर सकते। जितनी शुगर मिल्स सरकार ने ली हैं, एक-एक शुगर मिल पर 10-10, 12-12 करोड़ रुपया कर्जा हो गया है। वित्त मंत्री श्री प्रणव मुखर्जी ने कहा था कि आज हमारे इंडस्ट्रियल हाउसेस पर करीब करीब 22 सौ करोड़ रुपए का बैंक लागू है। उसकी वसूली आप नहीं कर सके लेकिन किसान का ट्रैक्टर जरूर खींच लिया जाता है।

आई० आर० डी० पी० के अंतर्गत 30 परसेंट सबसिडी भी किसानों और हरिजन तक नहीं पहुंच पाती। रूरल ओरिएंटेड जाब प्रोग्राम में भी कोई लाभ वहां तक नही पहुंच पाता। वह पानी वहीं पर डेवलपमेंट दफतर के पास है। सूख जाता है। ये योजनाएं आकर्षक नहीं है। क्य कभी विचार किया गया है जहां 142 मिलियन टन अनाज पैदा हो रहा हो हिन्दुस्तान के अन्दर वहाँ एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटीज से, कालेजेज से कितने लोग खेती का काम करते हैं। एक समय आयेगा जब खेतों के लिए पढ़े लिखे लोग नहीं मिलेंगे। आज आवश्यकता इस बात की है कि खेती को एक आनरेबल पेशा बनाया जाए। वह तभी हो सकता है जब नियमों में आमूल परिवर्तन किया जाए। अंग्रेजों ने समर वेकेशन किया था। आज हिन्दुस्तान के लोगों को समर वेकेशन की जरूरत नहीं है। वेकेशन होना चाहिए हारवेस्टिंग के वक्त। उसके लिए यह नियम बनाया जाना चाहिए कि 35-40 साल की आयु के हर व्यक्ति को 15 दिन तक सड़कों पर, नालियों पर, खेतों में काम करना पड़ेगा। चाहे वह प्रधान मंत्री क्यों न हो। अन्यथा उसको डीफ्रेंचाइज कर दिया जायेगा। जब तक श्रम का मूल्य नहीं बढ़ेगा हम नरक्की नही कर सकते। आज यहाँ जो मैनुअल लेबर है उसको लोग नीचे की दृष्टि से देखते हैं। यह हिन्दुस्तान में नहीं होना चाहिए। यहाँ पर चौथे क्लास का एंप्लाई रहता है। अमरिका, इंग्लैण्ड आदि के अन्दर कहां पर चौथी क्लास का एंप्लाई नहीं है।

श्रीमन् आज देश की बिगड़ती हुई स्थिति का मुख्य कारण क्या है। सरकार पुलिस के बल पर नहीं चल सकती। सरकार मिल्ट्री के बल पर नही चल सकती। इसके लिए प्रेस्टीज की जरूरत नहीं है। इसके लिए एक नैतिक प्रभाव की जरूरत है। मैं दोषारोपण नही करना चाहता। एक वक्त था जब हम कांग्रेस में थे। उस वक्त सिराजुद्दीन की बही में लिखा था कि 10 हजार रुपया केशवदास मालवीय के जरिये एक सज्जन को दिया गया है। पण्डित नेहरु ने उसको अलग कर दिया। दास कमीशन की रिपोर्ट आई। उसके अन्दर टी० टी० कृष्णाचारी पर डायरेक्ट नहीं एक इंडायरेक्ट केश के अन्दर रिमार्क था। मौलाना आजाद ने कहा—जवाहरलाल जी टी० टी० कृष्णाचारी के रहते हुए मैं आपकी मिनिस्ट्री में नहीं रह सकता। फिरोज गाँधी ने भी इस प्रश्न को रखा। पंजाब के निर्माता स्वर्गीय कैरो, जिसते आज के इस पंजाब को बनाया, उसका कंट्रोल नहीं था अपनी पत्नी पर और लड़के पर। इसकी सजा उसे भुगतनी पड़ी। लेकिन आज क्या होता है। आज एक नहीं, दो नहीं बल्कि तीन-तीन चीफ मिनिस्टर्स को, जो यह सबसे बड़ी पार्टी है इसके, इसलिए

[**श्री बनारसी दास**]

नहीं कि इस पार्टी ने उनको निकाला या इसलिऐ नहीं कि, पार्टी के नेता ने उनको निकाला था, बल्कि आज एक चीफ मिनिस्टर सीमेंट का ब्लैक मार्केट करता है, इसलिए कोर्ट के निर्णय के बाद वह मुल्जिम बना हुआ है। दूसरा चीफ मिनिस्टर कोंआपरेटिव बैंक में गबन करता है। उस पर केश बनता है और वह केश हाऊस में आता है। एक मरतवा यहाँ के सुप्रीम कोर्ट के जजेज फैसला देते हैं और दूसरे दिन एक माननीय सुप्रीम कोर्ट के जज इस्तीफा देकर इस पार्टी के अन्दर पुरस्कार पाते हैं। फिर इस सुर्प्रीम कोर्ट ने इस देश को ज्यूडिसयर की मर्यादा को कायम रखा। जब फैसला किया कि जगन्ननाथ मिश्र मुल्जिम है, इसको कटघरे में खड़ा करना चाहिए। तीसरे चीफ मिनिस्टर के लड़के ने, उसके दमाद ने जंगल की लकड़ी काटी। क्या उसको हटाया गया ?

शिमल हाईकोर्ट ने कहा कि चीफ मिनिस्टर का इसमें कनाइवेंस है। भ्रष्टाचार दूर करने का तरीका यह है कि उसका आन्ध्र का गवर्नर बनाकर भेज दिया गया। यह इस देश के अन्दर मूल्यों का प्रतिष्ठापन करने का तरीका है। अक्सर प्रधान मन्त्री जी कहती हैं कि अपोजिशन कन्फ्रन्टेशन की राजनीति बरतता है। आज केन्द्र, में और देश के अधिकांश सूबों में आपका शासन है। विपक्ष का शासन कर्नाटक, वैस्ट बंगाल, काश्मीर और त्रिपुरा के अ-दर है। वहां आपका कैसा क्या व्यवहार है ? वहां पर आपकी नीति सहयोग की है या कन्फ्रन्टेशन की है ? बंगाल में कहते हैं कि कन्फ्रन्टेशन नहीं है, यह कंसीलिएशन है। जबकि काश्मीर के अन्दर आन्नोलन होता है, यह कन्फ्रन्टेशन की, नीति नहीं है। सी० पी० आई० ने जब दिल्ली में एक लाख आदमियों का प्रदर्शन किया था तो मुख्य मंत्री श्री कैरो ने पंडित जी से आकर कहा कि मैं अकेले पंजाब से पाँच लाख आदमियों का प्रदर्शन कराऊंगा पंठित जीं ने कहा किसके खिलाफ करोगे ? अभी शैड्यूल्ड कास्ट्स का प्रदर्शन हुआ, क्या यह वालेन्टरी था ? महात्मा गांधी की संस्था हरिजन सेवक संघ को भी एक अंग बना दिया गया। यह इस देश का दुर्भाग्य हैं कि महान पुरुष के जाने बाद लगता है, रोशनी चली जाती है। इतने दिन परिवार में रहने के बाद उसको छीनकर सुपुर्द किया गया। मैं यू० पी० में उसका अध्यक्ष था। उसकी ग्रांट बंद कर दी गई। जबकि उससे मेरा आज से 54 साल पहले अशपृश्यता निवारण के अन्दर तीन साल तक बहिष्कार हुआ। मैंने इस्तिफा दे दिया। आज उस एतिहासिक हरिजन सेवक संघ को निर्मला देशपांडे ने अपनी एक समकीरण नाजनीति का अंग बना रखा है। वहां पर वे अपनी मुसीबतों का निवारण करना चाहती है। आपका जो यह राष्ट्रपति का एड्रेस है, इस पर जरा गौर कीजिए। मेरे लायक दोस्त ने अभी कहा कि इसमें निर्दोषण है। जितना सहयोग हमें देना चाहिए उसमें विरोधी पक्ष को आप पीछे नहीं पायेंगे। 1965 और 1971 का युद्ध हुआ। उस वक्त श्री अटल बिहारी वाजपेयी और श्री मधु दंडवते एक साथ थे। जहाँ तक इस देश की एकता और अखण्डता का सवाल है, वह वैसे ही है जैसे पाण्डव और कौरव सौ और पांच थे। जहां तक दूसरों का सवाल था, वे 105 थे। देश भक्ति इन बेंचेज की मोनोपोली नहीं है। देश भक्ति हम भी जानते हैं। कितने ऐसे व्यक्ति हैं जिनके बाल आजादी की लड़ाई में सफेद हुए हैं। मैंने एक दफा नहीं बल्कि चार-पाँच दफा गांधी जी और पण्डित नेहरु के नेतृत्व में लाठियाँ और गोलियां सहय की हैं। कुछ

लोगों का कामन इन्टरेस्ट यह नहीं कि देश को आगे बढ़ाना है, वे अपने दिल से यह प्रश्न करें कि हमने इस राष्ट्र को कितना दिया है ? क्या हमारा राष्ट्र आगे बढ़ रहा है या हम उसको पीछे की ओर ले जा रहे हैं। क्या काम हर नौजवान का फण्डामेंटल राइट नहीं बन सकता ? क्या दो सौ करोड़ आदमियों को डेढ़ सौ रुपए मासिक देकर पाँच हजार करोड़ से उनकी परचेजिंग पावर नहीं बनाई जा सकती है ? यहाँ पर एशियन गेम्स और कामनवैल्थ काँफ्रैंस हो सकती हैं।

हम भी इस बात की दाद देते हैं कि वाह वाही हुई है। लेकिन बाहर वाली का सर्टिफिकेट बेमानी हैं जब तक कि आन्तरिक शक्ति न हो। हिन्दी चीनी भाई-भाई का बहुत नारा दिया गया था, पंचशील की बहुत बातें की जाती थीं। लेकिन हमारी कमी थी मिलिटरी बिल्ड अप की और उसकी वजह से पंडित नेहरु की जिन्दगी का एक कीमती हिस्सा कम हो गया और हिन्दुस्तान को एक अपमान की घड़ी देखनी पड़ी। यह एक कर्टसी है, परम्परा है जिसकी वजह से बाहर वाले इस तरह की बातें कर देते हैं। आज मिसिज गाँधी कामनवैल्थ देशों की, एशियन देशों की, नान एलाइंड देशों की एक नेता है यह ठीक है लेकिन जब हमारे देश के अन्दर भूख और प्यास, अफलास और बेरोजगारी हो तो क्या उनकी तरफ हमारा सबसे पहले ध्यान नहीं जाना चाहिए ये चीजें इन्तजार नहीं कर सकती हैं।

मैं आपको एक घटना बताना चाहता हूं। कानपुर में एक कत्ल हुआ। मेरे एक साथी एम० एल० ए० गए। वहां एक लड़के से पूछा कि तुम कभी डकैती करते हो ? उसने कहा कि आपका पेशा क्या है ? यह कार आपके पास कहाँ से आई है ? आज का नौजवान प्रश्न करता है कि ये फाइव स्टार होटलों में जो दो-दो हजार रुपए खर्च करते हैं क्या वे हिन्दुस्तान के सिटिजन हैं और क्या नैतिक दृष्टि से वे क्रिमिनल लोग नहीं हैं ? श्री घनश्याम दास बिड़ला ने अपनी आटोबायोग्राफी में लिखा है कि मैंने महात्मा जी से पूछा नैतिक रूप से तीस रुपए में से हमें कितना खर्च करना चाहिए उन्होंने जबाव दिया पंद्रह रुपए। जब उन्होंने कहा कि पंद्रह में तो काम नहीं चल सकता है तो बापू ने कहा तीस रुपए। बिड़ला कहते हैं कि मैंने कहा कि तीस में कैसे काम चलेगा तो यह बिड़ला के लफ्ज हैं कि बापू ने कहा कि तब तो डकैत हो। घनश्यामदास कहते हैं कि उन्होंने कहा तब बापू, सब मारवाड़ी और गुजराती डकैत हैं जिस पर गांधी जी ने कहा कि इसमें क्या कोई शक है। आज कानून इस तरह के हैं कि नौजवानों का न्याशीलता के ऊपर से यकीन डिग चुका है, वे मानने के लिए तैयार नहीं हैं.....(व्यवधान)

I have the courage of conviction. I have been living in a rented houss on a monthly rent of Rs. 112. In 1969 I had the courage to act according to my own convictions. Many of my friends became turncoats and changed the sides, but I did not. Many people fall prey to the corrupting influence. We may be in a minority, but we work with belief, we have faith in truth.

MR. DEPUTT-SPEAKER ; Truth always triumphs.

SHRI BANARSIDAS : We cannot compromise with injustice, whasever may happen.

हिस्ट्री सब चीजों को रिकार्ड करती है। हमें प्रसन्नता नहीं है कि हम बजट का विरोध करें। लेकिन आज पंजाब के इशू को आप लें। इस पर बहुत चर्चा हुई

[श्री बनारसी दास]

है। इसका सिम्पल सा साल्यूशन था। प्रधान मंत्री विरोधी दलों को कान्फिडेंस में लेती। चंडीगढ़ पंजाब को दे देतीं। पानी का विवाद सुप्रीम कोर्ट को सौंप देती। फाजिलका अबोहर के बारे में प्लेबिसिट करा देती। दरबारा सिंह मेरे बहुत अच्छे दोस्त हैं। हम साथी रहे हैं। मिनिस्टर्ज कान्फ्रेंसों में अक्सर हमने साथ साथ काम किया है। आज अगर पंजाब में कोई व्यक्ति है जिसकी देश भक्ति और राष्ट्र भक्ति पर सन्देह नहीं किया जा सकता है तो वह दरबारा सिंह जी हैं। उनको काम करने का अवसर नहीं दिया गया। उसको हटा दिया गया। जबसे वहां राष्ट्रपति शासन हुआ है लोगों की जानों से होली खेली जा रही हैं। मैं चाहता हूं कि विरोधी पक्षों को कान्फिडेंस में लेकर एक नीति तय की जाए कि क्या मस्जिदों, मंदिरों, गिरजाघरों, गुरुद्वारों के अन्दर पुलिस जाएगी? दो तरह के कानून बनाना ठीक है। मैं मानता हूं कि अकालियों ने गुरुद्वारों का मिसयूज किया है। सिख पंजाब में 52 परसैंट हैं। निरंकारी भी हैं दूसरे भी हैं। हिन्दू अलग हो गए हैं। आपको रिच डिविडेंट इस नीति का जम्मू काश्मीर में प्राप्त हुआ है। यह नीति रही है माइनारिटीज के प्रोटेक्शन का नारा देना। तो पंजाब को कब तक जलने दिया जायगा, कब तक बेगुनाह लोगों के खून होंगे? क्या कोई आदमी उन बेंचेज पर चुपचाप शांति से बैठ सकता है, दिल्ली में हम आराम से बैठ सकते हैं? गुरु नानक, जिसकी अहिंसावृत्ति ने बाबर की क्रूरता का रूपान्तर कर दिया था, सुल्तानपुर से फौज हट गई थी, आज उसी गुरु नानक के नाम पर बेगुनाह लोगों का खून किया जा रहा है। मैं नेता सदन से प्रार्थना करता हूं कि एक सर्वसम्मत फैसला हो कि अकाली दल अपना आन्दोलन वापस ले। अकालियों ने हिंसा को कंडेम किया है, लेकिन चोरा-चोरी में एक थाना जल गया था तो उस पर महात्मा गांधी ने आन्दोलन वापस ले लिया था। आज जो पंजाब में हो रहा है, युवक उग्रवादी गुमराह हो रहे हैं, तो उसकी नैतिक जिम्मेदारी अकाली दल पर भी है। एक वक्त था जब मौडरेट अकाली प्रकाश सिंह बादल को नीचा दिखाने के लिये उग्रवादियों को प्रोत्साहन दिया गया था, आज वही बूमरेंग हो गया। वही बाण वापस नहीं आ सकता। वह खुद शासन के लिये एक बवाले जान हो गया।

शुरू के अन्दर पानी का विवाद, चंडीगढ़, अबोहर और फाजिल्का को लिया जाता, मुझे आश्चर्य होता है एक राउन्ड टेबिल करके सरकार यूनीलैटरिली कोई फैसला नहीं कर सकती? असम को सेफ कांस्टीट्यूएंसी बनाने के लिये, वहां की संस्कृति, भाषा, कला को अल्पसंख्या में तब्दील किया जा सकता है, ट्इब्यूनल्स जो बनाये गये हैं वह एक फार्स है। क्या सूओ मोटो फोरेनर्स का डिटेक्शन नहीं हो सकता। वहां पर जनता आकर दर्खास्त देगी कि फौरेनर कौन हैं। क्या इससे आप उनका दिल जीत सकते हैं? यह ठीक है लोगों के खून से होली खेलकर एक सरकार बन गई। वहां इस समय पीस आफ दी ग्रेव है। 1942 में कुछ समय के बाद मुल्क में शांति लगती थी, लेकिन जवाहर लाल जी ने कहा था कि यह शांति नहीं है तूफान है, लिल बीफोर दी टैम्पेस्ट है। इसलिये असम की जनता के दिलों को जीतने की जरूरत है। रूलिंग पार्टी

कन्फ्रन्टेशन की नीति छोड़ें । कर्नाटक सरकार को गिराने का प्रयास, जम्मू कश्मीर सरकार को उसी दिन से टौपल करने का प्रयास किया जा रहा है । वेस्ट बंगाल मुख्यमंत्री पर पत्थर फेंके जायेंगे । क्या यह आदर्श है जो रूलिंग पार्टी जनता के सामने पेश करना चाहती हैं ? मैं दुख के साथ कहना चाहता हूं कि व्यक्तियों से, दलों से राज्य ऊपर है । व्यक्ति चले जायेंगे, राजनीतिक पार्टियां चली जायेंगी, बहुत सी राजनीतिक पार्टियां अतीत के गर्भ में लीन हो गई, उनका कहीं पता नहीं है । आज इस बात की आवश्यकता है कि क्षणिक राजनीतिक स्वार्थ प्राप्त करने की जो नीति है, उसको छोड़कर सही माने में, जैसा यू० एन० ओ० में प्रधान मंत्री ने कहा : "The power and might of the Government should be used with restraint; should be used with compassion. Power should be tempered with compassion; justice with restraint." यह शब्द जितने अधिक प्रधान मंत्री के कमरे में लिखने के लायक हैं उसमें ज्यादा किसी के लिये नहीं हैं । इसलिये प्रधान मंत्री यू० एन० ओ० के भाषण को अपने सामने रखें ।

SHRI CHINTAMANI PANIGRAHI (Bhubaneshwar) : I rise to support the Motion of Thanks moved to the President's Address.

In 1954, Shri Aurobindo in one of his famous discourses, had said, "As individuals have their souls so also the nation." Today, in Punjab, in Jammu and Kashmir the heart of India, in bleeding and India's sole is in agony.

As, a nation, we are dedicated to uphold our freedom, integrity, democracy and secular character. All these basic national values are under attack every day in Jammu & Kashmir, in Punjab, in Haryana and in the North Eastern parts of our country.

If we simply call this as madness, then we will be little the underlying grave importance of these happenings. There is a calculated move and a design in this method of madness to destroy our basic values for which many became *Sahids*. The design is that India should not rise to further heights on its own.

The success of Asiad, the successful Non-Aligned Summit meeting and the election of our Prime Minister as its Chair-person, the Commonwealth Heads of meetings and all such efforts to strengthen third world countries and forces of peace by our Prime Minister have irked the core powers in the international arena. I do not want to name who are the core powers.

The design for 2000 AD is to build up a kind of new international system which they call 'Sino-Japan Co-prosperity Sphere in this part of the world. In such a scheme of things, India's ascendency does not fit in.

Therefore, the subversive agents who are called as the 'Army of the Night' are at work day and night to destabilise India from one end to another. If you study the sequence of events you will find that this destabilising action has been accelerated after the Non-Aligned Summit meeting and has culminated in the vandalism of burning of our Constitution. Therefore, this is the basic problem which we shall have to meet collectively. This challenge to our freedom, integrity, secularism, democracy and socialism has to be nipped in the bud both politically and administratively. The Army of the Night has been let loose. Killing of innocent people and personalities like Mhatre, Lala Jagat Narain and others are part of this grand design to destabilise and weaken our country.

Here I would just like to refer to our interested neighbour who has started arming itself with all the deadly weapons.

If all the recent publications are studied, and if one analysis the

strategic studies countries, for the last four to five years, it appears that there is every possibility that we are being dragged to a war in 1985. Most of the publications deal with this. This interested neighbour who has attacked India three times is going to attack a fourth time, committing aggression on India, with all its deadly weapons. All the forecasts say that there will be a thirteen-day conflict with India which will be deadly. This will be the last conflict. This is what the militarists are saying. So, anybody who has read the history of any military dictatorship will find that the dictators want to divert the wrath of their people by unleashing attack on neighbouring countries. In that process, they get liquidated.

Therefore, when we are thinking of another seven to eight months, in 1985, when such a conflict is before us I think the time has come when we have to think among ourselves whether we shall devote more of our time and attention to safegaard the security to safeguard the basic values of our country or we shall have to fritter away our energy on minor things.

Here I may refer to the reply of Sai Baba to a group of foreign journalists. A group of foreign journalists once asked Sai Baba whether India will survive through all these turmoils. Sai Baba, though he is not a politician, with his spiritual wisdom, with ease, he said, that as long as there are Himalayas, and as long as snow falls over the Himalayas and as long as the snow melts and the melting snow flows into the sacred Ganges and as long as the Ganges is not dried up, India will survive. Therefore its culture and religion is called *Sanatan*, that is eternal, ever flowing. Therefore, I say that the attempts to destroy the values, culture and our thousand year civilization will fail and nobody will be able to destroy our traditions, this six thousand years of culture and civilization of our country. So, all attempts to de-stabilise and destroy the immortal soul of India should be thwarted because they are bound to fail. In its thousands of years of history it has withstood many onslaughts, wanton onslaughts on our soil. Even now we can admire the wonderful forbearance of our vast masses in the face of all kinds of provocations by the 'Army of the Nights'. That is the magnanimity of the vast masses of India. But before the conflict starts this should be destroyed. This attempt should be nipped in the bud. This should be the task before us. These forces of disintegration and subversion should be totally liquidated. Whatever may be the cost, this should be our major task. All the subversive agents should be destroyed. This is the first task before us. Then, should not all the progressive, democratic secular and socialist minded forces unite at this juncture ? These are the major issues before the Nation. Therefore, the only and one task before the political parties today is to awaken the conscience of the nation to this reality But they are wasting their time and energy in extraneous and peripheral matters. They are making themselves irrelevant to the needs and aspirations of the nation. Let them be relevant to the time. Therefore, today if the opposition parties do not find any response among the masses, it is because it is only the Congress which is relevant. Congress meets the very needs and aspirations of the people. Congress wants that India as a whole survives. Therefore, people admire Congress ; people admire our Party and the Prime Minister.

Here again another story relating to understanding of things come to my mind. There was a very rich man. He incited all the learned people of the land and put before them some questions and told them whosoever made him understand these questions he would give a part of his land away and he fixed a day for that. The learned people went away. The wife of the rich man, who was listening to what her husband was offering, asked him if any one of these learned person by chance made you understand, then

what would happen to us because you would give away the land. The rich man laughed and said that he would go on listening to them. After explaining they would ask him whether I had understood and then I would simply say no and there it would end. They could put facts, they could explain, but how could they make me understand when I had decided not to understand at all. Likewise, the whole opposition is in predicament. I remember the famous speech of Shri Krishnamenon. He once said : Well, Government can supply you facts, but how can it supply you understanding.

The other day one of our opposition members was saying that the President's Address is hiding facts about inflation. The facts are so clear. I have got the figures of rate of inflation right from 1970-71. They are like this :

1970-71 was a marvellous year. At that time the rate of inflation was in minus.

1971-72	8.2
1972-73	12.2
1973-74	10.0
1974-75	9.4
1975-76	6.5
1976-77	12.0
1979-80	21.5
1080-81	16.7
1981-82	2.4
1982-83	6.2.

This was one of the most affected drought year.

In 1983-84 rate of inflation has gone upto 8.2 despite the excellant crop. The Finance Minister has admitted this. And this is a matter of concern. So, where is the question of hiding the facts ?

I fully support this Motion of Thanks to the President's Address because there is remarkable recovery in the economy, there is remarkable achievement in the agricultural sector. Even we have not drawn fully the IMF loan. This is one of the biggest achievements that we have made. Our foreign exchange reserves have increased and our exports have increased. For all these achievements we can explain to them and if we are not able to make them understand, then we can only supply facts and the people of India will understand them. The opposition will become irrelevant. They will not understand what progress we have achieved.

MR. DEPUTY SPEAKER : Hon. Members should not take more than ten minutes. The Prime Minister has got to reply at 4.00 p.m.

प्रो० निर्मला कुमारी शक्तावत (चित्तौड़गढ़) : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय राष्ट्रपति जी ने जो अभिभाषण दोनों सदनों के सम्मुख दिया है, उसका समर्थन करने के लिए मैं खड़ी हुई हूं। मैं यह भी कहना चाहती हूं, विरोधी पक्ष चाहे कुछ भी कहे, परन्तु पिछले चार वर्षों में तनावपूर्ण और संघर्ष-मय परिस्थितियां होते हुए भी हमने बहुत प्रगति की है। उस प्रगति को नकारा नहीं जा सकता है। हमारे वैज्ञानिकों और टैकनिशियन्स ने बहुत तरक्की की है, जो कि हमारे देश के नक्शे में स्पष्ट दिखाई देती है। रोहिणी और इनसैट-एक ए और एक-बी छोड़कर हमने अंतरिक्ष जगत में भी प्रवेश कर लिया है। इसके अलावा बम्बई हाई और जैसलमेर में जो नैचुरल गैस और आयल के लिए जो खोज की है, उसको भी नकारा नहीं जा सकता है। हमने एंटार्टिका का तीसरा दल भेजकर एक रिमार्केबिल सफलता प्राप्त की है। इसमें खास बात यह है कि पुरुष तो जाते ही हैं, अब की बार दो महिलाओं को भी भेजा गया है। इसके

लिए मैं आपके द्वारा वैज्ञानिकों को धन्यवाद देना चाहूंगी।

इसके साथ-साथ सारे देश में जो प्रधानमंत्री जी के आर्थिक कार्यक्रम चल रहे हैं, यदि उन पर दृष्टिपात करें तो गांव-गांव में हमें विकास के चिन्ह दिखाई देने लगेंगे। बीस सूत्री कार्यक्रम के तहत गांव-गांव में विकास हुआ है। एन० आइ० पो० और आइ० आर० इ० पी० कार्यक्रमों द्वारा लाखों लोगों की जिन्दगी को बदल दिया है। इन सबकी ओर देखते हुए यदि विरोधी पक्ष नकारात्मक दृष्टिकोण रखता है, तो वह कोई बुद्धिमत्ता का द्योतक नहीं है।

14.26 hrs.

(SHRI CHINTAMANI PANIGRAHI *in the Chair*)

पिछले 15 अगस्त को हमारी प्रधान मंत्री जी द्वारा बेरोजगार नौजवानों के लिए कार्यक्रम की घोषणा की है। जो पथ भ्रष्ट युवक थे, जिनको कोई रास्ता नहीं मिल रहा था, उनको एक बहुत ही महत्वपूर्ण पथ-प्रदर्शक मिला है। इस बात का भी मैं घोर विरोध करते हुए, जैसा कि श्री बनारसी दास जी ने कहा है कि यहां एशियाड और गुटनिरपेक्ष सम्मेलनों में जो सर्टिफिकेट प्राप्त किया है, उसको देश ने कभी पसंद नहीं किया है, यह उनकी भूल है। उन्हें यह मालूम नहीं है कि आज देश की जनता ने इस बात के लिए गांव में बैठे हुए लोगों ने प्रसन्नता जाहिर की है। अन्तर्राष्ट्रीय जगत में चोगम की सफलता इस बात की द्योतक है कि हमारी नेता श्रीमती इन्दिरा गांधी ने एक बहुत ही महत्वपूर्ण भावना को व्यक्त किया है।

हम नियोजित विकास और पंच-वर्षीय योजनाओं के माध्यम से आत्म-निर्भरता की ओर बढ़े हैं। लेकिन विरोधी पक्ष इस बात का ढिंढोरा पीटता है कि हमने विदेशी कर्ज लेकर इस देश को कर्जदार बना दिया है। वे यह नहीं समझते हैं कि व्यक्तिगत कर्ज और एक राष्ट्र के द्वारा लिए गए कर्ज में बड़ा अन्तर होता है। मैं बताना चाहती हूं कई ऐसे देश भी हैं, जैसे मैक्सिको, पोलैंड और ब्राजील, जिनकी 40 से 50 प्रतिशत राष्ट्रीय विदेशी कर्ज की होती है। हमारी सरकार ने विदेशी कर्ज में कमी की है। अभी छठी पंचपर्षीय योजना में हमने 5.7 प्रतिशत कर्ज लिया है और अभी आई० एफ०एफ० द्वारा जोलोन लेना था, वह भी हमने नहीं लिया। इसलिये ये सारी बातें इस बात को सिद्ध करती हैं कि देश आगे बढ़ रहा है। आज पूरी दुनिया में आर्थिक मंदी है, परन्तु हमारे देश की प्रति व्यक्ति आय बढ़ी है। यह बात मैं नहीं कह रही हूं, हमारी पार्टी के लोग नहीं कह रहे हैं, यह वर्ल्ड बैंक के अध्यक्ष क्लासिन द्वारा कही गई है।

"चोगम" के समय महाराणी एलिजाबेथ यहां पधारी थीं, उन्होंने भी इस बात के लिये देश की सराहना की कि 23 वर्ष पहले वे यहां आई थीं और आज जब यहां आई हैं तो देश में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन दिखाई देता है। इसके अलावा परमाणु साधनों में हमने आत्मनिर्भरता प्राप्त की है। मद्रास के पास कल्पकम में हमने जो परमाणु रिएक्टर बनाया है, वह पूरी तरह से स्वदेशी है। इसको देख कर कई विदेशी शक्तियों में बौखलाहट पैदा हो गई है। इसमें और ज्यादा तरक्की करने जा रहे हैं, फास्ट-ब्रीडर-रीएक्टर,

भारी पानी के संयत्र देश में ही बने हुए लगायेंगे। इस तरह से देखा जाय तो हमारा देश वैज्ञानिकों और टैकनीशियनों की दृष्टि से दुनिया में तीसरा स्थान रखता है। औद्योगिक दृष्टि से हमारे देश का स्थान दुनिया में दसवां है, मुझे दुख है फिर भी विरोधी दलों के लोगों को यह दिखलाई नहीं देता है कि देश तरक्की कर रहा है। इसको समझाने के लिये मुझे यही कहना पड़ेगा—कुछ ही दिनों में हमारा यह अनडवेजप्ड देश डवेलप्ड देशों की श्रेणी में आने वाला है—तब आपके लिये यह एक चौंकाने वाली बात होगी।

सभापति महोदय, इतना सब कुछ होने के बावजूद हमारे देश में कुछ आन्तरिक शक्तियां और कुछ बाहरी शक्तियां एक अशान्ति का वातावरण पैदा करने के लिये खुली हुई हैं। अकाली आन्दोलन के बारे में यहां बहुत कुछ जिक्र हो चुका है। मैं तो इसके बारे में यही कहूंगी कि यह पागलपन की एक चरम सीमा है, एक ऐसी चरम-सीमा है जिसने एक अजीब-सा मोड़ लिया है। वे लोग संविधान को जलाने की बात करते हैं, कभी पंजाब बंद, सड़क बन्द, रास्ता बन्द करना चाहते हैं। समझ में नहीं आता कि ये लोग देश का क्या बनाना चाहते हैं। जब सरकार ने उनकी धार्मिक मांगों को मान लिया है, तो वे यह समझ बैठे हैं कि एक के बाद एक मांग करते जाओ और यह सरकार मानती चली जाएगी। उन्होंने एक बार यह मांग की कि राजस्थान का गंगानगर उनको दे दिया जाय। हमारे लोंगोवाल भी बार-बार यह कहते हैं कि भाषा के आधार पर प्रान्त बना दिये जाय। इस तरह से देश चलने वाला नहीं है। मुझे उस समय बड़ी शर्म आती है और दुख भी होता है जब इस किस्म की घटनाओं का जिक्र यहां पर होता है। पंजाब में जो कुछ हो रहा है उसको देख कर किसी भी समझदार आदमी का सिर शर्म से झुक जाता है। इसलिये मैं सरकार से विनम्र शब्दों में निवेदन करना चाहूंगी कि अब वह इन बातों की अनदेखी न करे। यह निर्विवाद सत्य है कि इन सब ताकतों के पीछे विदेशी शक्तियां हैं। हमें इन तमाम बातों पर गंभीरता से विचार करना चाहिये।

हमारे काबुली साहब ने अभी बहुत कुछ कहा—खास तौर पर फारूख अब्दुल्ला साहब के बारे में उन्होंने बहुत वकालत की। मैं इस सम्बन्ध में यही कहना चाहूंगी—राष्ट्रविरोधी गतिविधियों को, जिनको वे संरक्षण दे रहे हैं, बन्द किया जाना चाहिये। राष्ट्र विरोधी गतिविधियों से यह देश चलने वाला नहीं है। यह बात हम नहीं कह रहे हैं। देखने में यह आता है—जब जब भी हमारे पड़ौसी राष्ट्र के अन्दर कुछ आन्तरिक कलह होता है, वे अपने सारे शस्त्रों का घुमाव हमारे देश की तरफ कर देते हैं। इतिहास इस बात का प्रमाण है—यह राष्ट्र तीन दफा पाकिस्तानी हमलों का मुकाबला कर चुका है और आज भी हमारे देश की सीमाओं पर युद्ध के बादल मंडला रहे हैं। आज कुछ ऐसी विदेशी ताकतें हैं जो अपनी भूमि पर युद्ध कराना चाहती हैं। तरह-तरह के आधुनिक हथियार दूसरे देशों को देने की कोशिश में रहती हैं। आज अमरीका के द्वारा पाकिस्तान को आधुनिकतम हथियार दिये जा रहे हैं। यह इस बात की याद दिलाते हैं—जिस प्रकार ईजराइल को सहायता देकर लेबनान की धरती पर युद्ध कराया गया था।

इस बात के लिए हमें सचेत रहना चाहिए, इस बात के लिए सोचना चाहिए कि कहीं इस प्रकार का षडयंत्र हमारे साथ तो नहीं हो रहा है। मैं प्रतिपक्ष से यह कहना चाहूंगी कि राष्ट्रीय मामलों में हमें कोई नकारात्मक दृष्टिकोण नहीं रखना चाहिए बल्कि सुझावात्मक दृष्टिकोण रखना चाहिए। यह पंजाब में जो चिंगारी निकली है, वह देवानल का रूप धारण न करले, इसको हमें देखना चाहिए और विरोधी पक्ष को इसमें हाथ सेकने की वनिस्पत इसे बुझाने का प्रयत्न करना चाहिए।

देश ने जो कुछ भी तरक्की की है, उस सबको अगर हम आंकें, तो बहुत सारी दिखाई देती है और बहुत दिखाई नहीं देती है और इसका कारण यह है कि जिस रफ्तार से तरक्की हो रही है, उसी रफ्तार से कई गुना हमारी जनसंख्या बढ़ रही है। हमारा देश जो है, वह दुनिया की जमीन का 2.4 प्रतिशत क्षेत्र रखता है परन्तु आजादी का हिसाब लगाया जाए, तो दुनिया की 14 प्रतिशत आबादी हमारे देश में रहती है।

MR. CHAIRMAN : Please conclude now. You have taken eleven minutes.

PROF. NIRMALA KUMARI SHAKTAWAT : I will take five minutes more.

MR. CHAIRMAN : The Prime Minister is replying at 4 O' Clock. Twenty speakers from your party are there. What to do ? Already you have taken two minutes more.

प्रो० निर्मला कुमारी शक्तावत : मैं समाप्त कर रही हूं। जो कुछ भी राष्ट्रीय कार्यक्रम हमने पहले शुरू किये थे, उनको इन लोगों ने खत्म कर दिया और उनकी धज्जियां उड़ा दी। ऐसी स्थिति में देश आगे कैसे बढ़ेगा। हमें यह देखना चाहिए कि देश आगे कैसे बढ़े। इसके लिए हमें उद्योगों का बिकास जो है, वह करना होगा और विकेन्द्रित उद्योग देश में स्थापित किये जाने चाहिए। हमारे देश में रत्नगर्भा जमीन है और खनिज पदार्थों की कमी नहीं है। मैंने इस बारे में कई बार कहा है कि हमारे राजस्थान में चित्तौड़गढ़ में एक सुपर जिंक स्मेल्टर प्लान्ट लगाया जाए। मैं निवेदन करूंगी कि छठी पंचवर्षीय योजना के अन्तिम साल में यदि वहां पर सुपर जिंक स्मेल्टर प्लान्ट लगा दिया जाएगा तो इससे वहां के विकास का रास्ता खुल जाएगा।

MR. CHAIRMAN : Kindly conclude now. You have already taken fifteen minutes.

प्रो० निर्मला कुमारी शक्तावत : राजस्थान की स्थिति के बारे में मैं यह निवेदन करना चाहूंगी कि वहां पर पावर की बड़ी शार्टेज है। वहां पर जो कारखाने हैं, उनमें बहुत सी जगहों पर 100 प्रतिशत पावर की कटौती चल रही है। इसके अलावा पावर की कमी के कारण किसानों को भी बहुत अधिक नुकसान उठाना पड़ रहा है। इसलिए पावर जेनरेशन के काम को हमें बढ़ाना चाहिए। हमारा उद्देश्य यह है कि इस शताब्दी के अन्त तक हम 10 हजार मेगावाट बिजली पैदा करेंगे और इस छठी योजना में 2 हजार मेगवाट बिजली तैयार करने की योजना है। मेरा निवेदन है कि राजस्थान में कोटा के पास जो एटामिक इनर्जी प्लान्ट लगा हुआ है, उसके बारे में मैं यह सुझाव देना चाहूंगी

कि उसका सारे का सारा ढांचा तैयार है, तो हम वहां पर 222 मेगावाट के 2 रीएक्टर लगाने की बात सोचें। इससे न केवल वहां की समस्या हल होगी, बल्कि देश की समस्या भी हल होगी।

एक और निवेदन करना चाहूंगी। क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान दूसरा सबसे बड़ा प्रान्त है। राजस्थान की योजना के लिए वहां की सरकार ने वर्ष 1984-85 के लिए 800 करोड़ रुपये की मांग की थी परन्तु योजना आयोग ने केवल 401 करोड़ रुपये ही दिये हैं। राजस्थान एक ऐसा प्रान्त है, जहां पर पिछले तीन वर्ष से अकाल पड़ा हुआ है। ऐसी स्थिति में मैं यह कहना चाहूंगी कि इस राशि को अवश्य बढ़ाया जाना चाहिए नहीं तो यह जो पिछड़ा हुआ प्रान्त है, यह कभी तरक्की नहीं कर सकेगा। प्रति व्यक्ति लाभ जितना दूसरे प्रान्तों को दे रहे हैं उतना ही राजस्थान को देना चाहिए और यह जो राशि मंजूर की गई है, इसको और बढ़ाना चाहिए। दूसरे प्रांतों को आप ज्यादा दे रहे हैं। राजस्थान को प्रति-व्यक्ति खर्च के लिए बहुत कम दे रहे हैं। मैं आपको आंकड़े देकर बताना चाहती हूं। हरियाणा में प्रति व्यक्ति 1385 रुपये, पंजाब में प्रति व्यक्ति 1179 रुपये, गुजरात में प्रति व्यक्ति 1073 और राजस्थान में प्रति व्यक्ति 517 रुपये खर्च करने को मिल रहा है। इसलिए राजस्थान को बहुत कम मिल रहा है।

श्रीमन् आज सारे संसार में शीत युद्ध के बादल मंडरा रहे हैं जिसको हम सभी लोग महसूस करते हैं। आज इस स्थिति में जनता को यह मालूम है कि हमारे देश की जो नेता हैं, श्रीमती इन्दिरा गांधी, उनका व्यक्तित्व इस घड़ी में देश को नया मार्ग दिखायेगा। वह एक ऐसा व्यक्तित्व है जिसकी छत्रछाया में हम सभी परेशानियों से उभर सकेंगे। इसलिए आज उन पर सारे देश की आशाएं केन्द्रित हैं।

यही बात कहकर मैं राष्ट्रपति महोदय को उनके अभिभाषण के लिए जो उन्होंने दोनों सदनों के सम्मुख प्रस्तुत किया है धन्यवाद देती हूं और सभापति महोदय आपको भी धन्यवाद देती हूं कि आपने मुझे दो मिनट अधिक दिये।

SHRI INDRAJIT GUPTA (Basirhat) : Mr. Chairman, the President's Address by tradition and necessity, I suppose, covers a very wide field. Nevertheless, I think that is not a justification for the entirely superficial and cavalier treatment which this Address has given to the situation in Punjab. I know we have had a lengthy debate on this question during the discussion on the adjournment motion which was admitted. Nevertheless, in the limited time at my disposal; I am constrained to once again refer to this subject. The main reason for that is, I did not participate in that debate, but I was waiting merely along with, I suppose, several millions of our countrymen for some sort of lead to be given to the country by the Government, by the Prime Minister, on this matter. A debate can take place in which allegations and counter-allegations take place, in which excuses are given for all sorts of things and so on. But at the end of it all, in this very disturbing and very appealing situation that we are facing, one expects the Ruling Party and the Prime Minister to give some indication of what is to be done now. They are rather completely bankrupt, they have nothing to offer to the country. I am afraid, I was very much disappointed that nothing was stated

here as to what the Government proposed to do now. They may not succeed, they may fail ; that is a different matter, But no kind of indication whatsoever was given.

In the President's Address, out of 30 paragraphs there is one paragraph referring to the Punjab consisting of five sentences and there are two sentences about what happened in Haryana. That is all, I think that is a masterpiece of complacency and also, I should say, of callousness. I kept feeling that we are now approaching within a few days two very historic anniversaries which are connected with the blood of our people, with the Punjab. One is the 21st of March this month, the day on which shaheed Bhagat Singh was executed. Another is in the next month, the anniversary of Jalianwallabag massacre. We have talked a lot about the great traditions of our country, our Independence movement and all that, of which we are all very proud. We cannot forget Sardar Bhagat Singh, whose picture hangs now probably more than anybody else's picture, in so many houses in this country and we cannot forget Jalianwallabagh where the blood of Hindus and Sikhs and everybody flowed together. On such an occasion, Ithink, more is expected from the Parliament of India than we have been able to considering the terrific problem which we are facing now on this occasion.

The first thing, the President ought to have done in his Address was to admit, if I may humbly say so, that the rule which is going on in Punjab in his name since the month of october last has been a total failure. Last November we debated in this House the Bills which were to replace the ordinances. One was the Disturbed Areas Bill relating to Punjab and the other was the Armed Forces Special Powers Bill. At that time, during the debate; some of us had warned that these measures were not going to have the slightest effect. We were attacked, of course, from that side saying we do not want law and order to be maintained. That is why, we are opposing this Bill and so on and so on and so forth. But now, of/course, I can say—I do not want to score a debating point—but the fact is that we did emphasise this point that this is a problem which has to be solved by political means and it cannot be solved by the Disturbed Areas Act and the Armed Forces Special Powers Act. Even under these Acts, the special powers that were given to police and army have they been used against the people who are creating this violence and terrorism there ? Have they been able to use them ? If they had been able to, that would have been to their credit and they would have been able to come before this Parliament with a report and a record about it. The fact of the matter is, nothing was done and nothing can be done. And the situation has actually gone on worsening as everybody knows here. It has not improved. It is worsening in spite of all those special powers—military, police and everything.

Sir, Mr. Darbara Singh was removed. He was supposed to have resigned, of course. But he was removed from the Chief Ministership. As I had said on that occasion, the President's rule was imposed even without a proper report from the Governor. All that he forwarded to the Centre was a letter from Mr. Darbara Singh. It was not the Governor's report. Any way, the purpose at that time, as I see, was only to appease the Akalies. There was a lobby which was saying, "Nobody will come for talks and nobody would negotiate so long as Darbara Singh is there ; he must be removed". And our Government suffers pathetically from this delusion that if some sort of condition can be created then the so-called moderates among the Akalies will be willing to come for talks and settlement ; they will have the courage to stand up to the extremists. But longer the delay and if you go on rifting like this...

SHRI RAM PYARE PANIKA (Robertsganj) : This is your imagination.

SHRI INDRAJIT GUPTA : We have seen now what is happening...

THE PRIME MINISTER (SHRIMATI INDIRA GANDHI) : At this stage, I do not want to interrupt. But this is what the Opposition leaders have been saying all along, including Mr. Gupta.

SHRI INDRAJIT GUPTA : Yes, including Mr. Gupta have always said that this must be a political move. It cannot be done by means of some sort of gimmick of removing one Chief Minister.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : That was not a gimmick.

SHRI INDRAJIT GUPTA : Yes, you have a majority in the Punjab Assembly. You have a majority and you could have made somebody else as the chief Minister and carried on. But the whole idea given, impression given was by the imposing the President's rule and giving special powers to police and military, it would be possible to control the situation. We said, 'No'. I must point out and I hope the Prime Minister will not contest this. You see, the other day—on the 7th of last month—when she kindly called the leaders of the Opposition for a consultation, it was decided that again a tripartite meeting would be convened and they would be asked to come which would be held later on the 14th. I am sorry to say that the entire Press has been given the impression also and the Government, of course, has taken credit and kept quiet as though it was the Government which called the Opposition leaders in order to initiate the idea of havnig another tripartite meeting. This was not so. The hon. Prime Minister remembers that. It was not so. Please bear with me.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : I am not contradicting you.

SHRI INDRAJIT GUPTA : You please bear with me. I can read your expression, you see. As a matter of fact, in that meeting—the point is, I am coming to that connection in the subsequent events. Otherwise, it does not matter much. We did not deny also that. If you want to take the credit, you take the credit. But in that meeting, all of us were pressing for resumption of the tripartite talks for the simple reason that there was no other way out to deal with this question. You may fail in the tripartite talks, once or twice or thrice, whatever it is. What else are you going to do ? How else will you tackle the problem ?

If I remember a right, it was the Government; the Prime Minister, who were very reluctant at that time to resume the tripartite talks saying. It will not lead to any result. We have tried it before. It is no use negotiating with these people. They always come up with new demands and so on and so forth. The day the tripartite talks resumed, new and widespread disturbances were engineered outside—the whole thing callapsed in one day—and the Akalis walked out of the talks. They got a chance and they said, "We will not come back." And the trouble spread to Haryana also. I am not going into all that now as to what happened in Haryana.

MR. CHAIRMAN : You take into account the time factor also.

SHRI INDRAJIT GUPTA : I do not think this kind of a debate will take us very far.

MR. CHAIRMAN : You might have so many things to say. Therefore, I said, the time factor is also there. The Prime Minister will reply to the debate at 4 O'Clock.

SHRI INDRAJIT GUPTA : It is not yet 3 O'Clock.

MR. CHAIRMAN : There are so many other members also to speak.

SHRI INDRAJIT GUPTA : She must tell us what the Government is thinking of doing. It is no use saying that her party is not like some other parties. She has cried to make a virtue of this indiscipline in her party saying, "We are not monolithic and we do not want to be monolithic." But you are the ruling party and you cannot boast of your lack of discipline, lack of unity and chaos inside your party. You should not try to make a virtue out of something which is dividing Congressmen from Congressmen even on communal issues depending on whether they belong to Punjab or Haryana.

AN HON. MEMBER : The Congress is not divided.

SHRI INDRAJIT GUPTA : Earlier; I remember, a few days ago, in some other context, I think, in some interview to some foreign press also the Prime Minister was on record as saying, "We are not as disciplined as some communist parties" and so on. That may be...

PROF. N.G. RANGA (Guntur) : That is true.

SHRI INDRAJIT GUPTA : Everybody says that we have to get together to fight this violence and this situation which has arisen. Before we can all get together, the Congressmen have to get together if they want to join in this endeavour.

AN HON. MEMBER : Are you very serious about it ?

SHRI INDRAJIT GUPTA : I am not less serious than you.

Some forces which were anxious to sabotage any kind of a settlement saw to it that as soon as the tripartite talks resumed, there would be widespread disturbances in both the States This itself is evidence of the fact that the people who are including in terrirism, violence and communal fanaticism are very much frightened about the possibility or the probability of a negotiated settlement through the tripartite talks. They do not like it at all. They do not want to take it to the negotiating table ; they prefer to take it to the streets with the weapons which they have got. Precisely for this reason it is necessary for all of us who believe in secularism and in fighting this evil that we should try to see that they are forced to come to the negotiating table and hammer out the points there.

PROF. N.G. RANGA : Forced ? Invited or forced ? You want to bring them to the negotiating table at the point of gun ?

SHRI INDRAJIT GUPTA (Calcutta North East) : How can you do that ?

SHRI SUNIL MAITRA : By force of logic.

SHRI INDRAJIT GUPTA : I am very glad that the Prime Minister in her speech was forthright in debunking the theory which was being talked about, reaction and relation, that reaction and retaliation is justified and all those implications were being made here by some people. I am very glad that she has categorically rebutted that most dangerous and ill-advised line of thinking.

May I now make a few suggestions here ? All these are my humble suggestions for the House to consider. We are all hanging in the air without concrete proposals at all, as to what to do.

The first point I wish to make on behalf of my party is, nobody can depend on the Police now and nobody has any faith in the Police. You know that as well as I do. Yesterday there was disturbance during the Shiv Rathri Mela. The main anger of the people was against the Police first, for having failed to make any proper arrangements. You read it in the newspapers. It was the Police who were the object of the wrath of the people. The Police

totally failed in their responsibility even on such an ocuasion.

Therefore I would like to say first of all that all parties which believe in Hindu-Sikh unity and which are united in opposing violence, terrorism etc., let tehm jointly set up Peace Committees in all the villages and towns of at least three districts, Amritsar, Gurdaspur and Ferozepur which are on the border. Actoss that border, you know what is happening on the other side and who is deriving comfort from this. We are talking every day about this danger coming from outside. Some times the Opposition is being chided and it is said that the Opposition do not understand and do not realise the danger from outside.

If you want to combat this external danger which is also growing—we know the United States is building its base in Ria-ul-Huq's territory--then it is compulsory on all of us that we should control this situation on the border on our side by seeing that this is not allowed to develop further and that it is stopped. We are not at all of the view that, by depending on security forces and Police forces, this can be put down. That has been proved. It would only provoke the terrorists more and make the situation worse. Now, it is necessary that there should be mass campaigning among the people down below.

Your Part, the Congress party, I am afraid, is not very much coming forward at all in this regard as is known apparently from all the reports we have got from Punjab.

Some Peace marches and so on have been planned and organised only three or four days ago in Ludhiana and in various towns but the Congress party is conspicuous by its absence.

We do not believe that you will be able to isolate these extremists or do anything without going to the masses and rousing them and explaining to them the issues at stake, without exposing these people who are carrying on this vicious campaign and these attacks. This must be taken up seriously. I can only make this offer that for every one peace worker or volunteer that the Congress party brings forward, my Party in Punjab will bring two people. We will bring two people for every one person that your Party may bring. But you must come forward. Let us all go there together, if necessary. Let us take part in peace marches. If we are attacked by these people, if anybody wants to fire or shoot us down, let them. We are living in the land of Bhagat Singh who was executed here in this month in 1931. We are living in the land of Jallianwala Bagh martyrs. We are living in the land of Sumit Singh. The Prime Minister said "I am surprised that he was shot and killed a few days ago because though he was a Sikh, he did not have a beard and, therefore, they killed him." That was not why they killed him. They killed plenty of people with beared also. They killed him because he was the grand-son of Sardar Gurubaksh Singh, editor 'Pritlari' and he was using his pen against these people, preaching the message of brotherhood and Hindu-Sikh unity and peace. That is why, he was killed. It is not done just because he did not have a beared. They do not bother whether one has a beared or no beard. He is a martyr. He was fighting them with his pen. So, he had to pay with his life.

My Party suggests that if you are serious about this, let us all get together. Don't go on making accusations that you are not getting the cooperation from the opposition and this and that. Let all Parties which are willing to fight this evil, let us all get together and go to Punjab. Let us set up Peace Committees and organise volunteers in every Mohalla in the towns and in the villges. Let us organise peace marches. Let us carry out a propaganda campaign among the people. Everybody here says that we congratulated the people rightly.

[Shri Indrajit upta]

Even now the mass of the people are not interested in having Hindu-Sikh clashes. Their heart is sound. Their traditions are sound. Let us depend on those traditions instead of depending on Police force.

The second proposal is about Police that is there. You are not going to abolish the Police, I suppose.

The police is there ; the C.R.P. is there and the B.S.F. is also there. But, how they are being deployed, I do not know. But, the Punjab police and the other police, the Haryana police, are all there. We know what kind of a role they have played there. I would humbly propose that these police forces must be really rigorously over-hauled. At least all the officers who are found to have been communally implicated in any of these incidents or those who have behaved like cowards or who have shirked their responsibility towards the people, strictest action must be taken against them. Whatever be your intelligence system, as far as terrorists are concerned, that intelligence system must be tightened up. It is no use saying that we do not know whether they are going to strike next because they go on motor cycle or go somehow suddenly to some place, I know it is a difficult job to be on the right spot everytime when they are operating. But, there is some failure of intelligence obviously. I do not know whether your intelligence services are also manned by reliable people or not.

My third suggestion, my final suggestion, is this. First of all, let us, for a short time, together, in this way, appeal to the Akali leaders to stop this non-sense, the burning of the Constitution and all that ; let them condemn unequivocally all these violence and killings ; let them condemn again publicly the use of the places of worship for harbouring the criminals and storing arms there. Let us invite them back to a tripartite conference whether they come or do not come. If they come, well and good. Even if they do not come, my party proposes that all others should meet ; we should work out some just and equitable solutions which we consider to be fair and let us announce these before the country and the people that these are solutions for these problems whether it be torritory or division of water or about the Gurudwara Act or whatever it is. Let us do it and let us call them. If they come; well and good and, if they do not come, may I know what you propose to do? How long can we go on like this? Every moment of drift is making the situation ten times more dangerous, making it much worse. Therefore, Mr. Chairman, I must say that nobody has been trying to get down to brass-tacks and tell us concretely what are the steps which can be and should be taken now. On behalf of my party, I am making these proposals—they may not be exhaustive because there may be many things which require to be done. The television and radio can play a big part. They should have a number of programmes which should highlight the traditions of Hindu-Sikh unity.

15.03 hrs.

[(SHRI R.S. SPARROW *in the Chair*]

Which should preach the gospel of brotherliness, peace and all that much more than what is being done. They should use some of the old traditions, the old writings and the old message which they have preached in the Punjab or in other parts of the country, that should be put across through the T.V. and Radio incessantly throughout the country. There are many other things which can be done.

I would like the Prime Minister to give some hope to the country that we are not just drifting along, that we have been overwhelmed by the events of the last few days and since the Akalis have chosen to walk out, they have nothing further to add now. I think this kind of thing will create an

atmosphere of great depression and demoralisation in the country and will encourage those people who are out to create violence and trouble and disunity.

Therefore, this matter matter is too big to go into—these party allegations and counterallegations. If you had that kind of security force on which you can depend, it would have been a different matter. We have not got it. If you depend upon ourselves, on the strength of the people, on the unity of the people, our combined efforts should be to mobilise the people to fight against this evil. No amount of speeches or statements are going to suffice. Let us go—we are prepared to go—and let the leaders of parties go together there ; let us go and mobilise our own cadres and workers first. Let us be with them ; let us form those Committees ; let us take out piece marches, let us carry this message from village to village ; and then only you will be able to isolate these people who are spreading all wrong rumours and ideas among the people. These are our suggestions in respect of Punjab and due to lack of time it is not possible for me to discuss on economic aspects. The same will be done later but at the moment this is the main problem and the main issue and a challenge before the country and I hope Government will give some hope to the country that they are thinking of something concrete.

SHRI SANTOSH MOHAN DEV (Silchar) : Mr. Chairman, Sir, I have heard the speech of Mr. Indrajit Gupta and when he spoke he said those parties who believe in Hindu-Sikh unity should joint but very cunningly he left the names of those parties who don't believe in Hindu-Sikh unity and who are near to his right—not very much far away but only two-three yards away. I wish he could spell it out. (*Interruptions*) We know which parties are those. Don't get excited. When Mr. Indrajit Gupta charges the Congress (I) our Members this side get excited. I am not. Here I would like to quote what one of their ministers in West Bengal, Mr. Ashok Mitra, remarked about communists that "we are communists. We are not gentlemen." This is the quotation of a minister of West Bengal and from that point of view when they say so many things about the Congress (I) which is the biggest party not only in this continent but also the whole world I don't feel very bad.

(*Interruptions*)

Mr. Chairman, Sir, about Punjab problem I do not want to go in detail but all I would like to point out is that it is always wrong to say that the Congress party and the Prime Minister want to keep it alive. Those who want to keep alive they want to judge their strength and that is why he had suggested for every one Congressman he will give two.

(*Interruptions*)

SHRI INDRAJIT GUPTA : Out of the two one will be a Sikh and one will be a Hindu.

SHRI SANTOSH MOHAN DEV : Our party can give Buddhists, Christians, Muslims, Jains and everybody. This is what our party belongs to.

SHRI INDRAJIT GUPTA : They will be fighting each other.

(*Interruptions*)

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY (Calcutta South) : Sir, is this the response from the responsible party ?

SHRI SANTOSH MOHAN DEV : I have got a book here from West Bengal.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : You are not debating. West Bengal. Talk about Punjab. Three thousand people were killed in Assam.

(*Interruptions*)

THE PRIME MINISTER (SHRIMATI INDIRA GANDHI) : The whole world knows that we have pro-

tected the people there and if you ask the people there, they also will tell you who has protected them. To keep on spreading such a lie is not only an insult to me but it is an insult to the people of Assam.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : Sir, the Prime Minister has said that it is a lie. I had said three thousand people have been killed in Assam. That is the official record. The Prime Minister has called me...

(*Interruptions*)

This is unparliamentary.

MR. CHAIRMAN : No. No. Not like this.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : I had said that three thousand people have been killed in Assam.

MR. CHAIRMAN : When I talk you kindly listen. Which rule are you quoting ?

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : It is a question of whether it is Parliamentary or not. Please see Rule 376, Sir. Can the Prime Minister say, I am spreading a lie, when I am quoting the figure given by Saikia Government that 3,000 people were killed in Assam ? That is the official figure and the Prime Minister says that I am spreading a lie.

MR. CHAIRMAN : Kindly hear ; you are not understanding...

SHRIMATI INDIRA GANDHI : I I don't know whether he has a guilty conscience or what the problem is. He gets so excited whether anybody refers to him or not. I am not contradicting his figure but I am contradicting what he is implying that we were responsible for the killing. This is what I said very clearly. We were the people who went there, who did our best to protect the people ; and this, the people themselves there have acknowledged. This is what I said. I am not contradicting his figure. And I request the Hon. Member to let our member get on with his speech and not to interrupt him any more.

(*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN : That is all right ; leave it.

SHRI SANTOSH MOHAN DEV : Sir, I think the Hon. Member from the opposition wants to hear about Assam. In Assam the problem was created during the Janata rule of which the CPM was in alliance. President's rule came ; we do agree that the opposition refused to cooperate with the Government.

(*Interruptions*)

**SHRI SONTOSH MOHAN DEV : Sit like gentlmen and listen to what I am saying. Don't make noise.

(*Interruptions*)

Sir, when the Government of India came forward to discuss with opposotion parties (either to amend the Constitution or extend President's rule or to bring a situation whereby election can be held) the opposition parties could not unite themselves. Some parties supported. Some parties opposed. Unfortunately we are not having that much majority in Rajya Sabha. Therefore there was a constitutional deadlock. That is why election had to be held. Without giving election only internal emergency could have been given. And even some political parties suggested to our leader which she rejected. Those people who shout so much against emergency themselves suggested to the Government, you bring emergency and take step in Assam. Certain political parties in India try to go to certain parts of India, especially during the Kashmir election. They say, 3000 people are killed and they are only Muslims. It is wrong. Those killed are Hindus and tribal people, and among the Hindus unfortunately there are also Assamese who have

**Spoke in Bengali.

been killed, 3,10,762 people were dislodged from their houses. They belong to all communities including Assamese, Bodas and others. This Government after installing this popular Government in Assam has rehabilitated each and every person. Sir, you will be surprised to know that only 20000 people went to West Bengal—Cooch Behar. Bengal Government everyday asks, give us money to look after them. Traditionally in Bengal if a man comes from his neighbourhood, he is looked after. They want money from Central Government to feed them. Not only that. In our camps not a single fellow died. In West Bengal camps 92 people have died and yet they are shouting against the Central Government. Sir, it is very easy to accuse the Congress party or ruling party and to malign it. But what I am going to say today is this. From our experience of Assam we have seen that AASU and Gana Sangram Parishad boys were given freedom to ride on a lion and these political parties, BJP and Janata would not allow these boys to come down from this lion; this is why the situation went so worse. Sir, Mr. Indrajit Gupta has spoken so many things. His party in Assam disagreed and changed their stand. They are aligning with the activities of AASU. I must say it openly.

The latest situation is different from what it was before. I congratulate the President and I thank him because in his report he has brought out the correct picture of Assam. The Government which has been installed there, has been able to bring the situation to near normalcy. The Prime Minister had visited Assam in the course of last one year at least six times and with her motherly attitude, she has been able to develop a peaceful atmosphere there. We are glad that Assamese and other linguistic and religious minority have developed faith in the Government of India and the Prime Minister, in particular. Now, an amicable solution can be reached. I would only like to appeal to the Prime Minister that if the boys are now willing to talk and willing to come a settlement with the spirit of give and take and provided their demands are legitimate, an amicable solution should be arrived at. This is my only appeal to our Prime Minister.

Sir, I understand that AASU and AGSP recently had a meeting at Gauhati when only two or three Opposition party leaders were present-- Mr. K.P. Unnikrishnan and Mr. Ravindra Varma-and during the discussion there, these party leaders had also appealed to them to bring normalcy for which I thank the Janata Party and the Congress-S. Now, that the situation is moving in such a way, I would request all the political parties to bring normalcy there. I do not mind if it is done with the help of all the opposition parties with a spirit of give and take, this problem can be solved very peacefully. It is wrong to say that the Assam type of agitation and violence is going on in Punjab. Assam should not be shown as a symbol of instability and violence. Now, there is stability and peace everywhere in Assam and normalcy is restored there. What is happening now in Assam is that irrespective of caste, creed and religion, they are now forgetting their past differences and everyone is living in peace. I am again requsting the Prime Minister to have a dialogue provided they come forward with a reasonable solution. Thank you.

SHRI M. RAM GOPAL REDDY (Nizamabad) : Mr. Chairman, I really offer my sincere thanks to the President for giving very good advice and for giving all facts and figures about the development in our country.

Sir, had the population remained static as in countries like the USA, Britain, USSR, Japan and Germany, the condition our people would have been better than the people in those countries of the world. Pandit Nehru had to manage about 30 to 40 crores of people and now our Prime Minister, Shrimati Indira Gandhi, is

[Shri M. Gopal Reddy]

managing 70 crores of people and every year we are adding one Australia to our country in so far as population is concerned. But the opposition parties say that there should be no family planning in our country. They want the people of this country to produce more and more children and they want the Prime Minister, Shrimati Indira Gandhi, to take care of them.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : Charity begins at home. You start it.

SHRI M. RAM GOPAL REDDY : We have already done it. Sir, they now ask our Prime Minister to give them food, shelter, education and employment. That is what they are now saying. But has anybody on their side taken any step to control this population explosion ?

रास्ता रोको, फैक्ट्री बन्द करो, उसका सिर फोड़ो और रेल रोको ।

This is what they are doing. They cannot do good for the development of the country. Now, all the 18 parties joined together. It looks as 18 weak fellows start walking on the road to reach the goal. At the same time, they do not know that there is one capable fellow, a very strong man, who works hard and can reach the goal. Only the strong Congress-I men will be able to lead the nation and reach the goal.

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS, SPORTS AND WORKS AND HOUSING (SHRI BUTA SINGH) : If all those weak persons sit on the road, at least they will, block the road.

SHRI M. RAM GOPAL REDDY : Sir, nowadays we hear a lot of things about the Chief Ministers of the States having powers. Whether the Chief Ministers have got powers or not, I do not know. But in my State, the Chief Minister has got all the powers Supernatural powers. With one stroke of pen, he can dismiss 35,000 persons. There is a saying in English language—to rob Peter to pay Pal. Though he has robbed Peter, he has not paid to Pal. He has dismissed 35,000 people, but not a single person has been appointed. Not only that, he has removed 40,000 village officers at a time when they had to collect money. All the money that was to be collected from the farmers has not been collected. Apart from that, he has suspended over 14,000 engineers in A.P. Construction Corporation. Under his formula of reduction of retirement age from 58 to 55, he has removed all the best engineers in the Electricity and Irrigation Departments. As many as 11 Chief Engineers in the Electricity Department alone have been removed, and that is why, there is scarcity of electricity in the State. You can well imagine also where a number of experienced people have gone. Very good professers and teachers have also gone under this scheme. He did not stop at that. He asked the police officers to catch hold of the students, who looked this side or that side, in the examination hall, and who had not completed the syllabus, and they were eventually rusticated.

The opposition leader has stated that under the Integrated Rural Development Programme, the Government of India has sanctioned 16 crores for minor irrigation; the matching grant of Rs. 4 crores is due to some State Governments, and they say that it is simply not made available. Now, what is the use of sending all the money here. About hundred crores of rupees have been sent regarding measures in the flood affected areas, but not a single pie has been spent. With the first flood, all the money will wash away. It is in the hands of contractors, who are connected with the ruling party in the State. Ours was a prosperous State built by Sanjeeva Reddy, Sanjivayya, Brahmananda Reddy and Vengal Rao.

They had been spending 60-70 percent of the budget money on irrigation and electricity, and now N T Rama Rao has reduced it to only 30 per cent. Then, the Srisailam project was to be completed long back. This year all the water was let out, and thus the generation of electricity stopped. That is why, for that project, the Central Government has given a lot of money. Central Government had got 80 crores of rupees from Saudi Arabia for this project; now all that money is a waste.

All the industrialists who wanted to establish their industries in Andhra Pradesh are having second thoughts, and those who had established are running back, because there is power cut for the first time after 30 years. Because of the power shortage, the lift irrigation programme was affected, and the crops have dried up because of non-availability of water. This is the pathetic condition which has been brought about by our Chief Minister, and he wants to give milk to each and every village, though he has failed on every front. Our state has become bankrupt, and I want to know from the Central Government how they are going to help us, so that whatever money is spent in our State, it is spent usefully and there is no waste.

SHRI BAJUBON R. KHARLUKHI (Shillong) : Mr. Chairman, Sir, I would like to express my profound gratitude to you for giving me this opportunity to speak, and you will permit me when I say that the President's Address, drafted as it was, by human beings, contained not only the bright side but the dark side as well or, rather I should say that the Address is, for all intents and purposes, a record of achievements and failures.

I call it a record of achievements because of the gigantic strides we have been table to make in the field of science and technology, to the extent that the day is not far off when we shall be sending the first Indian cosmonaut to unravel the mysteries of the Universe. And I have a dream that in the field of science and technology, our country shall one day emerge as a self-supporting country, so that our international image can be projected in an abundant measure.

I believe that this August House will join in chorus with me in my paying tributes and in my saluting our scientists, for placing the Rohini satellite into the near-earth orbit and for the successful launching of INSAT I-B satellite. By human courtesy and by dictates of conscience, I must also congratulate the Government for the expansion of TV services and for our becoming the 15th consultative member-State of the Antarctic Treaty. In this connection, I am tempted to state that if politics cannot heal economic wounds, let science and technology perform that glorious role.

I must also congratulate the Government for focussing the attention on the need to eradicate adult illiteracy; to improve elementary education and also for the national policies aimed at the conservation of our rich and glorious heritage. But my congratulations to our scientists and my congratulations to Government cannot dissuade me from expressing my anguish; in the sense that inspite of the fact that we have registered a significant progress in the field of science and technology, such progress, so far achieved, is essentially vertical in character, while from a horizontal perspective, we have not been able to emerge, as a nation, from the same old civilization of bullock-cart, where abject poverty is writ large on the foreheads of a greater portion of our population.

I am also pointed to see that the Address has not outlined the need to improve the pay-scales of the primary-school teachers, who have been working very hard to lay a sound base for a sound educational structure.

Coming to the political scene, there appears to be more failures than

[Shri Bajubon R. Kharlukhi]

achievements. Failures not because the Government was inactive but it is mainly due to the government not giving that amount of attachment to certain burning issues affecting national unity and security. In this connection, I would like to quote from page 6 of the President's Address which reads as follows :

> "Tribunals have started working to facilitate a resolution of the foreigners' issue. Firm measures have also been taken to check illegal immi gration."

The tribal minorities of the North Eastern region and our Assamese brothers have expressed a deep resentment over the Illegal Migrants. Act, 1983, on the solid ground that the Act seeks to grant legal protection to foreigners entering the region before the 25th March, 1971, thereby paying the way to their claiming themselves citizens of the country. Since the Act does not comply with constitutional provisions wherein three positive tests have been outlined for conferring citizenship, it can never offer a lasting solution to the foreigners' issue and will not help check illegal immigration. The hon. members of the House are aware that on the 16th February we have observed a protest day and we have called upon the government to scrap the Act in the larger interest of national security. I do cherish the hope that the government would be responsive to our demand. The States and Union Territories of the North Eastern region are like 7 sisters sailing on the same boat of political fortunes and I would wish that the Government of India would be instrumental in clearing the dark clouds hovering over the ocean of our existence. I also wish the "Demand Day" on the 2nd March a complete success.

I may be permitted to state that in trying to find a solution to the foreigners' problem, which is a very sensitive issue, it must be considered not from a narrow political angle but it must be vizualised in the larger perspective of preserving national unity.

Coming to the international front, the country has no doubt earned a greater degree of credibility by the successful hosting of the Seventh Non-Aligned Summit and the Commonwealth Heads of Government meeting. We have been able to reaffirm our faith in the policy of non-alignment and its continued relevance to a disturbing international situation. The fact that our respected Prime Minister was elected Chair-person of the Non-Aligned Meet shows that we have won world recognition in the task of building lasting peace and security. We believe in peace.

MR. CHAIRMAN : Kindly wind-up now. Time has to be given to so many others also. Therefore, finish it.

SHRI BAJUBON R. KHARLUKHI : We believe in peace, because we knew that war will end us. We believe in peace and in the words of Pandit Nehru, peace is not only a moral requirement. It is also a practical necessity. Therefore, we must remember this.

As a Parliamentarian I must submit myself to you. In spite of the fact that I have some further observations to make, I do not want to take much of the time. With these few remarks I must express my gratitude to you once again and I resume my seat. Thank you.

MR. CHAIRMAN : Mr. Namgyal. Please mention only the salient points. We have to work accerding to the time.

श्री पी० नामग्याल (लद्दाख) : चेअरमेन साहब, राष्ट्रपति जी एड्रेस पर इस ऐवान में कई दिनों से बहस चल रही है। राष्ट्रपति जी ने नेशनल और इन्टरनेशनल इशूज सर, इकोनोमिक इशूज पर

और दूसरे इशूज पर अपने एड्रेस में कहा है पंजाब के मसले पर तो इस ऐवान में परसों बहस हो चुकी है और उसमें असम का भी जिक्र आया था। मैं इस मौजूं पर नहीं जाना चाहता। मैं वक्त का ख्याल रखते हुए, अपनी स्टेट कश्मीर में जो मसला है, उस पर थोड़ा-सा बोलना चाहता हूं।

मैं खुश हूं कि आरिफ मौहम्मद खां साहब ने कश्मीर के मामले में बहुत कुछ इस ऐवान में कहा है जो कि उन्होंने खुद अपनी आंखों से देखा है। मैं इस मौजूं को लेते हुए आपकी तवज्जोह पिछले साल जून में हुए इलेकशन के बाद हुए वाकयात की तरफ दिलाना चाहता हूं। मैं दो-तीन प्वाइंट पर ही कहना चाहूंगा। खुसूसी तौर पर जो प्रेसमैन हैं उनको याद होगा कि वहां के चीफ मिनिस्टर ने वायकाट करने के लिए कहा था। **(व्यवधान)**

मैं कश्मीर टाइम्स जो कि जम्मू से शाप होता है 30 जून, 1983 का है, उससे कोट करता हूं—'Farooq vows to boycott press and pressmen"

उसी तारीख के इस्यू में और उसी जलसे में जो कि अवामी रेक्शन कमेटी की तरफ से आरगेनाइज्ड हुई थी उन्होंने कहा था। मेरा ख्याल है 1947 में लेट मीरवाईज युसूफ शाह साहब जिनको कि शेख साहब ने पाकिस्तान भेज दिया था, किस कारण से भेजा था मुझे याद नहीं। उन्होंने यह मीटिंग लेट मौलवी साहब की डैथ एनवर्सरी मनाने के लिए अर्गनाइज की थी। उस अवसर पर वहां के मीर वायज साहब ने कहा था कि कश्मीर में जो फ्रीडम मूवमेंट 1931 में शुरू हुआ था वह अभी फुलफिल नहीं हुआ है और उन्होंने कहा कि इसको हमें आगे ले जाना है ताकि कश्मीर के लोगों को आजादी मिले। यह उस वक्त उन्होंने कहा और उसी मीटिंग में और उसी मेज पर जो कि अवामी एक्शन कमेटी की तरफ से आर्गनाइज हुई थी, चीफ मिनिस्टर फारूख साहब भी मौजूद थे जो वहां के चीफ मिनिस्टर उन्हीं लोगों के सहारे बन चुके थे। दूसरा मीटिंग जो श्रीनगर में 8 जुलाई को हुई थी वह "कश्मीर टाइम्स" में 9 जुलाई को पब्लिश हुई है। उसमें वहां के मीर वायज साहब ने कश्मीर के मुसलमानों को काल दिया था कि तुम लोग हथियारों से लैस हो जाओ और जहाद के लिए तैयार हो जाओ। उस मीटिंग में भी कश्मीर के मुख्य मंत्री साहब मौजूद थे।

PROF. SAIFUDDIN SOZ (Baramulla) : I have a point. You kindly consider it. I have a requested to make and then he can continuc. I have requested that I must be given four minutesbe cause earlier Shri Arif Mohd. Khan spoke for one hour and he had denigrated all the secular forces and he was not speaking for the nation. He was distorting the facts...

(Interruptions)

MR. CHAIRMAN : Listen carefully. This is not the way. What you have to do is when you want to ask me something, you will have to send just a chit to me. This is not the way to deal with the problem. This is the prerogative of the Chair and the Chair will consider that.

(Interruptions)

PROF. SAIFUDDIN SOZ : He is distorting the whole history.

(Interruptions)

श्री पी० नामग्याल : मैं "कश्मीर टाइम्स" 9 जुलाई 1983 को कोट कर रहा हूं। जो वाकयात वहां पर हो रहे हैं, उनकी तरफ तवज्जह दिलाना चाहता हूं।

[श्री पी० नामग्याल]

अपोजीशन के लोगों को भी इस बात का पता है लेकिन वे अनजान बनते हैं। वहां की हालत ठीक नहीं है, इसलिए मैं उसका और तवज्जह दिलाना चाहता हूं। मैं कोट करता हूं—

> "Mirwaiz Farooq accused the Congress (I) of hatching conspiracies to harm the Government led by the National Conference and charged it with attempting to change the "Islamic character" of Kashmir."

उन्होंने जहाद के लिए जो काल दिया, उस दिन की बात है। उस पर फारूख साहब, चीफ मिनिस्टर फरमाते हैं, मैं कोट करता हूं—

> "The Chief Minister, Dr. Farooq Abdullah, who also addressed the gathering briefly endorsed the utterances of the Mirwaiz saying that "there is nothing more left for me to say as all that I had to say has been said"."

एक ही स्टेज पर बैठकर पहले मौलाना से तकरीर करवाता है और बाद में एड्रेस करता है। और मौलाना की तकरीरों को तसदीक करता है। जम्मू-कश्मीर में सिख एक्सट्रीमिस्ट्स को ट्रेनिंग कैम्प लगवाने की जो इजाजत दी गई, उस पर मैं ज्यादा नहीं बोलूंगा क्योंकि काफी कुछ इस बारे में कहा जा चुका है। उसका नतीजा आप पंजाब में देख रहे हैं। 14 अगस्त को पाकिस्तान का नेशनल डे था। आरिफ साहब ने सोपुर के बारे में थोड़ा सा मेन्शन किया था। सोपुर में हमारे ट्राइ-कलर झण्डे को उतार कर फाड़ दिया और बाद में जला दिया गया। अभी कल की ही बात है कि सिख एक्स्ट्रीमिस्ट्स ने कान्स्टीट्यूशन की आर्टिकल 25 को जलाया। उसको आप सबने एक जबान से कंडम किया है। क्या हमारे नेशनल फ्लैग और कांस्टीट्यूशन आफ इंडिया में कोई फर्क है। उसको कंडम क्यों नहीं किया? जम्मू-कश्मीर में क्रिकेट का मैच हुआ। मैं उसके बारे में डिटेल में नहीं जाना चाहता। वह चीफ मिनिस्टर की देख-रेख में अरेंज किया गया। वहां पर हमारा कौमी झण्डा लहराने की इजाजत नही दी गई और सिर्फ वैस्ट इंडीज का ही झण्डा लहराया गया। वैसे इन्टरनेशनल कन्वेन्शन है कि ऐसे मौकों पर दोनों कौमों के झण्डे लहराये जायें। वहां तकरीबन 75 हजार दर्शक थे जबकि 25-30 हजार ही टिकट बिके थे। लेकिन सारे एन्टीनैशनल और कम्यूनल फोर्सेस को किसी खास मकसद के तहत बिना टिकट स्टेडियम में आने की इजाजत दी गई। पाकिस्तान का झण्डा भी दिखाया गया। पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे भी लगाए गए।...(**व्यवधान**)

पहली बार काश्मीर में जो प्रो-इंडिया फोर्सेस है, उनके द्वारा हर जगह गांव-गांव में लोगों ने हिन्दुस्तान जिन्दाबाद के नारे देने शुरू किए। लेकिन ऐसे लोगों को गोलियों का निशाना बनाया जाता है। हाल ही में पूछ में चीफ मिनिस्टर साहब ने पब्लिक मीटिंग में कहा कि मुसलमानों तुम लोग हिन्दुस्तान की तरफ क्यों जाते हो? मैं तुम लोगों के लिए गल्फ कंट्रीज के साथ ओवरसीज कारपोरेशन बनाऊंगा जिससे हर मजदूर 15-15 हजार रुपया महीना कमायेगा। हिन्दुस्तान के लोग भूखे मरते हैं और भीख मांगते हैं। इस तरह की गैर-जुम्मेराना बातें पब्लिक मीटिंग में कही गई। उन्होंने कहा कि हिन्दुस्तान में लोग गाय की चर्बी के बारे में शोर कर रहे हैं।

हमारे मुसलमानों को सूअर की चर्बी खिलाई गई। तुम मुसलमान लोग शोर क्यों नहीं करते हो। इस तरह से वे कम्यूनलाइज कर रहे थे।..... (व्यवधान) मैं सरकार से कहना चाहूंगा कि जो कुछ हो रहा है, उसको लाइटली नहीं लेना चाहिए बल्कि गंभीरतापूर्वक कार्यवाही करनी चाहिए।..... (व्यवधान)

شری پی نام گیال (لداخ)

چیئرمین صاحب۔ راشٹرپتی جی کے ایڈریس پر ایوان میں کئی دنوں سے بحث چل رہی ہے۔ راشٹرپتی جی نے نیشنل اور انٹرنیشنل اشوز پر اکانومک اشوز پر اور دوسرے اشوز پر اپنے ایڈریس میں کہا ہے۔ پنجاب کے مسئلے پر تو اس ایوان میں برسوں بحث ہوتی رہی ہے اور اس میں آسام کا بھی ذکر آیا تھا۔ میں اس موضوع پر نہیں جانا چاہتا ہوں۔ میں وقت کا خیال رکھتے ہوئے اپنی اسٹیٹ کشمیر میں جو مسئلہ ہے اس پر تھوڑا سا بولنا چاہتا ہوں۔

میں خوش ہوں کہ عارف محمد خان صاحب نے کشمیر کے معاملے میں بہت کچھ اس ایوان میں کہا ہے جو کہ انھوں نے خود اپنی آنکھوں سے دیکھا ہے۔ میں اس موضوع کو لیتے ہوئے آپ کی توجہ پچھلے سال جون میں ہوئے الیکشن کے بعد ہوئے واقعات کی طرف لانا چاہتا ہوں۔ میں دو۔ تین پوائنٹ پر ہی کہنا چاہوں گا۔ خصوصی طور پر جو پریس میں ہیں ان کو یاد ہوگا کہ وہاں کے چیف منسٹر نے پریس کو بائیکاٹ کرنے کو کہا تھا ... (انٹرپشن)

.....

میں کشمیر ٹائمس جو کہ جموں سے شائع ہوتا ہے۔ ۳۰ جون ۱۹۸۳ء کا ہے اس سے کوٹ کرتا ہوں۔ ختم

"Farooq vows to boycott press and pressmen".

اسی تاریخ کے ایشو میں اور اسی جلسہ میں جو کہ عوامی الیکشن کمیٹی کی طرف سے آرگنائزڈ ہوئی تھی۔ انھوں نے کہا تھا کہ میرا خیال ہے ۱۹۴۷ء میں لیٹ ممیر واعظ یوسف شاہ صاحب جن کو کہ شیخ صاحب نے پاکستان بھیج دیا تھا کس کارن سے بھیجا تھا۔ مجھے یاد نہیں۔

انہوں نے میٹنگ لیٹ مولوی صاحب کی ڈیتھ اینیورسری منانیکیلئے آرگنائز کئے تھے۔ اس اوسر پر وہاں کے میرواعظ صاحب نے کہا تھا کہ کشمیر میں جو فریڈم موومینٹ ۱۹۳۱ء میں شروع ہوا تھا وہ ابھی فل فل نہیں ہوا ہے اور انہوں نے کہا کہ اسکو ہمیں آگے لے جانا ہے تاکہ کشمیر کے لوگوں کو آزادی ملے۔ یہ اسوقت انہوں نے کہا اور اسی میٹنگ میں اور اسی سٹیج پر جو کہ عوامی الیکشن کمیٹی کی طرف سے آرگنائز تھی چیف منسٹر فاروق صاحب بھی موجود تھے جو وہاں کے چیف منسٹر انہی لوگوں کے سہارے بن چکے تھے۔ دوسری میٹنگ جو سری نگر میں ۸ر جولائی کو ہوئی تھی وہ "کشمیر ٹائمس" میں ۹ر جولائی کو شائع ہوئی ہے۔ اس میں وہاں کے میرواعظ صاحب نے کشمیر کے مسلمانوں کو کال دیا تھا۔ کہ تم لوگ ہتھیاروں سے لیس ہو جاؤ اور جہاد کے لئے تیار ہو جاؤ۔ اس میٹنگ میں بھی کشمیر کے مکھیہ منتری صاحب موجود تھے۔

PROF. SAIFUDDIN SOZ: (Baramulla): I have a point. You kindly consider it. I have a request to make and then he can continue. I have requested that I must be given four minutes because earlier Shri Arif Mohd. Khan spoke for one hour and he had denigrated all the secular forces

[Prof. Saifuddin Soz]

and he was not speaking for the nation. He was distorting the facts...

(*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN : Listen carefully. This is not the way. What you have to do is when you want to ask me something, you will have to send just a chit to me. This is not the way to deal with the problem. This is the prerogative of the Chair and the Ohair will consiner that.

(*Interruptions*)

PROF. SAIFUDDIN SOZ : He is disterting the whole history.

(*Interruptions*)

شری پی نام گیال

میں "کشمیر ٹائمس" ۹ جولائی سن ۱۹۸۳ء کو کوٹ کر رہا ہوں — جو واقعات وہاں ہو رہے ہیں، ان کی طرف توجہ دلانا چاہتا ہوں۔ اپوزیشن کے لوگوں کو بھی اس بات کا پتہ ہے لیکن وہ انجان بنتے ہیں، وہاں کی حالت ٹھیک نہیں ہے اس لئے میں اس کی اور توجہ دلانا چاہتا ہوں — میں کوٹ کرتا ہوں —

"Mirwaiz Farooq accused the Congress (I) of hatching conspiracies to harm the Government led by the National Conference and charged it with attempting to change the "Islamic charactor of Kashmir."

انھوں نے جہاد کے لئے جو کال دیا ہے، اس دن کی بات ہے۔ اس پر فاروق صاحب چیف منسٹر فرماتے ہیں۔ میں کوٹ کرتا ہوں۔

"The Chief Minister, Dr. Farooq Abdullah, who also addressed the gathcring briefly ondorsed the utternances of the Mirwaiz saying that "there is nothing more left for me to say as all that I had to say has been said"."

ایک ہی سٹیج پر بیٹھ کر پہلے مولانا سے تقریر کرواتا ہے اور بعد میں ایڈریس کرتا ہے اور مولانا کی تقریروں کی تصدیق کرتا ہے۔ جموں کشمیر میں سکھ ایکسٹریمسٹس کو ٹریننگ کیمپ لگوانے کی جو اجازت دی گئی اس پر میں زیادہ نہیں بولوں گا کیونکہ کافی کچھ اس بارے میں کہا جا چکا ہے، اس کا نتیجہ آپ پنجاب میں دیکھ رہے ہیں۔ ۱۴ اگست کو پاکستان کا نیشنل ڈے تھا۔ عارف صاحب نے سوپر کے بارے میں تھوڑا سا مینشن کیا تھا۔ سوپر میں ہمارے ترائی کلر جھنڈے کو اتار کر پھاڑ دیا اور بعد میں جلا دیا گیا۔ ابھی کل ہی کی بات ہے کہ سکھ ایکسٹریمسٹس نے کانسٹی ٹیوشن کی آرٹیکل ۲۵ کو جلایا۔ اس کو آپ سب نے ایک زبان سے کنڈیم کیا ہے۔ کیا ہمارے نیشنل فلیگ اور کانسٹی ٹیوشن آف انڈیا میں کوئی فرق ہے اس کو کنڈیم کیوں نہیں کیا؟

جموں کشمیر میں کرکٹ کا میچ ہوا۔ میں اس کے بارے میں ڈیٹیل میں نہیں جانا چاہتا۔ وہ چیف منسٹر کی دیکھ ریکھ میں ایرینج کیا گیا۔ وہاں پر ہمارا قومی جھنڈا لہرانے کی اجازت نہیں دی گئی اور صرف ویسٹ انڈیز کا ہی جھنڈا لہرایا گیا۔ ویسے انٹرنیشنل کنونشن ہے کہ ایسے موقعوں پر دونوں قوموں کا جھنڈا لہرایا جائے، وہاں تقریباً ۷۵ ہزار درشک تھے جب کہ ۳۰۔ ۲۵ ہزار ہی ٹکٹ بکے تھے۔ لیکن سارے اینٹی نیشنل اور کمیونل فورسیس کو کسی خاص مقصد کے تحت بلا ٹکٹ سٹیڈیم میں آنے کی اجازت دی گئی۔ پاکستان کا جھنڈا بھی دکھایا گیا اور پاکستان زندہ باد کے نعرے بھی لگائے گئے۔ (انٹرپشن)

...

پہلی بار کشمیر میں جو پرو انڈیا ورسیز ہیں ان کے دوارا ہر جگہ گاؤں گاؤں میں لوگوں نے ہندوستان زندہ باد کے نعرے دینے شروع کئے۔ لیکن ایسے

ایسے لوگوں کو گولیوں کا نشانہ بنایا جاتا ہے، حال ہی میں پونچھ میں چیف منسٹر صاحب نے پبلک میٹنگ میں کہا کہ مسلمانوں تم لوگ ہندوستان کی طرف کیوں جاتے ہو

میں تم لوگوں کے لئے گلف کنٹریز کے ساتھ اور سینٹر کا ریلوریشن بناؤں گا۔ جس سے ہر شخص ۵۰-۱۵ ہزار روپے مہینہ کمائے گا۔ ہندوستان کے لوگ بھوکے مرتے ہیں اور بھیک مانگتے ہیں، اس طرح کی غیر ذمہ دارانہ باتیں پبلک میٹنگ میں کہی گئیں۔ انھوں نے کہا کہ ہندوستان میں لوگ گائے کی چربی کے بارے میں شور کر رہے ہیں۔ ہمارے مسلمانوں کو سوئر کی چربی کھلائی گئی تو تم مسلمان شور کیوں نہیں کرتے ہو۔ اس طرح سے وہ کمیونلائیز کر رہے تھے ... (انٹرپشن)

.....

میں سرکار سے کہنا چاہوں گا کہ جو کچھ ہو رہا ہے اس کو لائٹلی نہیں لینا چاہیئے۔ بلکہ گمبھیرتا پوروک کارروائی کرنی چاہیئے ... (انٹرپشن)

15-50. hrs.

(MR. SPEAKER *in the Chair*

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : (Bombay North East) : Is he advocating the abolition of Article 370.

श्री अब्दुल रशीद काबुली (श्रीनगर) : श्री मोहम्मद आरिफ खां और श्री नामग्याल ने ऐलीगेशंज लगाये हैं। हमें मौका दिया जाये कि हम अपनी सफाई कर सकें।

شری عبدالرشید کابلی (سرینگر)
شری محمد عارف خان اور شری نام گیال نے ایلیگیشن لگائے ہیں۔ ہمیں موقع دیا جائے کہ ہم اپنی صفائی کر سکیں۔

PROF. SAIFUDDIN SOZ : I have requested for five minutes.

SHRI ABDUL RASHEED KABULI : Allegations have been made against a Minister against Dr. Farooq Abdulla. We must defend ourselves. Some time must be given.

MR. SPEAKER ; I allowed you to appeal and you had the time.

SHRI ABDUL RASHID KABULI: We have to reply to the allegations.

MR. SPEAKER : Have patience to listen. If there is any personal explanation, that can be given later. This is not a debating society at all. So, it cannot be allowed. It has never been allowed. I am not going to allow it. I will allow you later, not now.

PROF. SAIFUDDIN SOZ : Kindly give me four minutes.

MR. SPEAKER : It can be taken up later on, not like this. You must learn things like decorum in making a demand and proper parliamentary procedure. Mr. Soz, please sit down.

PROF. SAIFUDDIN SOZ : I want to speak.

MR. SPEAKER : I will name you if you do not sit down.

PROF. SAIFUDDIN SOZ : Before the Prime Minister speaks, you must allow me an opportunity.

MR. SPEAKER : This is not the proper way to make a demand. You must learn ethics.

श्री पी० नामग्याल : 18 जनवरी को काश्मीर बन्द की काल दी गई। आपको याद होगा कि जब मकबूल बट नामी एक क्रिमिनल को यहां पर फांसी पर चढ़ाया गया था उसके विरोध में यह बन्द की काल दी गई। अवामी एक्शन कमेटी के लीडर ने यह काल दी थी। इस मौके पर जो जलसा किया गया था उसमें पाकिस्तान

[श्री पी० नामग्याल]

जिन्दाबाद के नारे लगाए गए थे, फरजी नाता तोड़ दो, काश्मीर हमारा छोड़ दो के नारे लगाए गए थे। मैं सरकार से पूछना चाहता हूं कि ये जो एलीमेन्ट्स (elements) हैं इनके खिलाफ एक्शन क्यों नहीं लिया जाता है ? हमारे लोगों को फर्जी बहानों पर एरेस्ट कर लिया गया था लेकिन जो सही मानों में सिचुएशन को कम्युनलाइज कर रहे हैं, उन लोगों को आज तक आपने ऐरैस्ट क्यों नहीं किया है ?

इन शब्दों के साथ मैं राष्ट्रपति जी का जो एड्रेस है उसका समर्थन करता हूं।

شری پی نام گیال

۱۸ جنوری کو کشمیر بند کی کال دی گئی۔ آپ کو یاد ہوگا کہ مقبول بٹ نامی ایک کرمنل کو یہاں پر پھانسی پر چڑھایا گیا تھا اس کے درودھ میں یہ کال دی گئی، عوامی ایکشن کمیٹی نے یہ کال دی تھی۔ اس موقعہ پر جو جلسہ کیا گیا تھا اس میں پاکستان زندہ باد کے نعرے لگائے گئے تھے فرضی ناطہ توڑ دو، کشمیر ہمارا چھوڑ دو کے نعرے لگائے گئے تھے۔ میں سرکار سے پوچھنا چاہتا ہوں کہ یہ جو ایل منٹس ہیں اس کے خلاف ایکشن کیوں نہیں لیا جاتا ہے۔ ہمارے لوگوں کو فرضی بہانوں سے ارسٹ کر لیا گیا تھا لیکن صحیح معنوں میں سچوشن کو کمیونلائز کر رہے ہیں ان لوگوں کو آج تک آپ نے ارسٹ کیوں نہیں کیا۔ میں جاننا چاہتا ہوں۔ ان شبدوں کے ساتھ میں راشٹرپتی جی کے ایڈریس کا سمرتھن کرتا ہوں۔

15-55 hrs.

WELCOME TO THE FRENCH PARLIAMENTARY DELEGATION

MR. SPEAKER : Hon'ble Members, I have to make an announcement.

On my own behalf and on behalf of the Hon'ble Members of the House, I have great pleasure in extending our warm welcome to His Excellency Mr. Louis Mermaz, President of the National Assembly of France and the Hon'ble Members of the French Parliamentary Delegation who are on a visit to India as our honoured guests.

The other Hon'ble Members of the delegation are :—

(1) Mr. Jean Brocard, M.P.
Vice-President of the National Assembly

(2) Mr. Alain Chenard, M.P.
Vice-President of the National Assembly

(3) Mr. Michel Suchod, M.P.
Vice-President of the National Assembly

(4) Mr. Christian Laurissergues, M.P.

(5) Mr. Georges Hage, M.P.

(6) Mr. Claude Birraux, M.P.

(7) Mr. Germain Gengenwin, M.P.

(8) Mr. Martin Malvy, M.P.

(9) Mr. Michel Sapin, M.P.

The delegation arrived here early morning today. They are now seated in the Special Box. We wish them a happy and fruitful stay in our country. We also convey our warm greetings and very best wishes through them to His Excellency the President, the Parliament, the Government and the friendly people of the Republic of France.

15.57 hrs.

MOTION OF THANKS ON THE PRESIDENT'S ADDRESS CONTD

PROF. SAIFUDDIN SOZ (Baramulla) : Sir, certain allegations.

MR. SPEAKER : No. Please sit down. Don't you have any ethics ?

PROF. SAIFUDDIN SOZ : Three minutes, Sir. Allegations have been made against the people of Jammu and Kashmir.

MR. SPEAKER : I have explained to you that I will allow you time, but not at the present time.

PROF. SAIFUDDIN SOZ : Two minutes :

MR. SPEAKER : Not now. I will allow you later on.

PROF. SATYASADHAN CHAKRABORTY (Calcutta South) : You can give him two minutes.

MR. SPEAKER : Professor, don't you realise ?

THE PRIME MINISTER (SHRIMATI INDIRA GANDHI) : Just the day before yesterday we had a long discussion on the unfortunate and tragic happenings in our neighbourhood in Punjab and Haryana. It was my impression then that we had all agreed that we should try to create an atmosphere in this country which would be more conducive to different elements working together ; and that this could only be done when we all join forces to fight all communalist tendencies, all casteist tendencies and all above all secessionist and fissiparous tendencies. Unfortunately that debate does not seem to have left much impression on many Hon'ble Members here.

The President's Address is not basically dealing with these subjects, although these are the background and are very important ; I shall come back to them at a later stage. I have referred to this only because of the irregular disturbance which took place just before I got up to speak.

PROF. SAIFUDDIN SOZ : It is regular.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : If somebody wants to make a statement, the Chief Minister is absolutely able to reply to the questions which we have asked him.

PROF. SAIFUDDIN SOZ : But a Member of this House has a right.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : I am not speaking to you, I am speaking to the Speaker.

Mr. Speaker, Sir, in this House we those sitting on this side, the Government, do not expect praise, but we do say that proven facts cannot be disputed. I could have gone into much greater detail, but fortunately my colleague, the Finance Minister; presented the Budget yesterday and he has given the detailed figures. So, I need not go into them. But even at the risk of boring my friends here, I am going to repeat some of the things he said.

Now, the most important fact of this year and these last four years has been the big increase in our development effort year by year, not only in physical terms but in terms of the number of people covered and sections of population specially helped. In the Sixth Plan as a whole the growth of the G.D.P. (Gross Domestic Product) is expected to be 5.2 per cent which is the highest in any Plan. Financially, the Plan outlay has been increasing substantially year by year and this year it will be 25 per cent higher than in the previous year. Our sound fiscal and monetary policies have created a sound macro environment for growth, but we are also concentrating on the vigorous implementation of our programmes so as to give greater purchasing power to all sections, specially the poorer sections and alleviating the hardship of our middle classes.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY (Bombay North East) : Is it about the ndian economy ?

SHRIMATI INDIRA GANDHI : It is about the Indian economy. If you were not travelling so much, perhaps you would know more about it.

As for the coverage, let us see what we have been able to do for various secions. But I shall go into the details only on two or three of the most deprived sections. I was astonished to hear my old friend, Shri Banarsidas saying that the purchasing power of farmers has gone down. The very fact that more and more farmers are using in larger and larger quantities various modern inputs and are thus able to increase to produce, more, contradicts this allegation. You need only compare the deal which our farmers got during the years1977-79 and since 1980. I should like to read out thesx figures.

We have substantially increased procurement and support prices of agricultural commodities. Since January, 1980, wheat has increased by 32.2 per cent, paddy 38.9 per cent, pulses 40.71 per cent, cotton 45 per cent, ground nut 66 per cent. Sugarcane prices have not been allowed to fall and wherever there was any remote suspicion that there might be trouble, we have gone ahead to give support prices and so on. By way of direct help, we have reduced fertiliser prices by 7.5 per cent in 1983, we expanded short-term credit by 47 per cent and long and medium term credit by 27 per cent. Farmers, specially the small and marginal farmers and landless labour have been the focus of our attention. It is obvious that all of us owe our very lives to their production. In fact, I think it is no exaggeration to say that our Government and this particular government has done more for them than has ever been done before.

We are trying out the crop insurance scheme on a pilot basis. Irrigation and dry farming have been special concerns of mine and I should like to give some figures about irrigation. The addition made in 1981-82 was 2.2 million hectares ; in 1982-83, 1983-84 and 1984.85 each year 2.3 million hectares. In just these four years, more than 9 million hectares have been added. And it is most unfair criticism to say that we fell short of the annual target by a small percentage. We had, I admit, kept our target rather high. If there had not been drought, I am sure, we would have overtaken it.

So far as dry farming is concerned, a national scheme for dry farming was formulated and launched ; more than 4000 water-sheds identified and crops and practices suitable for them have been devised. One hon. Member spoke-may-be more than one spoke-of our importing foodgrains as if this was some big secret we were hiding and which they had managed to unearth. Sir, I have spoken on this openly and publicly. As you know, we did not import foodgrains because of any compulsion but because of abundant caution. This is nothing new. I have spoken on this the last time we imported grain. On both occasions we were able to buy at a time when prices were low in the other countries. Whatever the monsoon and weather forecasts may be, one has to be careful and he prepared in case of trouble or of drought. We should not find ourselves begging as happened in 1966. I should like to remind the House that when I became Prime Minister in 1966, it was a time of famine-not just drought but famine. When I toured the States of Bihar, Maharashtra and at that time Mysore, the only point that farmers put to me was : Don't bother about relief ; don't bother about anything. But do something so that when there is drought in future, we should be stronger in facing it. So, since then, this has been my major concern. Now, this time in 1982-83, there was drought which, I think, has been called the country's very worst affecting hundreds of districts. Its impact was not felt by

the people, and the Opposition was denied the opportunity to raise a hue and cry as they would have liked to do.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : That is because of the good work done earlier.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : That is because of our success in managing the crisis. Yes. There were good buffers/stock from internal procurement and we augmented them by importing 4 million tonnes in 1982-83 and 2.7 million tonnes in 1983-84. There was no knowing last year how this year's monsoon would turn out. So, it is an example of taking advance care as any good housewife would do for her household.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : Spare the children.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : Now, I mention certain special categories. It is not that these categories are more special than others or as someone has said "more equal than others." I think, we are all equal. But some categories have suffered over the centuries. I am not talking merely of our programmes for the Scheduled Castes and Scheduled Tribes because they have been discussed in detail and the figures are known. There have been questions and answers about them in this House. I am speaking for some of those who are not so well-known. One such category is that of fishermen. We have formed 5,331 fishermen's cooperatives. We are giving them credit for the purchase of boats and equipment. We have set up training institutions. We have reserved 5 kilometre zones from the shore for traditional fishermen, so that those who are now going in for dacp-sea fishing will not harm the interests of the poorer fishermen. We have developed infrastructure facilities—roads, schools and welfare activities. There is a Group Insurance Scheme. The Central Government has approved a scheme of subsidising 50% of the premium for accident insurance. The remaining 50% is to be provided by the States. Rs. 39 lakhs has been provided in 1983-84 for this scheme. The scheme is applicable to marine as well as inland fishermen. Originally, we had announced it only for the sea going ones. But some months ago, my attention was drawn to the fact that river and lake fishermen were left out. So; we have included them also.

We have also asked the States to create a Natural Calamity Distress Relief Fund.

A large section of our poor people are weavers. We believe in encouraging handloom production. Not only is this the means of livelihood for millions of people but it is an old Indian tradition of which we are proud and which we want to retain in all its traditional beauty. In 1978-79, only 126 million sq. metres were produced by the handloom sector. In 1983-84, 350 million sq. metres are expected to be produced.

There is a special scheme for hill area development which is more liberal in its terms. Cooperatives are being encouraged. The coverage of cooperatives at the beginning of the Sixth Plan was only 30 per cent. By 1983-84, we expect to acheive a coverage of 52 per cent. The level of the annual outlay is being increased from about Rs. 16 crores in 1979-80 to about Rs. 33 crores in 1984-85.

Many Hon. Members have spoken about unemployment. This problem is causing great anxiety to us all. We have taken some measures earlier and we continue to press on with them. There is no doubt that, as an Hon. Member mentioned just now, the increase in population is not helping this or any of our programmes for development.

Apart from our regular Plans which cover all these sections, hon. Members will remember that we called out from them 20 points. They are to focus attention on those aspects

[Shri Mati Indira Gandhi]

of the Plan which we felt needed much more concentrated attention and which tended to get pushed into the background by bigger programmes, probably unintentionally.

The thrust of this 20-point programme is higher production and direct help to weaker sections, specially in creating employment in our rural areas. No programme has evoked so much enthusiasm and expectations amongst our people as this one. Is it working ideally? I must confess, no. But it is making an impact and I think, this is what you can expect of any programme. No matter how good our intentions are, no matter how much money we have, and we do not have enough money, we can only do our utmost to take the programme forward and to try to reach more and more people with each step that we take.

The allocation for the 20-point programme is being raised by 47 per cent next year. Whenever, I get grivances whether trom MPs or MLAs or other people about the programime not working well, we look into them. The State Governments are monitoring the programme ; the Central Government is monitoring it. Apart from that, we also send out our own people to let us know where there are shortfalls or mistakes. They do find shortfalls ; they do sometimes find discrepancies in numbers. As you know, I do not hide these things. The programme on the whole is going well. What we need greater people's participation.

In many places where the programme is not functioning so well, it is because the people do not even know about it. They do not know their rights; they do not know what they can ask for. And, of course, a major point to keep in view is that even if they do know, we cannot possibly cover 680 million people all at once. Therefore, those who are left out of the first or the second or the third groups of people who take advantage are bound to feel discouraged and frustrated. I can only appeal to the hon. Members in the Opposition not to encourage the sort of discouragement and frustration which will obstruct the programme itself.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : We do not believe in the Pro gramme.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : That is the whole point now. That is exactly the point. The opposition does not believe in Programmes which will help the poor people. They do not believe...

(*Interruptions*)

That is why we are facing this extremely difficult situation. For three years, the whole talk of the opposition has been "We do not believe in these Programmes. We do not want to implement the Plans. Therefore, we are going to roll it up", which is what they did. These are not my words, but theirs. I am merely quoting them.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : We believe in the Programme. But do it sincerely.

MR. SPEAKER : For once he is right.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : Thank you very much.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : We believe in the Programme but, we doubt your sincerity.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : Anyhow one of our colleagues does not agree. Please do your fighting in your own meetings, not in Parliament. Do your fighting in your conclaves.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : We shall roll up your Government also.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : Reserve the conclave for such debate.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : Here I agree with you.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : Under the IRDP, we have already helped 9 million families including 3.2 million Scheduled Castes and Scheduled Tribes families and this year another 3 million will come under this Programme.

We are expanding the National Rural Employment Programme; the Rural Landless Employment Guarantee Programme, and Self-Employment for Educated Unemployed.

(*Interrutpions*)

Perhaps many of you are parents here and some of you are not...

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : Some are not officially.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : Again, this particular quarelling of yours is internal, not against me.

You all know that small children think that if they close their eyes, they are hiding themselves or the thing in front of them will go away. And there is also a story—I forget whether it is Indian story or of some other country—of a philosopher who thought if he closed his eyes, the thing would go away.

THE MINISTER OF ENERGY (SHRI P. SHIVSHANAR) : Like Dr. Subramaniam Swamy.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : I would like to close my eyes and you go away.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : May be that is why the Hon'ble member does not attend the House so often. He thinks that will make us disappear.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : But they do not see.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : Anyway, this philosopher kicked a rock and you can imagine what happened. He hurt his foot.

AN HON. MEMBER : Dr. Subramaniam Swamy will hurt his head.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : Somebody made the complaint that we had given up the "Food for Work Programme".

No. It has not been given up. But, it is true that it was not working well. I myself visited many areas when I was out of power to see how this Programme was functioning and I did not find a single place where they said that they were actually getting what they were supposed to get. And this complaint...

(*Interrupations*)

This has actually happened to me. This is nobody else's report.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : You must have gone to West Bengal.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : I could have but, unfortunately, at that time, I did not.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : West Bengal is the best.

MR. SPEAKER : It is Dr. Swamy who is speaking ?

SHRIMATI INDIRA GANDHI : I am not talking of West Bengal just now. So keep quite.

There was spuerious work and there was the problem of middlemen who were in charge of distribution. Some States did not lift the grain. As you know, there was also a time when we had acute shortage.

However, we tried to retain this Programme to the extent possible and now we are giving one measure per manday in lieu of a part of the wages under the NREP.

There has been a lot of criticism of banks. Hon. Members may have noticed that I have also raised my

[Shrimati Indira Gandhi]

voice on that point, not because no bank is doing any good work but because some banks or, rather, some individuals in some banks have not behaved as they should.

I have drawn the attention of the Finance Minister as well as others concerned to see that there is closer monitoring and I have also asked those who have complained that instead of making sweeping complaints, they should give specific instances which can be inquired into. Those particular incidents would be examples for others. But you cannot inquire into a general and vague complaint.

SHRI RAMAVATAR SHASTRI (Patna) : I have given specific instances.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : One can inquire into specific instances. I think many Members even on the opposite side will agree that in the old days banks were for a extremely limited section of the people ; the banks were for the rich. This was one of the issues on which some of our friends left us. Now banks are for all and especially, for the poor and hard-working...(*Interruptions*) No, I am not saying that everybody gets loans. But the door has been opened for them to get them. That is the big thing. We are free to-day but we have not got the sort of freedom that we had dreamt of. But at least the door is open for us to work towards it. Similarly, we are opening the doors, we are opening opporunities and we must see that these programmes are implemented in the proper way. And in this we seek the co-operation of all the general public, including politicians.

I consider this to be one of the biggest achievements of our Party and our Government. In fact, Bank Nationalisation was a turning point in our economic history and we are not allowing the banks to rest on their old laurels. There has been a big growth in rural deposits and in the number of branches opened. We cannot possibly give loans to absolutely everybody. This is where the difficulty arises and also the test is one of credit-worthy purpose. Obviously a person with such a purpose becomes a credit-worthy person....

AN HON-MEMBER : With your recommendation.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : We have said that when there is a special problem and when the person is absolutely unable to pay for a very good reason—this is, of course, my suggestion, I am not saying that the banks have accepted it—in those cases, some debts should be written off. But this is something which I cannot dictate to the banks. They have to study and decide. My suggestion to them was that where they ignore delays in the repayment of debts by big concerns, they should certainly give the same advantage to the poor. This is what I am saying.

Now we have also said that a greater proportion of deposits should be disbursed within the region of collection. . .

SHRI RAMAVATAR SHASTRI : This is not happening in Bihar.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : Some people do not want us to succeed in this objective. So obstacles are being created and false propaganda made in order to bring this credit programme into discredit. In fact one political party took large number of people to the banks to demand such loans and when the banks could not immediately give them...

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE (New Delhi) : They are all poor.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : They may be all poor. But, as I said, we cannot yet cover the 680 million population of India. It can only proceed little by little. . . .

(*Interruptions*)

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE : If I recommend a case, it is not being considered sympathetically by the banks. . . .

AN HON. MEMBER : Unless recommended by a Congress (I) MP it is not considered.

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI P.C. SETHI) : Your Party is doing it.

SHRI JAGDISH TYTLER (Delhi Sadar) : Sir, all the MPs of Delhi were told, 'In your constituency you please give the loan to poor people.' Mr. Vajpayee never attended one meeting and even he has not given a loan to a single person.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE : I represent New Delhi.

SHRI SUNIL MAITRA (Calcutta North East) : Will the MPs of other Parties also be extended the same privileges given to the Congress (I) MPs ?

SHRI NARAYAN CHOUBEY (Midnapore) : This is only for Delhi.

SHRI SATYASADAN CHAKRABORTY : In Ram Lila, there was another Lila by Mr. Tytler and others.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : It was a Lila which benefited the people. It has not been misused. The loans are going to the poor people.

I remember the time, Sir, Shri Vajpayee will forgive me—when there were floods in one area of Delhi. At the time they did not give rations to our people. I went there myself. It was only after we made a big noise that rations were distributed. Don't lecture me here, Shri Vajpayee. I know what I am saying.

SHRI ATAL BIHARI BAJPAYEE : The Prime Minister is in the habit of making baseless allegations.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : This is not true. Never in my life have I made a false allegation.

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF INFORMATION AND BROADCASTING AND MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI H.K.L. BHAGAT : It is a fact. The floods were in my constitutency.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : I am sorry to say that not only did it happen then but it has happened very recently in another State also. I am not naming the State to avoid further shouting. People know it well. This talk about taking political advantage is utter non-sense. Why should be not take political advantage of our good programmes and after good achievements ? The opposition wishes to take political advantage out of disruption—we, out of construction.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : After thirty-seven years of unit errupted rule, you cannot keep the nation together. We are disrupters ?

SHRIMATI INDIRA GANDHI : I do not want to get into questions of ideology now. There can be no doubt in anybody's mind anywhere in the whole world that had the Congress Party not been at the helm of affairs here, India would not have been one, India would not be united and integrated. (*Interruptions*) Some of you opposite are sitting with those parties which were at the root of the disruption. Some of you were not even born at that time. What do you know about it ?

श्री रामवतार शास्त्री : मेडम, हम लोग भी थे ।

श्रीमती इन्द्रा गांधी : मैं आपको नहीं कह रही हूं, आप क्यों उठ जाते हैं ? अगर आप मेरे साथ दिल्ली की सड़कों पर होते, तो देखते कि कौन दंगा कर रहा है । उनकी शक्लें मैं आज तक भूली नहीं हूं ।

श्री रामावतार शास्त्री : फ्रीडम मूवमेन्ट में हम भी थे ?

श्रीमती इन्द्रा गांधी : मैं फ्रीडम मूवमेन्ट की बात नहीं कर रहीं हूं। फ्रीडम मूवमेन्ट के वाद की बात हो रही है। इन्द्रजीत गुप्त जी, जरा इनको समझा दीजिये। We are talking of the disruptions that were created after freedom.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : We are all patriots.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : Now, everybody may be a patriot.

श्री रामावतार शास्त्री : फिर ठीक है, आप बोलिये।

SHRIMATI INDIRA GANDHI : But, there were people who were spreading communal disharmony at that time. With my own two eyes I saw people killing people. Do not tell me that this is untrue. It was because of that Gandhiji allocated that work to me. There are many here who do not know what has happened before they do not know the history—what happened in Kashmir or what happened in Delhi or elsewhere in those years.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : To whom you are pointing ?

SHRIMATI INDIRA GANDHI : I am not pointing to anybody. I say there are many people.

I do not know your age. I do not know when you were born.

Now, Sir, one of the questions which is bothering all of us and I share and understand the concern of the opposition, is the question of periods. The Economic Survey and budget speech have dealt with this issue at great length. My colleague, the Finance Minister has also put it in its historic perspective but I want to repeat just a few facts.

Two huge increases in the prices of oil some years ago triggared off world-wide inflation. No country has really recovered from it since of course the problem is not there for countries who do not need oil, or those who have oil. We were able to control inflation in 1974-75 in a manner in which few countries did. Other countries have acknowledged this in public statements and international conferences.

Price stability was maintained until 1977. But in 1979-80 things went haywire. Prices went up by more than 22 per cent. That was the situation we found in 1980. I don't like repeating these things but since you keep repeating your allegations. I have to answer. We worked hard to control inflation and in 1980-81 it came down to 15 per cent. In 1981-82 it was about 2:5 per cent. Just look at the difference from over 22 to 2.5 per cent. Unfortunately nature took a hand and we had if a very severe droughts. Even so we managed to keep inflation at 6.5% in 1982-83 but the pressures generated by these two successive years of failure of rains have created problems in the current year. Even so, Sir; skilfull Management has prevented the kind of situation which had developed in 1979-80. What did we do ? We had an intensive programme to develop agricultural production. Even in such a very bad year, the decline of production was much less as compared with 1979-80.

Yesterday or day before an hon. member remarked : 'What have you got to do with production. Rains were good'. Rains have been good in many years and rains have been bad in many years, I have just shown how in a year of very scanty rains we still managed to control the situation. The rains were exceedingly good during part of the Janata Party period for two years. I forget which year but for two years they were very good. One year was bad. But pro-

duction did not go up. How does production go up? It is because of the manner in which we come forward to help farmers. We have also had a sizeable expansion of the public distribution system. You will, perhaps, remember that most of the shops were closed down in the Janata Party period:

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : We did not believe in them. We did not need them.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : You don't believe in them. But we do believe in fair distribution. Therefore, it is our duty to do everything we can do to expand it.

In 1980 there were 2.36 lakh fair price shops. Now, there are 2.97 lakhs. Distribution of essential commodities through this distribution system has been stepped up. A record 15 million tonnes of foodgrains were released in 1982 and we think that in 1983 it was more. I don't have the exact figures with me at the moment. Public stocks were augmented through timely imports. Action was taken to control money supply and monetary policy was tightened. The budgetary situation was kept under control and we made every effort to curtail government expenditure. It has been curtailed in some areas but I confess not at all to my satisfaction.

Incentives such as Excise Duty reliefs were given to stimulate industrial production. This policy package has yielded results.

The rate of increase of prices was fairly steep up to September, 1983. After that, the rate of increase has slowed down. We are continuing our vigilance and will not hesitate to take further steps as and when necessary.

The Budget has reduced levies on many items of essential consumption. It has to be ensured that these benefits are passed on to the consumer. This is our major difficulty. The Government will monitor this.

My hon. friend opposite questioned our claim of 5 per cent industrial growth because the average growth rate between 1978-79 and 1982-83 was much lower. The fact is that in 1979-80 there was a fall in industrial production with a negative rate of growth—minus 1.4 per cent. But in the three years 1980-81 1981-82 and 1982-83 the average growth rate of industry was 5.5 per cent. I am confident that the growth of industrial production will be sustained. We are concerned with industrial production and we are worried where it has gone down, and it has in some areas. But no one can deny the substantial gains made in the last four years nor should they be decried by anybody. A simple example is Oil, where we have struck it luckly. But it is also a question of policy, of being able to exploit the oil properly and to make it available.

As you know, there has been a phenomenal increase in indigenous oil production. How did it come about ?—By national determination. Fortunately this is a sector which is not subject to natural calamities although it is also an endangered area. Many industries are subject to natural calamities. But, in several industries, such as Cement, Electricity Generation and Coal, we have made impressive increases.

The main problem is of higher capacity utilisation. We have been going into this, sector by sector and plant by plant.

The house knows that there are some long-term structural programmes. The biggest of them is the modernisation of out-dated plants and out-dated managerial methods regarding which we are taking suitable policy action.

We are deeply concerned about problems faced by Industrial Labour. If the farmers are the foundation, I would say that Industrial labour is the spin of a modern nation.

[Shri Mati Indira Gandhi]

A matter of concern—and which crops up again and again—is that of the phenomenon of corruption. It is there. It is a fact to be reckoned with, and it is something which we must fight with all our might at every level and in every possible way. Government agencies are doing their utmost to check this and to punish the guilty. The issues are complex and they do not yield to simplistic solution. We need vigilant public opinion, that can bring specific cases to our notice. Whenever such cases are brought, I assure the House, that I have done this in the past, and shall continue to do so, that is, to look into every case and see that it is properly dealt with. But cynicism is a protector of corruption. It does not help to be cynical about these matters. The fight against corruption has to be relentless. Certain firm steps have been initiated for which we will need public cooperation. In fast hardly any programme can be successful without full public cooperation.

The day before yesterday, Punjab believe was discussed at great length. I believe Just missed the beginning of his speech—my hon. friend opposite accused me of not clarifying Governments mind on the subject. Since that was stated in detail in the Home Minister's speech, I thought there was no point in my repeating it.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : What he said, is it Government's view, because we have seen that there are contradictions in Government's view ?

SHRIMATI INDIRA GANDHI : There is no contradiction in Government's views. Sometimes we have offered a solution. But if it is not accepted naturally we have to look at the whole matter again. But there is no difference of view amongst ourselves on these issues. Our stand was very clearly explained. The basic point which I mentioned yesterday and which I should like to repeat, is that communal violence and terrorism have to be routed out from our body politic. Communalism was the biggest threat to the initial unity and stability of the country and it remains the biggest threat to our present unity and stability. It is the Indian version of fascism and my struggle against it has been uncompromising. Our fight is against extremism and the separatist philosophy of extremism. Extremism is against the interests of all sections of our people, whether they are Hindus, Muslims, Sikhs, Christians and other people and of the nation as a whole. The Sikhs are dynamic and enterprising people who have contributed much to the country, not only in Punjab. If you travel all over India, you will find that there is hardly a place in which you don't find Sikhs. Initially we were told that certain races were martial races, certain races have some qualities and not other races. Now we know that after people get training, the people of any State show those qualities, of courage or other types of ability and capacity.

I have had a special feeling for the Sikhs, because of what they suffered during Partition and because of the manner in which they got on their feet again without complaint. This is one of the qualities I admire most in people I have specially mentioned this is number of time. Their prosperity and progress are linked with the progress and prosperity of the whole country. But this progress and prosperity can only take place when there is also progress, prosperity and harmony amongst the other people around them, with their neighbours in Punjab or in any other State. I do not think a community which has itself suffered so much should allow the bonds of brotherhood and trust to be weakened by a tiny minority of extremists. I do not know whether this particular group is anti-national or what is motivating it but there is certainly a very small element—I do not know what, word to use—that is bent upon creating confusion, discord, mistrust and suspicion which has led to violence and terrorism. I agree with my hon'ble friend who said that the Sikh masses should

n t be confused with any one political party and certainly not with the extremists. They are not identified with this small group of terrorists.

While I condemn the killings in Punjab, I equally condemn the killings and other happenings in Haryana. This type of retaliation does not achieve anything, it does not strengthen anybody. In fact, it is counter-productive because it increases violence, it increeses suspicion and feelings of Communalism. The same is true of other communal incidents which have taken place earlier, that is, between Hindus and Muslims in some parts of the coun try, between Christians and others in different parts of the country. These tendencies are divisive for the country. They weaken our country and the States in which they occur. They weaken our whole country and we must get together at least on this one issue and categorically state that we are not going to allow such incidents to take place. Not oney is it very bad for us but it is bad for the communities themselves and for the character of individuals. Apart from its being damaging economically and socially, as individuals, we deteriorate. Even those who may not take part merely, by living in the midst of such an atmosphere of hatred and bitterness, deteriorate as human beings.

Unfortunately, there has been some false propaganda, much of it is abroad, by misguided elements. It is against the country's honour. We cannot ignore the danger of such groups acting as tools of foreign agents. As I said earlier, they may be very few in number, but if you see the foreign press, they got publicity out of all proportion to their number or to what is happening, and generally the impression is given of the whole country being in flames, everybody killing everybody else, whereas as people of all religions will testify, Hindus, Muslims, Sikhs and Christians, that wherever there has been trouble, there are numerous instances of people of other religions saving their neighbours and helping them in threatening situations. This is the anmosphere which we must build together.

A suggestion was made by my hon. friend opposite that we should have peace brigades peace committees, or peace marches. I am all for it, but we have to be sure that all those whose who take take part in these marches are actually for peace, but some times our experience has been a little different.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : Please make sure about the World Peace Council also. . . .

SHRIMATI INDIRA GANDHI : Again, in-fighting on the opposition benches. Please do it outside the House. . . .

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : They are with you on foreign policy.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : They are not with us on anything. They sometimes say so because they think it might help them.

The day before yesterday I said in this or the other House, that the basic problem in Punjab is not the demands put forward by the Akali Dal. The legitimate demands of any group are to be met through discussions and negotiations in a democratic system such as ours. But here the basic problem is the kernel of extremism with its irrational and destructive philosophy of violence. Violence and terrorism should not be allowed to become a premium in resolving a problem. An hon. Member said that some people were interested that the talks did not succeed. That is what I meant. When I said, I do not know, what would be achieved, this is what was at the back of my mind ; I knew that certain people were interested in keeping distance between us.

SHRI INDRAJIT GUPTA (Bäsirhat): I said there is no alternative tc talks even if you fail at first.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : I am not objecting to what you said. You said, before this or after this particular remark, that my expression shows that I thought that the tripartite talks would not succeed. Something like that you said.

SHRI INDRAJIT GUPTA : You were reluctant.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : It is in answer to that I am speeking I am not saying that we should not have talks. What I said was that it was because I felt on the basis of certain information that there were individuals interested in breaking the talks, that I expressed certain doubts about the success of the talk. There is no doubt in my mind whatsoever, the negotiations are the only wayout for the ending of any dispute, whether national or international. There is no question of anybody encouraging these funds to be taken to the streets. We oppose this vehemently. I am again stressing the responsibility of all political parties and non-political people to realise the danger of terrorism, the danger to ourselves and the danger it throws up the chance it gives to those who may wish greater destruction so that they can interfere.

In Kashmir also the situation is a disturbing one, because of the concerted activittes of secessionists and certain communal organisations. They pose a threat to national security and to the integrity of the nation. As one hon. Member has pointed out, insulting the national flag is no less serious than insulting the Constitution. Why has the opposition not spoken up about this ? The Central Government have written to the State Government. Firm and effective action and continued vigilance is needed, and we keep pressing for it.

The murder of our official in the United Kingdom, Shri Mhatra has to be viewed in the context of the anti-national activities of certain such organisations.

PROF. SAIFUDDIN SOZ : At least JKLF has no connection with Jammu and Kashmir which is a part of the country.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : Irrespective of political differences, all should unite in isolating and combating such elements. The question is not one of victory or defeat of any political or other party in Jammu and Kashmir. The question is of preserving the unity and integrity of our country, on the basic principle of secularism and democracy. When we see that these precious objectives are threatened, we have to raise our voice against it. If we did not see that there were some signs of such a threat, I would not have raised my voice.

Now, we have got used to the fact that sometimes Pakistan says that India is not reconciled to its existence. It is an old complaint which we have refuted time and again. The creation of Pakistan was something to which we agreed. Whether we liked it or not liked it, is beside the point. We agreed to it, we have accepted it and we are living with it ; and we believe in co-existance. Because I said that our system is a democratic one, in answer to a question from a Pressman—he or she asked, I forget who it was—viz. "Well, what about Pakistan ?" ; I replied : "Look ; we believe in democracy ; but it is for other countries to decide their own system of Government." Because we believe in democracy, we may like other countries to be democratic. But it is for them to decide what system they will have. That is the extent of my remarks regarding which hon. friend opposite blamed me for interfering in Pakistan's internal affairs.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : What about democracy in Soviet Union ? Why don't you speak about it ?

SHRIMATI INDIRA GANDHI : Unfortunately, you do not wear a bonnet. Otherwise, there is a saying in English, 'You have a bee in your

[Shri Indira Gandhi]

bonnet'. That is your bee which buzzes all the time. You cannot see realities. That prevents your understanding these issues clearly. We have not said that we support the Soviet system. That is our quarrel with these friends, this side.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : Hear, hear.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : We have our own system. They have their own. We are not interfering in their system, and I don't think they are interfering in our system.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : You don't think.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : Yes, I don't think.

SHRI SATYASADHAN CHARRABORTY : Send him to Soviet Union for practical training. I would request you to send Dr. Swamy to Soviet Union.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : They have their own. . . .

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE : There was a letter from you addressed to the late Soviet leader, Andropov. Was it not an interference ? Were you not inviting him to interfere in the internal affairs of the country ?

SHRIMATI INDIRA GANDHI : No. Mr. hon. Member. I can tell you I was not. I have exchanged numerous letters which. . . .

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE : What were its contents ?

SHRIMATI INDIRA GANDHI : If I discuss the substance, you will then want the letter to be laid on the Table of the House. I am willing to tell you if you come to my office because there was nothing secret in it. It was just a short, about five or ten line letter.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE : Only five lines ?

SHRIMATI INDIRA GANDHI : It was a very short letter, for a particular occasion. But I am not going to lay it on the Table of the House. Therefore, I am not going to tell you here. I am prepared to tell you outside.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE : Why were the services of a CBI member utilised to despatch that letter ?

SHRIMATI INDIRA GANDHI : There was no question of his services. Suppose you come to me and say : "Would you mind giving me such-and-such a message ?", I shall say, 'Yes' ; if I agree with what you are saying, of course.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : But if you wrote to Andropove saying that please discipline Mr. Indrajit Gupta, it took only five lines ; not more than that.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : But, well, this much I can say that I did not write that.

I am unhappy at the frequent complaints that India is not reconciled to the existence of Pakistan ; and I am sorry that hon. members sometimes also say something along those lines. This does not serve the national cause. I frankly tell you that I am at a total loss to understand such a sentiment when I myself have not only declared my policy but acted upto it. You will remember that it is I who have taken all the initiatives to re-establish friendly relations with Pakistan and with China. I hope you are happy with that.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : Now he is happy. You have taken care of it. I hope you will keep it up.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : I am keeping it up. But in spite of that fact, from across the border statements are made which are not conductive to the creation of a better atmosphere. I do not want to go into

the question of arms, but it is something that is concern to us.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : Give me also some letter.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : If you come for a letter, I shall be happy to write, please do not get these arms.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : Give me one-way ticket.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : So, there is no doubt that we want better relations with all our neighbours, not just Pakistan and China. You know with what great restraint we have acted in Sri Lanka, although on that issue our hon. friend had quite different views. You will remember what demand be made about sending our army.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : Only sensible demand.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : In that you are isolated in this House, which is a good thing. Now, as I said, it is our policy to respect all our neighbours like Bangladesh, Shri Lanka Nepal, Bhutan, Pakistan and China : and we shall not spare any effort to promote good neighbourly relations with them. We have taken an active part in the establishment of the South Asian Regional Cooperation which was launched last year by the Foreign Ministers of the 7 countries concerned and which has now gathered a certain momentum. We welcome this development.

But the situation in our region cannot be divorced from the general environment in the world as a whole. Hon. members know that the international atmosphere is marked by a complete collapse of detente which had begun to create a new atmosphere, if not, a friendship, at least a direction of cooperation and friendship. But today there is heightening of tension and confrontation. The casualties in the war between Iran and Iraq both of whom are—good friends of ours have now reached enormous proportions and cause us deep anguish. We want a climate of peace, trust and mutual respect ; in other words, adherence in letter and spirit to the principle of peaceful coexistence. This is necessary now more than ever before. India is working hard for the ending of the nuclear arms race. These are the two main international questions which have been of concern to everybody who has been here ; and we have had leaders from the East and from the West both the political East and West, as well as the geographical East and West who have also expressed their concern over these two metters, first, the stock-piling of nuclear armaments and taking the war into space and so on ; and the second is the growing disparity between the affluent and the developing countries. This must be diminished. My government remains decided to support all efforts to achieve these objectives. The whole world needs peace but we, the developing world, need it more than the industrialised countries, because we have another war to fight, it is the war against poverty, the war against underdevelopment. We need peace and harmony internally externally to win this war and to take our country forward.

The President's Address, Sir, is an opportunity for annual stock-taking. Criticism of policies and programmes is a normal feature of Parliamentary life and of this debate and we accept it. But I do hope that the honourable Members will look at the broad direction of movement. I certainly do not want to minimise the enormity of the problems, or the long distance yet to be covered on the road to progress, but I do have full faith in the Indian people and I am sure that if we can work together at least to combat the disruptive forces, then we can achieve far greater progress which will help

the whole country. All our programmes should be seen in the overall context in which we are functioning today. The people should realise the difficulties of nation building in the sort of situation that exists in our country as well as in most other places around us.

I thank all the Members for their patience, I commend the President's Address far adoption. I request all those who have moved amendments to withdraw them.

Thank you.

MR. SPEAKER : A number of amendments have been moved by the Members to the Motion. I shall put all the amendments to the vote of the House.

The amendent's were put and negatived

MR. SPGAKER : Now I shall put the main motion to the vote of the House.

The question is :

"That an Address be presented to the President in the following terms :

"That the Members of Lok Sabha assembled in this Session are deeply greatful to the President for the Address which he has been pleased to deliver to both Houses of Parliament assembled together on the 23rd February 1984."

The motion was adopted

17.03 hrs.

STATUTORY RESOLUTION RE : DISAPPROVAL OF INDUSTRIES (DEVELOPMENT AND REGULATION) AMENDMENT OBDINANCE AND INDUSTRIES (DEVELOPMENT AND REGULATION) AMENDMENT BILLS

MR. SPEAKER : The House will now take up the Statutory Resolution at Sr. No. 12 and the Industries (Development and Regulation) Amendment Bill, at Sr. No. 13, together for which two and a half hours have been allotted.

Dr. Subramaniam Swamy.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : (Bombay North East) :

I beg to move :

"This House disapproves of the Industries (Development and Regulation) Amendment Ordinance, 1984 (Ordinance No. 1 of 1984) promulgated by the President on the 12th January, 1984."

I oppose this Ordinance on a broad moral principle that, firstly it is inadequate, it is peace-meal, and secondly, that there has been a general neglect of small industries by the Government in the last four years.

First of all, all that this Ordinance establishes, or tries to achieve is the question of certain exemptions, outlined in the Industries Act, 1951. But the fact of the matter is that from the very beginning in 1947, following the Gandhian path, we had planned to give small industries a great deal of importance and focus. But in fact what we have found over the last 37 years is a neglect—progressive neglect— of the small industries, as a group and from time to time this Ordinance or these changes have been brought about and as a collection of notifications given by the Department of Industrial Development shows, that from time to time this nit picking as I might call it, small tinkering of the concept takes place. So, I would; therefore, rise to oppose it on this ground is not that this a very sincere effort in prompting the small industries as a group.